नवम्बर, 2021 ■ वर्ष : 67 ■अंक : 02 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 50

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

# अणुव्रत

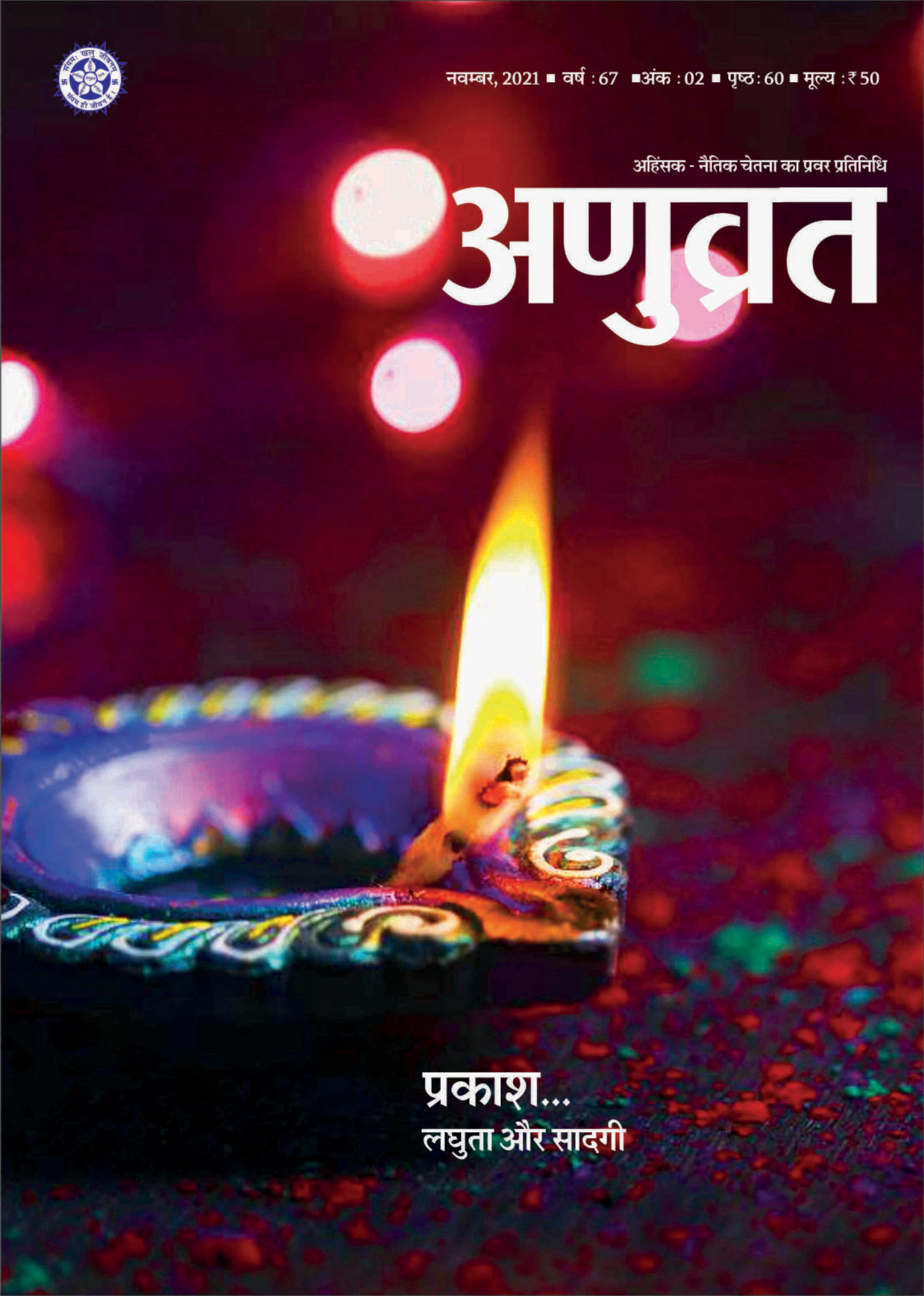

## प्रकाश...
### लघुता और सादगी

# अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

ANUVIBHA

## द्वारा घोषित

## अणुव्रत गौरव सम्मान एवं अणुव्रत लेखक पुरस्कार

*श्री निर्मल रांका चार दशक से अणुव्रत आंदोलन से नजदीकी से जुड़े रहे हैं। आप अणुव्रत विश्व भारती और अणुव्रत महासमिति जैसी अणुव्रत की शीर्षस्थ संस्थाओं के अध्यक्ष रह चुके हैं। सरलता, सादगी और मिलनसारिता आपके विशिष्ट गुण हैं। समाजभूषण श्री मोतीलाल एच.रांका के सुपुत्र श्री निर्मल रांका को अणुव्रत के संस्कार विरासत में मिले हैं। समर्पित अणुव्रत कार्यकर्ता के रूप में आपको गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है।*

*श्री घीसूलाल नाहर की अणुव्रत आंदोलन को सुदीर्घ सेवाएं रही हैं। अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष एवं राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष के रूप में आपने अणुव्रत के संगठन को मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। राजस्थान सरकार के सिचाई विभाग में अधीक्षण अभियंता के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद आपने अपना जीवन अणुव्रत के प्रति समर्पित कर दिया। आपका समर्पण भाव प्रेरणादायक है।*

*श्री वेदप्रताप वैदिक सुप्रसिद्ध लेखक व पत्रकार हैं। आप विदेश नीति के मर्मज्ञ हैं और दुनिया के अनेक राष्ट्राध्यक्षों से आपके आत्मीय संबंध रहे हैं। समसामयिक विषयों पर आपके आलेख देश–दुनिया में पढ़े व पसंद किये जाते हैं। अणुव्रत दर्शन आपके जीवन में व आपकी लेखनी में स्पष्ट झलकता है। लम्बे समय से आप अणुव्रत आंदोलन के समर्थन व सहयोगी रहे हैं।*

*श्री फारूक आफरीदी जाने–माने लेखक, व्यंग्यकार व पत्रकार हैं। आप राजस्थान सरकार में अनेक पदों पर रहते हुए साहित्य की सेवा करते रहे हैं। चार दशक पूर्व जोधपुर में आप अणुव्रत आंदोलन से जुड़े, तब से ही आप अणुव्रतमय जीवन जीते रहे हैं। अणुव्रत दर्शन व गांधी दर्शन का प्रभाव आपकी लेखनी में स्पष्ट देखा जा सकता है।*

आचार्यश्री तुलसी मानवता के पुजारी हैं। उनका आन्दोलन हृदय–परिवर्तन के माध्यम से काम करने वाला अभियान है। विचारों और अन्तःकरण के परिवर्तन से जो नयी ऊर्जा और शक्ति जीवन में संप्रेषित होगी, वही वास्तव में अणुव्रत आन्दोलन की उपलब्धि होगी। इसी उद्देश्य को लेकर अणुव्रत को और अधिक व्यापक बनने का प्रयास करना चाहिए।

**– डॉ. जाकिर हुसैन**

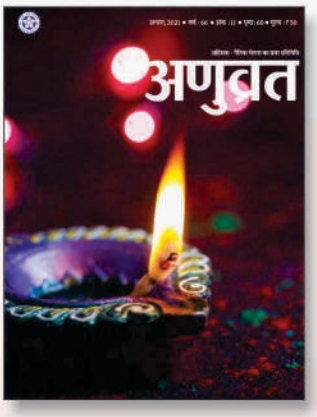


वर्ष 67 • अंक 02 • कुल पृष्ठ 60 • नवम्बर, 2021

सम्पादक
**संचय जैन**

सह–सम्पादक
**मोहन मंगलम**

*संयोजकीय टीम*

**प्रमोद घोड़ावत** (संयोजक, प्रकाशन), **शांतिलाल पटावरी** (संयोजक, पत्रिका प्रसार)
**ललित गर्ग** (संयोजक, अणुव्रत लेखक मंच), **रजनीकांत शुक्ल** (सह संयोजक, अणुव्रत लेखक मंच)
**इन्द्र बैंगानी** (संयोजक, समाचार संपादन)

टाइपसेटिंग व लेआउट – **मनीष सोनी** कवर क्रिएटिव – **आशुतोष रॉय** चित्रांकन – **मनोज त्रिवेदी**

कार्यालय
**अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी**
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110002

**anuvrat.patrika@anuvibha.org**
**www.anuvibha.org**
**दूरभाष : 011–23233345, मोबाइल : 9116634512**

:: सदस्यता शुल्क विवरण::

| | | |
|---|---|---|
| एक अंक | – | ₹ 50 |
| एकवर्षीय | – | ₹ 600 |
| त्रैवर्षीय | – | ₹ 1500 |
| पंचवर्षीय | – | ₹ 2500 |
| दसवर्षीय | – | ₹ 5000 |
| योगक्षेमी (15 yrs.) | – | ₹ 11000 |

₹ 350 का अतिरिक्त वार्षिक भुगतान कर आप अपनी प्रति कोरियर से मंगवा सकते हैं।

**अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी**
**केनरा बैंक**
A/c No. **0158101120312**
IFSC : CNRB0000158

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन–मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गई प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

# अनुक्रमणिका

## प्रेरणा पाथेय


- अनैतिकता की समस्या — 06
  आचार्य तुलसी
- अणुव्रत-साधना का अर्थ — 08
  आचार्य महाप्रज्ञ


## आलेख


- दीपक का पुरुषार्थ — 11
  डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी
- अर्थ परमार्थ से जुड़े — 12
  मुनि सुखलाल
- अनुराग हमारे अनुष्ठानों का आधार — 14
  देवर्षि कलानाथ शास्त्री
- स्कूल विद ए डिफरेंस — 24
  डॉ. राकेश तैलंग
- Gandhi's Swaraj and Acharya Tulsi... — 26
  Dr. Anil Dutta Mishra


## कहानी


- खोया हुआ सुख — 20
  पूरन सरमा


## कविता


- दो ग़ज़लें — 15
  नित्यानंद 'तुषार'
- अपनी शक्ति मुझे... — 19
  डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़'
- उहापोह का वक्त — 19
  वीणा जैन

- संपादकीय — 05
- आचार्य तुलसी और नेहरू — 16
- संवेदन — 19
- अर्थ संबल अभियान — 23
- अतीत के झरोखे से — 30
- अणुव्रत लेखक मंच — 36
- कदमों के निशां — 29
- परिचर्चा — 34
- अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह — 42
- अणुव्रत समाचार — 57
- परिणाम Q10 प्रतियोगिता — 58

सम्पादकीय...

# गहराते अंधकार में दीपक है अणुव्रत

*यह स्याह रात*
*और भी लम्बी*
*हो चली है,*
*अबोला अम्बर*
*काली चादर ओढ़े*
*मानो अंधेरे का*
*जश्न मना रहा है,*
*चारों ओर पसरा*
*शालीन सन्नाटा*
*बहरे कानों में*
*कर्कशता घोल रहा है।*

*इस निर्जन जगत में*
*कुछ भी दृश्य नहीं,*
*कौन है भला*
*यहां मेरे सिवा!*
*फिर, घण्टी की मानिंद*
*सुकून देती,*
*संगीत सजाती*
*ये धड़कनें कैसी?*
*दूर क्षितिज में*
*टिमटिमाती वो*
*रोशनी कैसी!*
*बदन सिहराती*
*मदमस्त ये*
*बयार कैसी!*

*जिन्दगी के निशां*
*अभी बाकी हैं,*
*रोशनी के कतरे*
*अभी बाकी हैं,*
*हिम्मत न हार*
*मेरे दोस्त!*
*उम्मीद के बहाने*
*अभी बाकी हैं।*

**दीया प्रकाश का प्रतीक है।** अँधेरे और प्रकाश के संघर्ष में दीया प्रकाश की विजय का प्रतीक है। इसीलिए, बिना दीये के प्रकाशपर्व दीपावली की कल्पना नहीं की जा सकती। एक युग था जब दीया प्रकाश का पर्याय हुआ करता था। आज के आधुनिक युग में जब प्रकाश के श्रेष्ठतम विकल्प उपलब्ध हैं, यहाँ तक कि कृत्रिम सूर्य बनाने की होड़ चल रही है, एक अदने से दीपक की क्या बिसात? लेकिन आश्चर्य, दीपक ने न केवल अपना अस्तित्व बचाये रखा है वरन प्रकाश के प्रतीक के रूप में इससे बेहतर विकल्प प्रकाश का कोई अन्य स्रोत नहीं बन पाया है।

**दीया लघुता का भी प्रतीक है।** कवि की यह पंक्ति – ''है अंधेरी रात पर दीपक जलाना कब मना है'', हार नहीं मानने को प्रेरित करती है। लघु में महानता की ओर संकेत करती है और संघर्ष में शक्ति का प्रवाह करती है। जर्मन अर्थशास्त्री फ्रैडरिक शूमाकर ने लघु की ताकत को पहचानते हुए 1973 में 'स्मॉल इज ब्यूटीफुल' पुस्तक लिखी थी जिसने वैश्विक स्तर पर ''बिगर इज बेटर'' की अवधारणा को चुनौती दी थी। यह कहना समीचीन होगा कि दीपक की लघुता ही उसकी ताकत है।

**दीया सादगी का भी प्रतीक है।** महात्मा गांधी के जीवन दर्शन 'सादा जीवन – उच्च विचार' का उत्कृष्ट उदाहरण। कोई जटिलता नहीं, प्रकृति प्रदत्त सहज सरलता, सादगी। स्वयं प्रकाश बन कर अपने आसपास फैले अँधेरे को दूर करने की महान सोच। दीपक स्वयं में एक जीवन दर्शन है, मानव जीवन का एक आदर्श दर्शन। दीये के गुणों को अपना कर व्यक्ति निश्चय ही अपने लिए एक आदर्श जीवन का आधार गढ़ सकता है।

जब अणुव्रत दर्शन को दीये के परिप्रेक्ष्य में देखता हूँ तो दोनों में अनुपम समानताएँ नजर आती हैं। दीये का काम है प्रकाश फैलाना, अणुव्रत भी हमारे भीतर के अंधकार को दूर कर समाज, देश और विश्व को प्रकाशमान करने का लक्ष्य रखता है। दीया लघु है तो अणुव्रत दर्शन की खूबसूरती भी इसकी लघुता है – 'छोटे–छोटे संकल्पों से मानस परिवर्तन हो'। दीया सादगी का संदेश देता है तो अणुव्रत की आत्मा भी सादगी है जो इसके मूल उद्घोष में प्रतिबिंबित है – 'संयमः खलु जीवनम्' अर्थात् संयम ही जीवन है।

अणुव्रत एक जीवंत आंदोलन है। आंदोलन को यह जीवंतता प्रत्येक अणुव्रत कार्यकर्ता की जीवंतता से मिलती है। अणुव्रत दर्शन में प्रतिबिंबित होने वाले रोशनी, लघुता और सादगी के दीपक सदृश गुण जब प्रत्येक अणुव्रत कार्यकर्ता में दृष्टिगत होते हैं तब अणुव्रत का यथार्थ स्वरूप मुखरित होता है। कुछ समय पहले ही अणुव्रत अनुशास्ता ने अणुव्रत के संदर्भ में दीये का उल्लेख करते हुए कहा था कि अणुव्रत कार्यकर्ता दीपक की भांति नैतिकता और मानवता का प्रकाश फैलाने का प्रयास करते रहें, यह काम्य है।

दीये के संदर्भ में जब हम बात कर रहे हैं तो इसके साथ जुड़ी लोकोक्ति 'दीये तले अँधेरा' की तरफ भी ध्यान दे देना चाहिए। यह कहावत हर उस प्रयास के लिए एक चुनौती है और एक चेतावनी भी, जो प्रकाश फैलाने को उद्यत हो। अणुव्रत को समझने वाले हर व्यक्ति को, अणुव्रत का काम करने वाले हर कार्यकर्ता को और अणुव्रत से जुड़ी हर संस्था को हमेशा यह सुनिश्चित करते रहना होगा कि दीये तले अंधेरा न पसरे। सबसे पहले उस अंधेरे को दूर करना आवश्यक है। दीया तो एक निर्जीव प्रतीक है लेकिन हम तो बुद्धि और भावना से ओतप्रोत इंसान हैं। आइए, हम सब अणुव्रत सम दीपक बन इतना प्रकाश फैला दें कि 'दीये तले' तो क्या, कहीं दूर तलक अँधेरे का कतरा न बच पाये।

**सं.जै.**

sanchay_avb@yahoo.com

# अनैतिकता की समस्या...

आचार्य तुलसी

अनैतिकता की समस्या समाज की स्थायी समस्या है। वह अतीत में रही है, आज है और यह भविष्यवाणी नहीं की जा सकती कि वह भविष्य में नहीं रहेगी। क्योंकि मनुष्य के मन में अपने और पराये का भेद बद्धमूल है। वह अपनी सुख–सुविधा के लिए दूसरों की सुख–सुविधा की उपेक्षा करता है। वह अपनी पूजा–प्रतिष्ठा के लिए दूसरों से अतिरिक्त बनने की स्थिति उत्पन्न करता है। ये दोनों कारण उसकी अनैतिकता के मूल स्रोत हैं।

अनैतिकता की समस्या है और वह मनुष्य की अपरिमार्जित आकांक्षा से जीवित है। उसे मानवीय आकांक्षा को परिमार्जित करके ही सुलझाया जा सकता है। स्व और पर की दूरी जितनी कम होती है, उतनी ही अनैतिकता कम हो जाती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर अणुव्रत आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में मानवीय एकता का स्वर प्रबल किया गया।

जिन लोगों में राष्ट्रीय एकता की अनुभूति प्रबल हुई है, वे लोग नैतिकता के क्षेत्र में दो कदम आगे बढ़े हैं। जिनके साथ अपनत्व का तार जुड़ जाता है, उनके प्रति अनैतिकता का व्यवहार नहीं किया जा सकता। व्यक्ति अनैतिक व्यवहार–भेद की अनुभूति में ही होता है।

जातीय, सांप्रदायिक और राष्ट्रीय सीमाओं को व्यापक किये बिना मानवीय एकता के विचार को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता, इस दृष्टि से अणुव्रत ने जनता के सामने एक चिंतन–सूत्र प्रस्तुत किया। वह यह है– 'मैं सबसे पहले मनुष्य हूँ, फिर और–और हूँ। इसलिए मैं दूसरे मनुष्यों के साथ मनुष्य की भूमिका का अतिक्रमण करने वाला व्यवहार नहीं करूँगा।'

इस व्यापक अनुभूति के द्वारा अनैतिकता की पकड़ को शिथिल किया जा सकता है।

### नैतिक विकास में धार्मिक अवरोध

यह अंधकार सूर्य ने फैलाया है, इस वाक्य में जितना अंतर्विरोध है, उतना ही अंतर्विरोध इसमें है कि धर्म ने अनैतिकता को पाला–पोसा है। सूर्य से अंधकार नष्ट होता है और धर्म से अनैतिकता समाप्त होती है, फिर भी धर्म की वर्तमान धारणा ने ऐसा नहीं किया है, इससे विपरीत किया है। धार्मिक लोगों ने धर्म का उपयोग नैतिकता के अस्त्र के रूप में नहीं, किंतु अनैतिकता पर पर्दा डालने के रूप में किया है। एक ओर जीवन में धर्म चलता है और दूसरी ओर अनैतिक व्यवहार चलता है। अनैतिक व्यवहार इस धारणा के आधार पर चलता है कि उसके बिना गृहस्थी का काम नहीं चलता। धर्म इस धारणा से चलता है कि जीवन में जो भी अनुचित कार्य होता है, उसका धर्म के प्रताप से फल न मिले। इसका अर्थ यही हुआ कि जीवन में अनैतिकता भी चलती रहे और धर्म भी चलता रहे। क्या यह सूर्य से फैलने वाला अंधकार नहीं है? क्या यह धर्म से पलने–पुसने वाली अनैतिकता नहीं है?

अणुव्रत ने धर्म के क्षेत्र में फैली हुई ऐसी अनेक भ्रांत धारणाओं का निरसन किया है और जनता को यह समझाने का प्रयत्न किया है कि धर्म की पहली कक्षा नैतिकता है। जिस व्यक्ति ने नैतिकता की कक्षा में प्रवेश नहीं पाया है, वह धर्म की अगली कक्षा में प्रवेश नहीं पा सकता। अणुव्रत आंदोलन ने नैतिक विकास के लिए धर्म क्रांति का आह्वान किया है।

## विचार क्रांति की मंजिल

मैंने, मेरे सहयोगी साधु संघ ने और अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने लंबी–लंबी यात्राओं के दौरान अनैतिकता की समस्याओं का अध्ययन किया है, उन पर विमर्श किया है और इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अनैतिकता केवल परिस्थिति की उपज नहीं है। मनुष्य की स्वार्थ–मनोवृत्ति, अनैतिक आचरण के परिणाम का अज्ञान और त्रुटिपूर्ण सामाजिक व राजकीय व्यवस्था, ये सब मिलकर अनैतिकता को जन्म देते हैं। केवल व्रत (अध्यात्म) से नैतिकता विकसित हो जायेगी, ऐसा भी प्रतीत नहीं होता। स्वार्थ का विसर्जन, नैतिकता के लाभ का बोध और सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था के होने पर नैतिकता विकसित हो सकती है। इस पूरी प्रक्रिया से पूर्व विचार–क्रांति की आवश्यकता है। जनता का मानस बदले बिना किसी परिवर्तन की संभावना नहीं की जा सकती। अणुव्रत आंदोलन ने नैतिक विकास के लिए विचार–क्रांति की है और जनता को अनैतिकता और नैतिकता के परिणामों पर विचार करने के लिए प्रेरित किया है। मैं समझता हूँ कि इस मंजिल को हम एक सीमा तक पार कर चुके हैं। अब हमें अगली मंजिल के लिए तैयारी करनी चाहिए।

## संघर्ष की तैयारी

स्वयं नैतिक बन जाना अच्छी बात है, पर आज के समुदायनिष्ठ सामाजिक जीवन में यह पर्याप्त नहीं है। यदि नैतिक व्यक्ति में अनैतिकता से लड़ने की शक्ति न आये तो अनैतिकता कभी नैतिकता को आगे नहीं आने देगी। शक्ति नैतिक लोगों के हाथ में हो, नैतिक विकास के लिए यह अत्यंत जरूरी है। अर्थ और सत्ता की शक्ति अनैतिकता के हाथों में जाये और नैतिकता में निष्ठा रखने वाले चाहें कि नैतिकता का विकास हो, यह कैसे होगा? आकर्षण का केंद्र वही होगा, जिसके पास शक्ति है और विकास भी उसी का होगा जिसके प्रति जनता का आकर्षण है। नैतिकता के प्रति इसलिए जनता का आकर्षण नहीं है क्योंकि शक्ति का बहाव उसकी ओर नहीं है। क्या स्थिति को बदलना जरूरी नहीं है? यदि है तो क्या संघर्ष के बिना उसे बदला जा सकता है? यदि नहीं बदला जा सकता तो क्या नैतिकता का स्वप्न देखने वालों को संघर्ष के लिए तैयार नहीं रहना चाहिए? मुझे विश्वास है कि इस प्रश्न का उत्तर कोई भी चिंतनशील व्यक्ति नकार में नहीं देगा?

## संघर्ष कैसे किया जाये?

अनैतिकता के साथ संघर्ष करने की पद्धति भी नैतिक होनी चाहिए। इसके लिए कुछ कदम उठाने की आवश्यकता है। ये कदम हैं :

- स्वार्थों का विसर्जन करने की क्षमता।
- प्रेम और मैत्री का विकास। जिसके प्रति संघर्ष करना है, उसके प्रति हृदय में अगाध प्रेम और मैत्री का भाव होना चाहिए।
- कठोर संयम और कष्ट सहिष्णुता।
- धैर्य और मानसिक संतुलन।
- विवेकपूर्ण निर्णय और मार्गदर्शन।

इस पद्धति के सहारे अनैतिकता के विरुद्ध संघर्ष करने वाले कुछेक लोग आगे आयें तो शक्ति–संतुलन नैतिकता के हाथों में होगा।

## गतिशील प्रक्रिया

अणुव्रत आंदोलन सतत गतिशील प्रक्रिया है। यह किसी परंपरा या उपासना पद्धति से आबद्ध नहीं है, इसलिए यह व्यापक है। इसमें उन लोगों के लिए अधिक अवकाश है जो व्यापक दृष्टि से सोचते हैं। जातीयता और सांप्रदायिकता के कटु परिणाम हमने देखे हैं। उनके कारण धर्म भी दूषित–सा हो रहा है।

वर्तमान का राजनीतिक वातावरण भी स्वस्थ नहीं है। मैं जब विगत वर्ष की घटनाओं का सिंहावलोकन करता हूँ तो मुझे लगता है इस संकल्पी (प्रयोजन शून्य) हिंसा की गति तीव्र हो रही है। महात्मा गांधी ने दो दशक तक जहां से अहिंसा का संदेश दिया, उस साबरमती आश्रम के आसपास सांप्रदायिकता का भद्दा प्रदर्शन हुआ और वह तब हुआ जब महात्मा गांधी की शताब्दी मनायी जा रही थी और उनके अहिंसा–संदेश का विदेशों तक प्रसार किया जा रहा था।

इस प्रकार की घटनाओं को देखकर क्षण भर के लिए पैर रुक जाते हैं। गांधीजी के प्रश्नों का यह परिणाम आया, तब क्या हमारे प्रश्नों का इससे भिन्न परिणाम आयेगा? फिर दूसरे क्षण सोचता हूँ कि मनुष्य अपूर्ण है, उसे सहज ही पूर्ण नहीं बनाया जा सकता, किंतु उसकी अपूर्णता के सामने पूर्णता की दिशा न खोली जाये तो वह अधिक भयंकर हो सकती है। यदि हमारे पूर्वजों ने अहिंसा के प्रयत्न नहीं किये होते तो संभवतः मनुष्य और अधिक क्रूर हो जाता। इस चिंतन से यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अहिंसा और अपरिग्रह की दिशा को उन्मुक्त करना चाहिए और वर्तमान परिस्थिति के संदर्भ में और तीव्रता से करना चाहिए।

# अणुव्रत-साधना का अर्थ

आचार्य महाप्रज्ञ

साहित्य उद्‌बुद्ध चेतना का सरस परिपाक है, पर इससे पहले व्रत की आवश्यकता है क्योंकि व्रत में शासन और त्राण–शक्ति होती है। शास्त्र का व्युत्पत्ति लभ्य अर्थ यही है – 'शासनात् त्राण शक्तेश्च शास्त्रम्।' आज शास्त्र का रूप शस्त्र ने ले लिया है, इसीलिए नृशंसता का विकास हुआ है।

भगवान महावीर ने कहा – 'अत्थि सत्थं परेण परं नत्थि असत्थं परेण परं।' शस्त्र में स्पर्धा होती है। एक मारक शस्त्र आज नया निकला है। दूसरे दिन फिर उससे अधिक मारक और तीसरे दिन उससे भी अधिक संहारक। इस प्रकार शस्त्र में स्पर्धा बढ़ती जाती है। अशस्त्र – त्याग में कोई स्पर्धा नहीं होती।

शास्त्र में जब तक सुरक्षा की कल्पना थी, तब तक मनुष्य अभय था। जब उसका आरोप शस्त्र में हो गया, तब वह भयभीत हो गया। उसे कवच की आवश्यकता हुई। एक समय में किले कवच के रूप में निर्मित किये गये थे। उनमें त्राण–शक्ति थी। अणुबम के युग में उनमें वह शक्ति नहीं रही। आज कहीं भी त्राण नहीं दिख रहा है। सही तो यह है कि बाहर कहीं त्राण है भी नहीं। अपना त्राण अपने में है। उसी का नाम है – व्रत। जो अपने आप में संवृत है, उसे बाह्य शक्ति असुरक्षित नहीं बना सकती। जो अपने आप में संवृत नहीं है, वह अणुबमों से परिवृत होकर भी सुरक्षित नहीं रह पाता। अणुव्रत का लक्ष्य है – मनुष्य में सहज त्राण और शासन शक्ति का विकास हो।

भौतिक पदार्थ जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक होते हैं। वे अनावश्यक ही हैं, ऐसा नहीं कह सकते, पर उनके प्रति आकर्षण बढ़ा है, वह आदेय नहीं है। पदार्थों का अतिभोग नृशंसता को बढ़ाता है। इसलिए जीवन में न्यूनतम संयम तो होना ही चाहिए। उसके बिना मानव मानव कैसे रह पायेगा?

आज पदार्थ, शिक्षा और कला का जितना विकास हुआ है, उतना संयम का नहीं। इसके दो कारण हो सकते हैं। एक तो पदार्थों की दुनिया में फिसलना है। दूसरा, साधना करने वाले लोग भी संयम का मर्म उतना नहीं जानते, जितना जानना चाहिए। संयम में समभाव है। उसका आनंद यदि एक बार भी हृदय को छू लेता है तो वह छूटता नहीं। एक बार भी उसका स्पर्श न हो तब चरित्र–विकास कैसे हो?

विद्यार्थी स्कूल में प्रवेश करता है। कानून, विज्ञान आदि अनेक विषयों की शिक्षा मिलती है, पर जीने की शिक्षा नहीं मिलती। उसके बिना आनंद नहीं आता। उसके बिना जीवन व्यर्थ है। आत्म–शासित और आत्म–संवृत होने से आनंद मिलता है। जो स्वयं नियंत्रित नहीं होता, उसका स्वतंत्र अस्तित्व भी नहीं होता।

हवा गर्मी में गर्म हो जाती है और थोड़ी वर्षा होते ही वह ठंडी हो जाती है। सर्दी और गर्मी के रूप में उसका स्वतंत्र अस्तित्व कुछ नहीं है। अनियंत्रित मनुष्य का भी

स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता। वह दूसरों के हाथ का खिलौना बना रहता है। दूसरा जब चाहे थोड़ी प्रशंसा करके उसको अपने वश में कर लेता है और प्रतिकूल आचरण कर उसे कुपित कर देता है। उसका अपना स्वरूप नहीं होता।

अणुव्रत साधना का अर्थ है– अपने पर शासन करने की कला का विकास। जो ऐसा कर पाता है, उसे कठिन से कठिन परिस्थिति भी डिगा नहीं सकती। फिसलन, भय और आवेग में भी वह संतुलन रख सकता है।

शक्ति शक्ति है। इससे आगे वह कुछ भी नहीं है। उसका उपयोग कहां हो? कैसे हो? क्यों हो? यह सब व्यक्ति पर निर्भर है। संरक्षण भी शक्ति से होता है और विध्वंस भी शक्ति से होता है। ऐसा इसीलिए होता है कि शक्ति अपने आप में शक्ति ही है, और कुछ नहीं।

कर्म आस्था के पीछे–पीछे चलता है। प्रेरक शक्ति आस्था में है, कर्म केवल प्रेरित है। हम यह न देखें कि कर्म किधर जा रहा है? हम देखें आस्था किधर जा रही है? आज आस्था का अनुबंध अणु–अस्त्र से हो रहा है। उसमें सुरक्षा का आश्वासन दीख रहा है। जिसके पास अणु–अस्त्र है, वह अजेय है। जिसके पास अणु–अस्त्र नहीं है, वह भयभीत है।

हम चाहते हैं, जन–जन अणुव्रत के प्रति आस्थावान हो। नैतिकता में आश्वासन की शक्ति प्रादुर्भूत हो तो ऐसा हो सकता है। आश्वासन–विहीन व्यक्ति या वस्तु के प्रति आस्था उद्‌बुद्ध नहीं होती।

### आश्वासन–शक्ति

इस बिंदु पर सहज ही जिज्ञासा उभर आती है, क्या नैतिकता में आश्वासन–शक्ति है? सचमुच है और सच्चाई यह है कि अस्त्रों में आश्वासन नहीं है। यह मनुष्य का मोहाछन्न दृष्टिकोण है कि वह अनाश्वासन में आश्वासन देख रहा है और आश्वासन में आश्वासन नहीं देख रहा है। अस्त्र का आश्वासन दूसरे अधिक शक्तिशाली अस्त्र से समाप्त हो जाता है। इस समाप्ति के क्षण में ही एक जीतता है और दूसरा हारता है। जय और पराजय की वेला में आश्वासन नैतिकता का ही होता है। यदि मनुष्य में नैतिकता न हो, सामाजिक संपर्कों में स्वस्थता न हो तो पराजित होने वाले का अस्तित्व ही नहीं रह सकता, पर वह रहता है। उसकी भित्ति है जागतिक नैतिकता। अणुव्रत का कार्य दृष्टि के मोह या विपर्यय का प्रक्षालन करना है। इसीलिए आज वह जन–जन का आस्था–केंद्र बनता जा रहा है।

### व्यक्ति–निर्माण की दिशा

अणुव्रत आंदोलन व्यक्ति–निर्माण की दिशा है। सत्ता से सामूहिक ढांचा बदल जाता है। व्रतों से ऐसा नहीं हो पाता। सत्ता बाहरी रूप बदलती है, अंतर् को नहीं छूती। व्रत अंतर् को छूते हैं। अंतर् का परिवर्तन आंतरिक

योग्यता पर निर्भर होता है। वह सबकी समान नहीं होती। इसलिए एक साथ वैसा नहीं बनता। इस स्थिति में व्यक्ति–निर्माण की बात शेष रहती है। व्यक्ति समाज का अंग है। यदि एक अंग भी ज्योति–पुंज बनता है, उससे समूचे समाज को आलोक मिलता है। अणुव्रत आंदोलन आध्यात्मिक है। इसकी दिशा सबके साथ चलने की नहीं है। बुराइयों में लिप्त लोग सुख–सुविधाएं पा रहे हैं, फिर अकेला मैं ही उन्हें छोड़ सुख–सुविधाओं से क्यों वंचित रहूँ? जो सबको होगा, वही मुझे होगा, यह विचार अन–आध्यात्मिक है। व्यक्ति का पतन उसके अपने बुरे कर्म से होता है, इसलिए मुझे उससे अवश्य बचना चाहिए, यह आध्यात्मिक चेतना है। व्यक्ति–निर्माण की सही दिशा यही है। आंदोलन की कल्पना है कि प्रत्येक व्यक्ति अभय, सहिष्णु, समभावी, संतुष्ट, शांत, जितेंद्रिय और आग्रहहीन बने।

### अणुव्रती कौन?

इस विश्व में अनेक राष्ट्र, अनेक जातियां, अनेक वर्ग, अनेक संप्रदाय और अनेक विचार वाले लोग हैं। भौगोलिक सीमा और विचारों के भेद ने लोगों को अनेक रूपों में बाँट रखा है। वास्तव में ये सारे भेद कृत्रिम हैं। बाहरी सीमाएं मनुष्य–मनुष्य में भेद नहीं डाल सकतीं। इसलिए अणुव्रती बनने में जात–पांत आदि के भेद बाधक नहीं बनते।

अणुव्रत विधान के अनुसार जीवन–शुद्धि में विश्वास रखने वाला हर व्यक्ति अणुव्रती हो सकता है। अणुव्रत का मूल आधार है – मानवीय एकता और सह–अस्तित्व। जिस व्यक्ति का मानवीय एकता में विश्वास नहीं है, जिस व्यक्ति का सह–अस्तित्व में विश्वास नहीं है, जिस व्यक्ति का मानवीय समानता में विश्वास नहीं है, वह अणुव्रती नहीं हो सकता।

एक प्रश्न है–आत्मा, परमात्मा, पुनर्जन्म और धर्म को नहीं मानने वाला अणुव्रती हो सकता है?

मानवीय एकता, समानता और सह–अस्तित्व में जिसकी आस्था है, वह अणुव्रती हो सकता है, फिर वह चाहे शाब्दिक रूप में आत्मा–परमात्मा को माने या ना माने, धर्म को माने या ना माने, उपासना करे या न करे, ये उसकी व्यक्तिगत आस्था के प्रश्न हैं। अणुव्रत मानवीय आचार संहिता है। जो मनुष्य है, वह मनुष्य होने तथा मानवता के प्रति आस्थावान होने के नाते अणुव्रती होने का अधिकार प्राप्त कर सकता है।

## नैतिक श्रद्धा का जागरण

पहले धारणाएं बदलती हैं, फिर व्यवस्था। परिस्थितियों का परिवर्तन हुए बिना मनुष्यों का परिवर्तन नहीं होता। परिस्थितियां नैतिकता के अनुकूल होती हैं, मनुष्य नैतिक बनता है। वे उसके प्रतिकूल होती हैं, मनुष्य अनैतिक बनता है, यह बहुतों की धारणा है। यह परिस्थितिवाद है। भौतिकता का उत्कर्ष इसी धारणा से हुआ है।

अणुव्रत साधना का अर्थ है - अपने पर शासन करने की कला का विकास। जो ऐसा कर पाता है, उसे कठिन से कठिन परिस्थिति भी डिगा नहीं सकती। फिसलन, भय और आवेग में भी वह संतुलन रख सकता है।

अणुव्रत आंदोलन परिस्थितिवाद का प्रचार नहीं करता। वह आध्यात्मिक है। परिस्थितियों की अनुकूलता से उसका कोई विरोध नहीं है किंतु उनकी अनुकूलता में ही मनुष्य नैतिक रह सकता है–इस धारणा से विरोध है। मनुष्य परिस्थितियों की उपज नहीं है। उसका स्वतंत्र अस्तित्व है। भोग–वृत्ति से वह दुर्बल बनता है। कठिनाइयों को सहन करने की क्षमता नष्ट हो जाती है। मनुष्य परिस्थिति से दब जाता है। आध्यात्मिकता का प्रवेश–द्वार है त्याग। त्याग से आत्मा का बल बढ़ता है। आत्मबल का मतलब है–भौतिक आकर्षण का अभाव। पदार्थ का आकर्षण मनुष्य में दैन्य भरता है। पदार्थ का आकर्षण टूटता है तो आत्मबल का सहज उदय हो जाता है। आत्मोदय की धारणा में परिस्थिति गौण बन जाती है।

यह सच है–परिस्थिति की प्रतिकूलता जनसाधारण के लिए एक प्रश्न है, किंतु मनुष्य को परिस्थिति का दास बनाकर उसे नहीं सुलझाया जा सकता। परिस्थिति के रूपांतर से मनुष्य की वृत्ति का रूपांतर हो जाता है। यह नैतिक विकास नहीं है। साम्यवादी अर्थ–तंत्र में एक प्रकार की अनैतिकता मिट जाती है, पर क्या अनैतिकता के सभी प्रकार मिट जाते हैं? क्या उस व्यवस्था में अपराध और अपराधी नहीं होते? क्या राजनैतिक स्पर्धा नहीं होती? एकतंत्र एक परिस्थिति पैदा करता है, जनतंत्र दूसरी। पूँजीवाद एक परिस्थिति पैदा करता है, साम्यवाद दूसरी। इनमें नैतिकता के एक रूप का विकास होता है तो उसके दूसरे रूप का विनाश भी होता है। अनैतिकता का एक रूप मिटता है तो उसका दूसरा रूप उभरता भी है। यह परिस्थितिवाद की देन है। उसे मुख्य मानकर चला जाये तो वह रुकेगी नहीं। आध्यात्मिकता परिस्थिति–निरपेक्ष है। मनुष्य आत्मा है। उसकी क्षमता असीम है। वह प्रतिकूल परिस्थिति में भी नैतिक रह सकता है। अणुव्रत आंदोलन का ध्येय है–श्रद्धा को जगाना।

## संख्या और व्यक्तित्व

किसी भी स्थिति का आकलन करने के लिए संख्या का उपयोग होता है। अणुव्रत आंदोलन जनमानस को कितना छू रहा है, इसकी जानकारी के लिए अणुव्रतियों की संख्या की जाती है। पर आंदोलन का विश्वास संख्या में नहीं, व्यक्तित्व में है। व्रत की सफलता चरित्र के विकास से नापी जाती है। चरित्र–संपन्न व्यक्ति संख्या में भले ही थोड़े हों, समाज के लिए पथ–दर्शक बन सकते हैं। व्रतों को स्वीकार कर उनके आचरण से जी चुराने वाले आंदोलन को प्रभावशाली नहीं बना सकते और अपना भला नहीं कर सकते। आंदोलन की भावना जन–जन तक पहुँचनी चाहिए। फिर कोई अणुव्रती बने या ना बने, इसकी चिंता आंदोलन के संचालकों को नहीं होनी चाहिए। जो अणुव्रती बनें, उन्हें मार्गदर्शन मिले – इस दृष्टि से संख्या करना उचित लगता है।

## संघटन या विघटन

संयम का अर्थ ही विघटन है। इसका मूल व्यक्तिवाद है। व्यक्ति का अपने लिए अपने पर अपना जो नियंत्रण है, वह संयम है। उसका संगठन हो ही नहीं सकता। अणुव्रत आंदोलन कोई संघटन नहीं है। कुछ लोग अपने को अवस्था या पद–मर्यादा में बड़ा मानते हैं। वे व्रत लेने में सकुचाते हैं। उनके विचार से व्रत लेने की आवश्यकता छोटों को ही है, किंतु यह विचार सही नहीं लगता।

व्रत मन का दृढ़ संकल्प है। संकल्प की दृढ़ता के बिना बुराई से बचना सरल नहीं है। बड़ों का संकल्प सहज भावतया दृढ़ ही होता है–ऐसा नहीं मान लेना चाहिए। संभव है, संकल्प होने पर भी कहीं–कहीं व्यक्ति फिसल जाये, पर संकल्पहीन के फिसलने में तो कहीं बाधा ही नहीं है। संकल्प एक सहज आलंबन है, जो व्यक्ति को फिसलने से बचाता है।

संकल्प वाले व्यक्ति बहुत होते हैं, तब बाहरी रूप में सहज ही एक संगठन होता है। वे सब अपनी–अपनी पवित्रता में विश्वास रखने वाले हैं। इसलिए वास्तव में उनका संघटन विघटन ही है।

# दीपक का पुरुषार्थ

■ डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी ■

पूजन–पाठ एवं धार्मिक अनुष्ठानों में सदैव दीपक को प्राथमिकता मिलती रही है। देव–प्रतिनिधि के रूप में पूजन की वेदी पर दीपक को प्रतिष्ठापित किया जाता है। इसका मूल कारण उसका वैभव नहीं, स्तर है, जो सामर्थ्य की दृष्टि से नगण्य होते हुए भी उसके असामान्य साहस का उदात्त परिचय देता है। श्रद्धा सदा असामान्य साहस दिखाने वालों के पुनीत चरणों में ही विनयावनत होती है।

वैसे तो दीपक की मूल्य सम्पदा अत्यल्प है–न के बराबर, परंतु अंधकार को मिटाने के सद् उद्देश्य के प्रति उसमें कुछ कर गुजरने की असीम हिम्मत होती है। अंधकार से जूझना बहुत कठिन होता है। जीवन के सफर में कठिनाइयाँ झेलने, संकट उठाने के लिए तो इच्छा या अनिच्छा से सभी को विवश होना ही पड़ता है। यह नियति है। स्वार्थ पूर्ति भी बिना कष्ट सहे और पुरुषार्थ किये कहां होती है। वैभव भी हस्तान्तरित होता है। ...और फिर यह प्रकृति की व्यवस्था है जिसके कारण हर किसी को एक दिन जीवन छोड़ने और मृत्यु का वरण करने के लिए विवश होना पड़ता है। इस विवशता को सदाशयता व स्वेच्छा से शिरोधार्य करना और प्रवाह का उचित उपयोग कर लेना ऐसी दूरदर्शिता है, जिसे अपनाने का साहस दीपक करता है और इसी हेतु सर्वत्र उसकी प्रशंसा होती है।

किसी भी साधन की सार्थकता उसके सदुपयोग में सफलीभूत होती है। दुरुपयोग से विनाश का जन्म होता है और फिर अपव्यय के उपरांत पश्चाताप की पीड़ा सहनी होती है। दीपक की बुद्धिमत्ता इसमें है कि उसने विवेक की ज्योति जलायी और उपलब्ध साधनों का श्रेष्ठतम उपयोग करने के लिए वह साहस जुटाया जिसका परिचय देने में कोई सामान्य जीवट वाला असमर्थ ही रहता है। साधनों का उपयोग या दुरुपयोग करना अथवा अपव्यय करना ही प्रवाह है और इसी में सब बहते और डूबते हैं। सदाशयता के निमित्त उन्हें अर्पित करना हर किसी से नहीं होता।

आदर्शवादिता की बात करते, सुनते तो अनेक लोग देखे जा सकते हैं, पर उन आदर्शों को अपने व्यवहार में उतारने और निष्ठा की परीक्षा देने के लिए जलती हुई भट्ठी का सामना करने के लिए तैयार कौन होता है? दीपक की अपनी निष्ठा ही वह महानता है जिसके साथ उसका देवताओं की तरह पूजन–अभिवन्दन होता है। निष्ठा की यथार्थता उसी त्याग, बलिदान की कसौटी पर खरी सिद्ध होती है, जिसे दीपक ने आगे बढ़कर अपनाया और स्वयं को धन्य किया।

एक चिन्तन जन्म लेता है कि अंधेरा कितना गहन, कितना विशाल और दीपक कितना क्षुद्र, कितना छोटा? अनाचार, दुराचार कितना व्यापक और प्रकाश कितना स्वल्प? संघर्ष में विजय–पराजय किसकी? मित्र कितने? अमित्र कितने? इन सभी विवेचनाओं में उलझने के बजाय दीपक अपना पुनीत कर्तव्य निर्धारित करता है और उस पर एकाकी चल देता है। आत्मदान ही उसकी तपस्या है। प्रकाश का वितरण ही उसकी साधना है। संकल्प सत्य है या झूठा, इसका प्रमाण एक ही है–लक्ष्य के प्रति अडिग एवं सजग निष्ठा। आदर्शवादियों को अनादि काल से इसी पथ पर चलना पड़ा और आगे भी निरन्तर चलना होगा।

गणित के जानकार स्वीकार करते हैं कि दीपक मूर्ख है। उसने कमाया कुछ भी नहीं, खोया ज्यादा है। प्रज्ञावानों की दृष्टि में दीपक सनकी है, जो अपने को जीवन भर लुटाता रहता है। व्यवहार कुशल जनों का अभिमत है आदर्शों की दुहाई देना भर पर्याप्त है, उन्हें अपनाकर नुकसान नहीं उठाया जाना चाहिए। मगर दीपक का निश्चय है कि वह तिमिर की सघनता के मध्य भी प्रकाश का प्रहरी बनकर जीयेगा। प्रभात की प्रतीक्षा करेगा। जब तक जागरण का पर्व नहीं आ जाता, तब तक मूर्च्छा का लाभ उठाने वाले दुष्टों को चुनौती देते रहना ही उसका धर्म है। इस नीति–निर्वाह में किसका, कितना प्रयोजन सिद्ध हुआ, इसका मूल्यांकन करना दूसरों का कार्य है। दीपक इतने से ही संतुष्ट है कि जो सम्भव था, उसे पूरी ईमानदारी से करने में उसने कोई आलस्य नहीं दिखाया। निश्चय ही धन्यता का पर्याय है दीपक।

*कानपुर निवासी लेखक जाने–माने साहित्यकार तथा रामकथा व रामलीला के विश्लेषक हैं। ये शताधिक सम्मानों से अलंकृत हो चुके हैं तथा संप्रति कानपुर से प्रकाशित 'जयतु हिन्दू विश्व' मासिक के प्रधान सम्पादक हैं।*

# अर्थ परमार्थ से जुड़े

■ मुनि सुखलाल ■

साधारणतया यही समझा जाता है कि अध्यात्म और अर्थशास्त्र में कोई संबंध नहीं है। इसीलिए एक ओर जहां अध्यात्म–विचार अर्थशास्त्र से निरपेक्ष बनता गया। वहीं दूसरी ओर अर्थशास्त्र का विचार भी अध्यात्म–निरपेक्ष बनता गया। यह सही है कि अध्यात्म की ऊँची कक्षा में प्रविष्ट हो जाने के बाद साधक पदार्थ से निरपेक्ष बन जाता है। उस स्थिति में उसके लिए अर्थ बेमानी हो जाता है, पर यह एक ऐसी भूमिका है जिस पर हर कोई आरूढ़ नहीं हो सकता। सामान्य आदमी के लिए अर्थ सापेक्षता अनिवार्य है ही, पर यह भी सही है कि अर्थ का यात्रापथ जब परमार्थ से बिछुड़ जाता है तो उसके परिणाम भी शुभंकर नहीं हो सकते। इसी का परिणाम है कि आज स्वतंत्र परमार्थवाद जहां संप्रदाय से घिर गया या गिरि कंदराओं की ओर दौड़ने लगा, वहीं स्वतंत्र अर्थवाद भी संप्रभु बनकर सारी व्यवस्थाओं को छिन्न–भिन्न करने लगा।

**खाई को पाटना जरूरी**

अणुव्रत ने इस सापेक्षता को समझने का प्रयास किया है। पैसे का चलन मनुष्य की सुविधा के लिए हुआ था। शुरू–शुरू में इसने अपनी सार्थकता भी दिखायी, पर धीरे–धीरे वह इतना महत्वपूर्ण बन गया कि सारी बागडोर ही उसके हाथ में आ गयी।

भारी उद्योगों ने इस संतुलन को बिगाड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। यदि यह ऐसे ही चलता रहा तो अमीरी और गरीबी की खाई इतनी चौड़ी हो जायेगी कि फिर आदमी के लिए इस किनारे से उस किनारे और उस किनारे से इस किनारे तक पहुँचना नितांत असंभव हो जायेगा।

इसमें कोई शक नहीं कि जीवन चलाने के लिए अर्थ की अपनी उपयोगिता है, पर यह भी सही है कि आजकल इसी की वजह से नशीली दवाइयों का धंधा, शस्त्रों का धंधा, चोरबाजारी और तस्करी का बाजार गर्मा गया है। जब पैसा ही प्रभु बन जाता है तो फिर वस्तु के उत्पादन और विनिमय में संतुलन बिगड़े बिना नहीं रहेगा। भारी उद्योग एक ओर आदमी का शोषण तो करेगा ही, पर प्रकृति के अंधाधुंध दोहन से पर्यावरण की सुरक्षा भी खतरे में पड़ जायेगी। ऐसी स्थिति में आर्थिक संतुलन के लिए अणुव्रत के मुख्य चार सूत्र इस प्रकार हैं :

- अनैतिक धंधे नहीं करना
- संग्रह नहीं करना
- उपभोक्तावाद पर नियंत्रण करना
- विसर्जन करना

आदमी के पास अक्ल है तो उसका उपयोग किया जाता है, पर जब उसका दुरुपयोग होने लगता है तो मिलावट, तस्करी, कालाबाजारी आदि विकृतियां अपने आप पैदा हो जाती हैं। इसी से काला धन बढ़ता है और एक ओर अतिभाव बढ़ता है तो दूसरी ओर अभाव का सागर लहराने लगता है। आदमी को अपने तकनीकी साधनों का उस सीमा से आगे प्रयोग नहीं करना चाहिए जहां दूसरे का शोषण शुरू हो जाये।

मानवीय शोषण का अंत होगा तो न केवल मनुष्य के श्रम का ही अनुचित लाभ उठाया जाना बंद हो जायेगा,

अपितु भीमकाय उद्योग, शस्त्रास्त्रों का अनर्गल उत्पादन और वितरण, नशीली दवाइयों तथा शराब जैसी बुराइयों का भी अपने आप अंत हो जायेगा।

यह अर्थ की संप्रभुता का ही परिणाम है कि आज न तो लोगों को इस प्रकार के धंधे करने में लज्जा आती है, न सरकार को ऐसे उद्योगों को लाइसेंस देने में लज्जा आती है, न इसका व्यापार करने वालों को लज्जा आती है, न प्रचार माध्यमों को इनका प्रचार करने में लज्जा आती है और न इनका उपभोग करने वालों को ही लज्जा आती है।

**उपभोक्तावाद का विस्तार**

उपभोक्तावाद आज इस कदर बढ़ गया है कि लोग नित नया उत्पादन कर ग्राहकों को रिझाने में मशगूल हैं। एक जमाना था जब आदमी की आवश्यकताएं अत्यंत अल्प थीं, पर आज का नारा ही यह हो गया है कि उत्पादन बढ़ाओ और उसके लिए नयी–नयी मंडियों को खोजो। कोई शक नहीं कि इससे मनुष्य को सुविधा तो मिली है, पर उसका सुख छिनता जा रहा है। मुट्ठी भर लोगों के शरीर की चर्बी बढ़े तो इसे सामाजिक विकास नहीं कहा जा सकता। आवश्यकता है आज एक नये अर्थशास्त्र के निर्माण की।

अणुव्रत की ओर से अहिंसा और शांतिबोध के अंतर्गत अपरिग्रह की अर्थव्यवस्था पर एक व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी शुरू हो गया है। यह क्रम केवल आंकड़ों तक सीमित न रहे, अपितु मनुष्य की भावना में परिवर्तन आये, वैसा प्रायोगिक स्वरूप भी सामने आ रहा है।

**विसर्जन का सूत्र**

निश्चय ही जब मनुष्य की भावना में परिवर्तन हो जायेगा तो वह अर्थ से चिपककर नहीं रहेगा। पहले तो जब उसके अर्जन के तरीके ही स्वस्थ हो जायेंगे तो अधिक अर्थ संग्रहीत भी नहीं होगा। और यदि उसके पास अनावश्यक पैसा आ भी जायेगा तो वह उसका विसर्जन कर देगा। विसर्जन का असली अर्थ दान नहीं है, अपितु अर्थ पर से ममत्व दूर करना ही विसर्जन है। ऐसे लोग पैसे पर कुंडली मारकर नहीं बैठेंगे, अपितु अपने आपको उसका केवल न्यासी मानेंगे। प्रभुता की भावना का उच्छेद करना ही नई अर्थव्यवस्था का मूल्यवान सूत्र होगा।

कुछ साम्यवादी देशों में अर्थ को स्टेट में केंद्रित कर उसके समान विभाजन का प्रयोग किया गया था, पर यह स्पष्ट हो गया है कि वह व्यवस्था आज चरमरा गयी है। आज एक ऐसी अर्थव्यवस्था की आवश्यकता है जिसमें मनुष्य की भावना में ही परिष्कार हो और वह एक–दूसरे के जीने के लिए स्थान छोड़ने का अभ्यास करे। यह ठीक है कि इस नयी व्यवस्था को जन्म देने में आदमी को अपने आपको संवारना पड़ेगा, पर यह भी निश्चित है कि यदि वह नहीं समझा तो सारी दुनिया एक दिन विनाश के ऐसे गर्त में फँस जायेगी, जहां सब कुछ शेष हो जायेगा।

गांधीजी ने इसी बात को लक्ष्य कर कहा था – ''यदि स्वेच्छा से संपत्ति का त्याग नहीं किया जाता है और जो संपत्ति प्राप्त है, उसे खुशी–खुशी नहीं छोड़ा जाता है तथा संपत्ति का उपयोग सबकी भलाई के लिए नहीं किया जाता है तो निश्चय ही देश में खूनी क्रांति आयेगी।''

प्राचीन काल में धर्म की ओर से सभी तरह के संदर्भ में एक शब्द 'दान' के रूप में सुझाया गया था, पर दान में देने और लेने वाले के श्रेणीभेद ने अनेक समस्याएं पैदा कर दीं।

ऐसी स्थिति में आचार्य श्री तुलसी ने अपरिग्रह के साथ विसर्जन की बात को जोड़कर अहिंसा को एक नया आयाम प्रदान किया है। विसर्जन का अर्थ देना नहीं है। इसमें कोई लेने वाला भी नहीं है। जब लेने वाला सामने होता है तो देना एक अहंकार बन सकता है। सच्चा विसर्जन तो वही है जब आदमी अधिक ग्रहण न करे। पहले अधिक कमाओ और फिर उसे बाँटो, यह दोयम दर्जे की बात है। पहले दर्जे की बात असंग्रह है। जब संग्रह हो जाता है तब विसर्जन की बात सामने आती है। विसर्जन तभी घटित हो सकता है जब अर्थ के स्वामित्व का भाव हटे और किसी प्रकार का अहंकार पोषित न हो। ऐसी स्थिति में किसी को देना महत्वपूर्ण नहीं है। जब वस्तु एक जगह से छूटती है तो वह अपना दूसरा स्थान अपने आप बना लेगी।

सचमुच समाज–व्यवस्था का भी यह एक महत्वपूर्ण सूत्र बन जाता है। विसर्जन का लक्ष्य समाज व्यवस्था की सुचारुता नहीं है। यह तो आत्म–शुद्धि का संवाहक है, ममत्व का परिमार्जक है। आत्म–शुद्धि होती है तो समाज–व्यवस्था तो अपने आप प्रभावित हो जाती है।

# अनुराग
## हमारे अनुष्ठानों का आधार

■ देवर्षि कलानाथ शास्त्री ■

भारत एक आस्तिकता प्रधान देश है। आध्यात्मिकता का एक सुदृढ़ इतिहास रहा है इस देश का। आराध्य में गहन आस्था इस देश के प्रत्येक धर्म, संप्रदाय, पंथ, अंचल और वर्ग में रही है। गत 10–12 शताब्दियों से तो इस देश में 'भक्ति' आंदोलन की जो धारा बही, उसने सारे देश को मंदिरों में होने वाले भजन–कीर्तन, पूजा–पाठ, दान–दक्षिणा आदि में सराबोर कर दिया है। भक्ति का लक्षण सर्वविदित है। परमेश्वर के प्रति, अपने आराध्य के प्रति 'प्रेम' की भावना भक्ति का एकमात्र आधार है। भक्ति सूत्र में इसका लक्षण इस प्रकार बताया गया है –

'सा परानुरक्तिरीश्वरे' अर्थात् ईश्वर में अनुराग, प्रगाढ़ प्रेम ही भक्ति है। यह प्रेम सदियों से भारतीयों के हृदय में गहरा पैठा हुआ है।

यह तो बात हुई आराध्य के प्रति प्रेम की, किंतु हमारे यहां वेद–काल से लेकर आज तक, अनेक सदियों से जीवन के जो मूल्य प्रतिपादित किये गये हैं, धर्माचरण का जो मार्ग बताया गया है, उसका मूल अभिगम है प्रकृति के प्रति, पर्यावरण के प्रति, हमारे जीवन में आने वाली प्रत्येक वस्तु के प्रति प्रेम, सहिष्णुता और आत्मीयता की भावना। यही जीवन को जीने योग्य बनाती है, 'सकारात्मक' बनाती है।

जल हमारे जीवन का प्रमुख आधार है। जल के प्रति प्रेम हमें इसकी पूजा के लिए प्रेरित करता है। तभी तो हमारे गाँव–गाँव में, नगर–नगर में जिस प्रकार मंदिरों में भगवान की पूजा– आराधना होती है, उसी प्रकार प्रत्येक शुभ कार्य में गंगा जैसी पवित्र नदियों की पूजा की जाती है। प्रसव के बाद माता गंगा का पूजन करती है, इसे 'गंगापूजी' कहा जाता है। यह है जल पूजन, जलवा पूजन।

इसी प्रकार पर्यावरण के प्रति प्रेम का प्रकटीकरण हम वटवृक्ष का, पीपल का, शमी (खेजड़ी) का तथा अन्य वृक्षों का पूजन करके करते हैं। ज्येष्ठ माह की पूर्णिमा के दिन महिलाएं 'वटसावित्री' व्रत करती हैं। इसमें बरगद के वृक्ष की पूजा, सूत्रबंधन आदि का विधान है। तुलसी की पूजा तो घर–घर में होती ही है। बिना सिंचाई के अपने बल पर पलने वाले शमी वृक्ष का पूजन दशहरे (विजयदशमी) के दिन किया जाता है। यह पर्यावरण के प्रति हमारे अनुराग का प्रतीक है। पीपल पूनो (पूर्णिमा), आँवला नवमी आदि पर्व इसी के प्रमाण हैं।

इसी प्रकार पशुओं और पक्षियों को धर्माचरण के रूप में जल दान करना, अन्न दान करना, चारा देना शास्त्रों में विहित है। गाय को माता मानकर, पूज्य मानकर उसकी सेवा, उसे भोजन, जल आदि प्रदान करना धर्मकार्य माना गया है। श्राद्ध कर्म के अंग के रूप में कौए को अन्नदान करना अत्यावश्यक माना गया है।

वहीं, देवताओं ने अपने वाहन के रूप में किसी यंत्र को नहीं चुना, अपितु पशुओं और पक्षियों को चुना। विष्णु का वाहन गरूड़ है, शिव का वाहन नंदी बैल है, कार्तिकेय का वाहन मयूर है, दुर्गा का वाहन सिंह है। देवताओं का प्रकृति के साथ, पर्यावरण के साथ, जैव विविधता के साथ, प्राणियों के साथ प्रेम का प्रतीक है यह वाहन विधान। सर्वाधिक महत्वपूर्ण है धर्म का यह सिद्धांत जो कहता है कि अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और

अपरिग्रह–ये पाँच धर्म के आधार हैं। किसी भी प्राणी की हिंसा मत करो। वह आपका हित करता है तो भी ठीक है, अहित करे फिर भी उसके प्रति प्रेम का भाव रखो, क्षमा का भाव रखो। क्षमा का विधान सबके प्रति प्रेम का स्वरूप ही तो है। अपना हित हो या न हो, कोई अपना अहित भी कर दे तो उसके प्रति क्रोध न करो। ऐसी स्थितियों में क्रोध आना स्वाभाविक है किंतु हमारा धर्म या विधान कहता है कि उस स्थिति में भी क्रोध मत करो। 'अक्रोध' को धर्म का एक आवश्यक अंग बताया गया है। मनुस्मृति स्पष्ट कहती है–

*धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।*
*धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।*

अर्थात् धृति (धैर्य ), क्षमा (अपना अपकार करने वाले को भी उदारतापूर्वक माफ कर देना), दम (इच्छाओं को नियंत्रण में रखना), अस्तेय (चोरी न करना), शौच ( भीतर और बाहर की पवित्रता), इन्द्रिय निग्रह (इन्द्रियों को हमेशा संयमित रखना), धी ( सत्कर्मों से बुद्धि को बढ़ाना), विद्या (यथार्थ ज्ञान लेना) तथा सत्य और अक्रोध...धर्म के ये दस लक्षण हैं। इनमें क्षमा और अक्रोध हमें सिखाते हैं कि हमारे चारों ओर जो भी प्राणी हैं, वृक्ष हैं, पर्यावरण है, उसके प्रति अनुराग रखोगे तो क्रोध नहीं आयेगा। उनकी गलती को भी आप क्षमा कर देंगे। ये सारे गुण सदियों से भारत की आत्मा को पावनता प्रदान करते आये हैं। किसी और देश से, किसी अन्य दिशा से इनके विपरीत कोई प्रेरणा, कोई आंदोलन आ भी जाये तो उसका प्रभाव सर्वग्राही नहीं होता। कुछ वर्गों को कुछ समय तक वैसी हिंसा या उग्रता चाहे प्रभावित कर ले, हमारा सर्वाधिक सहज गुण अहिंसा, प्रेम, अनुराग, क्षमा और अक्रोध ही है।

*जयपुर में रहने वाले लेखक भारत सरकार के अधीन गठित संस्कृत आयोग के सदस्य तथा राजस्थान संस्कृत अकादमी के पूर्व अध्यक्ष हैं। ये राजस्थान सरकार के संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग के निदेशक भी रहे हैं।*

# दो ग़ज़लें

■ नित्यानंद 'तुषार' ■
*कवि एवं साहित्यकार, ग़ाज़ियाबाद*

*(1)*

*पहले काँटों पे लोग चलते हैं*
*तब कहीं, कुछ चिराग़ जलते हैं*

*कोई मौसम डरा नहीं सकता*
*हम हवाओं के रुख बदलते हैं*

*वक़्त आने पे रूठ जायें जो*
*वक़्त जाने पे हाथ मलते हैं*

*तुम कभी भी निराश मत होना*
*कितने ही रास्ते निकलते हैं*

*गर मुहब्बत में जान होती है*
*पत्थरों के भी दिल पिघलते हैं*

*(2)*

*गैर मुमकिन कुछ नहीं होता जहाँ में दोस्तो*
*हम जो चाहें तो पहुँच लें, आस्माँ में दोस्तो*

*सबकी अपनी भूमिका है, सबका अपना अर्थ है*
*चाँद है तो, हैं सितारे भी, जहाँ में दोस्तो*

*मैं ग़ज़ल को ख़ून देता ही रहा हूँ, उम्र भर*
*ज़िक्र मेरा ही नहीं है, दास्ताँ में दोस्तो*

*अपनी–अपनी खुशबुएँ हैं, अपने–अपने रंग हैं*
*फूल सारे हँस रहे हैं, गुलसिताँ में दोस्तो*

*हम बुरा ढूँढें, भला ढूँढें, ये हम पर है 'तुषार'*
*ख़ूबियाँ हैं, ख़ामियाँ हैं, इस जहाँ में दोस्तो*

आचार्य तुलसी
जन्म जयंती
कार्तिक शुक्ल द्वितीया
पर विशेष

# आचार्य तुलसी और जवाहरलाल नेहरू

राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जितने बड़े विद्वान थे, उतने ही दृष्टि सम्पन्न थे। अध्यात्म और धर्म के प्रति उनके मन में प्रगाढ़ आस्था थी। देश की जनता का नैतिक स्तर उन्नत हो, यह उनका लक्ष्य था। उनका मानना था कि अणुव्रत का अभियान नितान्त नैतिक अभियान है तथा यह देश और मानवता के हित में है। उनकी इच्छा थी कि इस अभियान को व्यवस्थित रूप से पूरे देश में चलाया जाये। इसके लिए वे प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के साथ आचार्यश्री का मिलन आवश्यक समझते थे।

उन्होंने कहा– "आचार्यजी! पं. नेहरू से आप मिले या नहीं?"

आचार्य श्री बोले, "नहीं, पण्डितजी से हमारा कोई परिचय नहीं है। उनके बारे में हमने सुना है कि धर्म और धर्मगुरुओं में उनकी कोई अभिरुचि नहीं है। वे न धर्म की चर्चा करते हैं और न धर्मगुरुओं से मिलते हैं। आप हमारे काम में रस लेते हैं, इसलिए आपसे मिलकर हमें प्रसन्नता होती है।"

राष्ट्रपति – "आचार्यजी! पण्डितजी के बारे में आपकी ऐसी धारणा हो सकती है, पर वे बहुत अच्छे विचारों के व्यक्ति हैं। आप अणुव्रत का जो काम कर रहे हैं, वह उनके ध्यान में आ जाये तो आपको काम करने में सुविधा रहेगी। मैं चाहता हूँ कि आप एक बार उनसे अवश्य मिलें।"

आचार्य श्री – "आप आवश्यक समझते हैं तो हमें पण्डितजी से मिलने में कोई आपत्ति नहीं है। इसमें माध्यम आपको ही बनना होगा।"

राष्ट्रपति ने आचार्य श्री का हवाला देते हुए प्रधानमंत्री को पत्र लिखा– *"प्रिय प्रधानमंत्रीजी! आचार्य तुलसी से आपका मिलना देश के हित में होगा। अभी वे दिल्ली आये हुए हैं। संभव हो तो इस पर विचार करें।"* *प्रधानमंत्री ने इसके उत्तर में लिखा–"प्रिय राष्ट्रपतिजी! मुझे आचार्य तुलसी से मिलकर प्रसन्नता होगी। मैं इन दिनों बहुत व्यस्त हूँ। इसलिए आचार्यजी यदि प्रधानमंत्री–निवास पर दर्शन दें तो बड़ी कृपा होगी।"*

राष्ट्रपति के निजी सचिव चक्रधरशरण बाबू नया बाजार स्थित अणुव्रत भवन आये। उन्होंने राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के बीच हुए पत्र–व्यवहार की जानकारी देते हुए आचार्य श्री से निवेदन किया–"राष्ट्रपति महोदय की इच्छा है कि आप प्रधानमंत्री–निवास पधारें। प्रधानमंत्री ने आपके साथ भेंट के लिए कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को शाम सात बजे का समय निश्चित किया है।" आचार्य श्री बोले–"हम लोग पदयात्री हैं। पदयात्रा करते हुए हम गाँव–गाँव, नगर–नगर और घर–घर जाते रहते हैं। हम प्रधानमंत्री–निवास भी जा सकते हैं। किन्तु प्रधानमंत्री ने जो समय दिया है वह हमारे अनुकूल नहीं है। कार्तिक पूर्णिमा को हमारा चातुर्मास सम्पन्न हो रहा है, इसलिए हम आवास–स्थल छोड़कर नयी दिल्ली नहीं जा सकते। दूसरी बात–रात्रि के समय हम बाहर नहीं जाते। इसलिए शाम सात बजे पहुँचना भी संभव नहीं है। रातभर प्रधानमंत्री की कोठी पर रहना भी कठिन है। अतः कोई दूसरा समय निर्धारित करना होगा।"

चक्रधर बाबू ने इसकी जानकारी राष्ट्रपति महोदय को दे दी। राष्ट्रपति ने पुनः प्रधानमंत्री से सम्पर्क किया। उनसे दूसरा समय माँगा गया तो वे बोले–"आचार्यजी को जिस दिन जिस समय यहां आने की सुविधा हो, वही समय रखा जा सकता है।" चातुर्मास के बाद दिल्ली में आचार्य श्री के अधिक समय ठहरने की संभावना नहीं थी, इसलिए मिगसर (मार्गशीर्ष) कृष्ण प्रतिपदा को दोपहर ढाई बजे का समय निश्चित किया गया।

आचार्य श्री ने चातुर्मासिक प्रवास सम्पन्न होने पर अणुव्रत भवन से विहार किया और चक्रधर बाबू की नयी दिल्ली स्थित कोठी पर पधारे। वह कोठी प्रधानमंत्री की कोठी से मात्र एक फर्लांग की दूरी पर थी। वहां से लगभग ढाई बजे चलकर आचार्य श्री प्रधानमंत्री की कोठी पर पहुँचे। उनके साथ मुनि चौथमलजी, मुनि चम्पालालजी, मुनि नथमलजी (आचार्य महाप्रज्ञ), मुनि दुलीचन्दजी, मुनि बुद्धमलजी, मुनि सागरमलजी समेत सात साधु थे। छोगमल चौपड़ा, नेमिचन्द गधैया, नेमचन्द पींचा, शुभकरण दसाणी, मूलचन्द सेठिया आदि सैकड़ों व्यक्ति साथ थे। प्रधानमंत्री की कोठी के बाहर प्रधानमंत्री के निकटस्थ व्यक्तियों ने आचार्य श्री का स्वागत किया। वहां के सेक्रेटरी मदनलालजी आचार्य श्री को कोठी में ले गये और बैठने के लिए कमरा दिखाया। उसमें कालीन बिछा था और कुर्सियां लगी थीं। आचार्य श्री ने कहा–"कालीन पर तो हम नहीं बैठ सकेंगे।" इस पर उन्होंने बाहर बरामदे का स्थान दिखलाया। आचार्य श्री बरामदे में उपयुक्त स्थान देख ही रहे थे कि प्रधानमंत्री पं. नेहरू आ गये और भारतीय संस्कृति के अनुसार दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन किया।

प्रधानमंत्री ने एक कुर्सी की गद्दी अपने हाथ में ले ली और आचार्य श्री के साथ–साथ चले। बरामदे के दूसरे छोर पर साफ–सुथरा स्थान था। वहां साधुओं ने छोटा–सा काष्टपट्ट बिछा दिया, उस पर आचार्य श्री बैठ गये। प्रधानमंत्री ने अपने हाथ से गद्दी बिछायी और आचार्य श्री के सामने बैठ गये। प्रधानमंत्री ने गृहमंत्री कैलाशनाथ काटजू, उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री गोविन्दवल्लभ पंत और अपनी पुत्री प्रियदर्शिनी इन्दिरा गांधी को वहीं बुला लिया। पंतजी वृद्ध थे, उन्हें नीचे बैठने में असुविधा हो रही थी। प्रधानमंत्री उनकी ओर उन्मुख होकर बोले– "पंतजी! आपको नीचे बैठने में कष्ट होगा, आप कुर्सी पर बैठ जाइए।" पंतजी ने कहा–" नहीं, मैं नीचे ही बैठूँगा।"

उस दिन आचार्य श्री और पण्डित नेहरू के बीच हुए संवाद के कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं :

*(प्रधानमंत्री किसी धर्मसंघ के आचार्य से पहली बार मिल रहे थे। आचार्य श्री के लिए भी यह पहला ही अवसर था। दोनों ओर उत्सुकता थी, पर बात शुरू करने की समस्या थी। आखिर मौन को प्रधानमंत्री ने तोड़ा)*

प्रधानमंत्री – "अच्छा, आचार्यजी! बोलिए, आप क्या चाहते हैं?"

आचार्य श्री – "हम कुछ नहीं चाहते।"

*(बात शुरू होने से पहले ही समाप्त हो गयी। वहां बैठे सब लोग आचार्य श्री की ओर देखने लगे। स्वयं प्रधानमंत्री को भी इस प्रकार के उत्तर की आशा नहीं थी। बातचीत का सूत्र पुनः उनकी ओर से जोड़ा गया।)*

प्रधानमंत्री – "फिर आपका यहां आने का उद्देश्य क्या है?"

आचार्य श्री – "आपके साथ हमारा कोई परिचय नहीं है। राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू को हम जानते हैं। हम उनसे मिले थे। उन्होंने प्रेरणा दी कि हम आपसे अवश्य मिलें। वैसे हम गत वर्ष गर्मी के दिनों में यहां आये थे। उस समय आपसे मिलने का प्रसंग ही नहीं बना। आपको शायद ज्ञात नहीं होगा कि हम कुछ वर्षों से एक नैतिक अभियान चला रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में हमारे देश में नैतिकता के स्तर में काफी कमी आयी है। लोगों में नैतिकता का भाव घटता जा रहा है। हमने सोचा–हमारे पास पाँच सौ पदयात्री साधु–साध्वियों की फौज है। आप देश के नैतिक उत्थान में इस फौज का इस्तेमाल करना चाहें तो वह तैयार है। यह बात आपको बताने के लिए यहां आये हैं।"

प्रधानमंत्री – "यह तो बहुत काम की बात है। आपने अब तक यह बात हम तक पहुँचायी क्यों नहीं?"

आचार्य श्री – "पण्डितजी! आपके बारे में सुना था कि धर्म के विषय में आपकी रुचि नहीं है। आप जानते हैं कि हम धर्म के आदमी हैं। इस कारण हमने कभी आपसे मिलने का प्रयास ही नहीं किया। इधर हमने आपके कुछ वक्तव्य पढ़े। उनमें यत्र–तत्र अध्यात्म की चर्चा है। उससे लगा कि आपकी अरुचि धर्म से नहीं, सम्प्रदायों से है। साम्प्रदायिक क्रियाकाण्डों में आपका रुझान नहीं है, पर अध्यात्म को समाज और देश के लिए उपयोगी मानते हैं। अणुव्रत यही कहता है कि व्यक्ति–व्यक्ति चरित्रनिष्ठ बने। उसकी चरित्रनिष्ठा का प्रभाव समाज और राष्ट्र पर हो तो देश के गिरते

हुए नैतिक स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है। इस उद्देश्य से हम अणुव्रत का काम कर रहे हैं। अब तक हजारों व्यक्ति अणुव्रती बन चुके हैं।"

प्रधानमंत्री – "अणुव्रती कहां बने हैं? हमारे देश में बने हैं क्या?"

आचार्य श्री – "हम लोग पदयात्री हैं, इसलिए देश में ही पदयात्रा करते हुए काम कर रहे हैं। अणुव्रती बनने वाले लोग इसी देश के हैं। आपने अणुव्रत की आचार संहिता देखी नहीं होगी?"

प्रधानमंत्री – "नहीं, अब तक नहीं देखी है। मेरी इच्छा है, मैं उसे देखूँगा।"

आचार्य श्री – "उसके बारे में आपके मूल्यवान सुझाव भी अपेक्षित रहेंगे। हम अणुव्रत के कार्य को व्यापक रूप में आगे बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील हैं। दिल्ली के चातुर्मासिक प्रवास में अणुव्रत के बारे में साप्ताहिक विचार परिषदें हुईं। उनमें आपके मंत्रिमण्डल के अनेक सदस्य उपस्थित हुए थे। गुलजारीलाल नन्दा, शंकरराव देव आदि ने अणुव्रत के बारे में अच्छे विचार रखे। नन्दाजी इस कार्य में बहुत दिलचस्पी ले रहे है। हम यहां से राजस्थान जा रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि हमारे जाने के बाद भी दिल्ली में अणुव्रत का काम चलता रहे।"

उस दिन 14 नवंबर था–प्रधानमंत्री का जन्मदिन। मध्याह्न तक उन्हें जन्मदिन की बधाई देने के लिए कई विशिष्ट व्यक्ति आ रहे थे। बातचीत के मध्य उनके सेक्रेटरी ने किसी नेता के आने की सूचना दी। प्रधानमंत्री ने उन्हें बिठाने का निर्देश दिया और वार्ता का क्रम आगे चलता रहा। वार्ता का एक दौर पूरा होने पर प्रधानमंत्री बोले–"आचार्यजी! क्षमा करें, कुछ लोग मिलने आये हुए हैं। वे प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं अभी दो मिनट में आता हूँ।"

आचार्य श्री – "हमें कोई जल्दी नहीं है। आपको आवश्यक कार्य करना ही होगा।"

*प्रधानमंत्री गये और बहुत जल्दी लौट आये। वार्ता का दूसरा दौर शुरू हुआ।*

आचार्य श्री – "पण्डितजी! कांग्रेस के साथ गांधीजी का नाम जुड़ा हुआ है। आप इस पार्टी के नेता हैं। कांग्रेसजनों में पदलिप्सा कैसे जाग गयी?"

प्रधानमंत्री – "आचार्य श्री! क्या बताऊँ? जब राष्ट्रहित और पार्टीहित गौण होता है तब पदलिप्सा जागती है। अथवा पद–प्रतिष्ठा प्रधान बनती है तब राष्ट्रहित विस्मृत हो जाता है।"

आचार्य श्री – "आपके अन्य कार्य का समय हो गया हो तो हम अपनी बात यहीं समाप्त कर दें।"

प्रधानमंत्री – ''नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। अभी समय है, आप संकोच मत कीजिए। अणुव्रत आंदोलन के बारे में मुझे थोड़ी जानकारी है। समय मिलने पर मैं उसका साहित्य पढ़ूँगा। आपके साथ विचारों का सूत्र जुड़ा रहे, इस दृष्टि से मैं गुलजारी लाल नन्दाजी से कहूँगा। वे आपके साथ सम्पर्क बनाये रखेंगे।"

आचार्य श्री – "अणुव्रत के प्रति आपकी जागरूकता रही तो हम देश की जनता के नैतिक स्तर को आसानी से कुछ ऊपर उठा सकेंगे।"

प्रधानमंत्री – "आचार्यजी! आप जो काम कर रहे हैं, वह बहुत अच्छा है। देश में और भी बहुत साधु हैं। आप उनके साथ मिलकर काम क्यों नहीं करते?"

आचार्य श्री – "पण्डितजी! आपका चिन्तन सही है। हमें किसी के साथ मिलकर काम करने में कोई आपत्ति नहीं है, पर हम लोग पदयात्री हैं। हमारा कहीं कोई बैंक बैलेन्स नहीं है। जिन सन्तों के साथ मिलकर काम करना है, वे सब मठाधीश हैं। उनके साथ हमारा तालमेल कैसे बैठ पायेगा?"

प्रधानमंत्री – "आपने बिल्कुल ठीक कहा। वे साधु पैसा रखते हैं, मोटरों में घूमते हैं और ठाठ–बाट से रहते हैं। उनके साथ काम हो सके, यह कम संभव लगता है। आप अपना काम स्वतंत्र रूप से कीजिए।"

आचार्य श्री – "वैचारिक और व्यवस्थागत तालमेल बैठ जाये तो किसी के भी साथ काम किया जा सकता है।"

प्रधानमंत्री – "आचार्यजी! आपसे मिलकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।"

*(14 नवंबर 1951 को नयी दिल्ली के त्रिमूर्ति भवन में लगभग 41 मिनट तक आचार्यश्री और प्रधानमंत्री का यह वार्तालाप सहज और सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।)*

# संवेदन

## अपनी शक्ति मुझे भी दे दो

■ डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़' ■

*वरिष्ठ ग़ज़लकार और गीतकार ( मुरादाबाद)*

*शब्दकोश सामर्थ्यवान तुम*
*मैं तो एक निरर्थक अक्षर*
*अपनी शक्ति मुझे भी दे दो*
*अधिक नहीं, केवल चुटकी–भर*

*तुम श्रद्धा के पात्र और मैं*
*निष्ठा से परिपूर्ण पुजारी*
*तुम सूरज जाज्वल्यमान हो*
*मैं नन्ही सी किरण तुम्हारी*
*तुम देवालय, तुम्हीं देवता*
*मैं तो एक अपावन पत्थर*
*अपनी शक्ति मुझे भी दे दो*
*अधिक नहीं, केवल चुटकी–भर*

*सारे अर्थ निहित हैं तुममें*
*तुम उदार, करुणा के सागर*
*मेरा जीवन ऋणी तुम्हारा*
*भर दो मेरी रीती गागर*
*तुम विस्तृत आकाश और मैं*
*निर्धन का छोटा–सा छप्पर*
*अपनी शक्ति मुझे भी दे दो*
*अधिक नहीं, केवल चुटकी–भर*

*वेद, पुराण, उपनिषद, गीता,*
*रामायण में वास तुम्हारा*
*झलक तुम्हारी पा जाने को*
*उत्सुक रहता है जग सारा*
*तुम सुख की बहती सरिता, मैं–*
*दुख का एक चिरंतन निर्झर*
*अपनी शक्ति मुझे भी दे दो*
*अधिक नहीं, केवल चुटकी–भर*

## उहापोह का वक्त

■ वीणा जैन ■

*कवयित्री और विचारक–बेंगलुरू*

*उहापोह का वक्त ये गुजर जाये तो अच्छा है...*
*क्या करूँ लम्बे–लम्बे जगरातों का?*
*प्रश्नों की वैतरणी में डूबता – उतराता*
*मन चंचल है... बेचैन है*
*नींद आ जाये तो अच्छा है ...*

*उहापोह का वक्त ये गुजर जाये तो अच्छा है ...*
*कहते तो हैं कुछ जरूर –*
*बुझते सूरज, घिरते अँधेरे, निखरते चाँद, बिखरते तारे*
*सुनो, मगर मुझे न लालिमा – मण्डित*
*सुबहों का भान है न केसरिया शामों का...*
*समझा दे कोई चतुराई से...तो अच्छा है...*

*उहापोह का वक्त ये गुजर जाये तो अच्छा है...*
*कैसे गढ़ूँ , कहो–सारे बतरस, अपने मन के माफिक!*
*कहीं किसी पे कोई वश नहीं –*
*मन कहता है 'मैं अवश नहीं'*
*एकबारगी सब उलझनें...सुलझ जाये तो अच्छा है...*
*उहापोह का वक्त ये गुजर जाये तो अच्छा है...*

## कॉलेज परिसर में छायी हरियाली

पुडुचेरी के टैगोर गवर्नमेंट कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. शशिकांत दास को आसपास कहीं खाली जगह दिखती है तो, वहां पौधे लगाने में जुट जाते हैं। मूल रूप से ओडिशा के रहने वाले शशिकांत पढ़ाई पूरी होने के बाद शिक्षण कार्य से जुड़ गये। उन्हें पहली नौकरी अरुणाचल प्रदेश में मिली। वहां अलग–अलग कॉलेजों में पढ़ाते हुए 2010 में वे पुडुचेरी पहुँचे। यहां दो कॉलेजों में सेवाएं देने के बाद 2017 में वे टैगोर कॉलेज में नियुक्त हुए। तब 15 एकड़ जमीन पर फैला यह कैंपस एकदम वीरान लगता था। डॉ. शशिकांत ने यहां पौधे लगाने शुरू कर दिये। जब बच्चों और दूसरे शिक्षकों ने देखा कि हरियाली बढ़ रही है तो वे भी उनके साथ जुड़ गये। आज कॉलेज की आधी से अधिक जमीन पर कटहल, चीकू, अमरुद, केला, नारियल, अनार जैसे फलों समेत 3000 पेड़–पौधे लगे हुए हैं। कॉलेज कैंपस में एक छोटा–सा तालाब भी है, जहां हर साल बारिश के मौसम में लगभग 12 लाख लीटर पानी इकट्ठा होता है।

शशिकांत दास कहते हैं, "जब इंसान इस दुनिया से जाता है तो अपने साथ कुछ नहीं ले जाता, लेकिन वह दुनिया को बहुत कुछ देकर जा सकता है। इसलिए हमें कुछ ऐसा काम करना चाहिए जो आने वाली पीढ़ियों के लिए लाभदायक रहे।"

कहानी

# खोया हुआ सुख

■ पूरन सरमा ■



शाम को दफ्तर से लौटने में देर हो गयी थी। चाय पीकर संध्याकालीन अखबार पढ़ने लगा, लेकिन मन नहीं लगा। अचानक ध्यान आया, आज राजा नहीं आया। वह तो शाम को मेरे आते ही आ जाया करता था। आज क्या बात है? मैंने पत्नी को आवाज दी – " शीला! जरा इधर तो आओ।"

वह रसोई में काम कर रही थी। वहीं से बोली – "मुझे पता है, आप राजा के बारे में पूछ रहे हैं। अभी वह नहीं आया। आता ही होगा। उसके लिए कुछ लाये तो होंगे?"

दरअसल मैं दफ्तर से लौटते समय उसके लिए टॉफी, चॉकलेट, स्नैक्स आदि लाना नहीं भूलता था। "नहीं आया... लेकिन अभी तक क्यों नहीं आया ?" मैंने कहा।

तभी राजा की आवाज आयी – "लो अंकल, मैं आ गया। जरा मुझे देखिए तो सही। कैसा लग रहा हूँ?

मैंने उसे देखा, वह नये कपड़ों में क्या खूब जँच रहा था। मैं बोला – "अरे, बेटे राजा, आज तो तुम सचमुच राजा बाबू लग रहे हो।" उसकी आवाज सुनकर शीला भी वहीं आ गयी थी। वह भी बोली – "अरे राजा, इधर आओ तुम्हें काला टीका लगा दूँ। किसी की नजर लग जायेगी। "

राजा बड़े ही भोलेपन से बोला – " नहीं आंटी, मुझे नजर लगने वाली नहीं है। आज मम्मी मुझे बाजार ले गयी थी। कपड़े दिलवाकर लायी। मेरे छोटे भाई के लिए भी कपड़े लायी है।"

मैंने कहा –"और बताओ, हम तुम्हारे लिए क्या लाये हैं ?"

"आप मेरे लिए आज भी टॉफी लेकर आये होंगे।" राजा ने कहा।

मैंने कहा – "अरे! तुम तो बड़े ज्ञानवान हो। कैसे जान लिया कि हम तुम्हारे लिए टॉफी लेकर आये हैं?"

अपने दोनों हाथ कमर पर लगाकर और तनकर खड़ा होकर राजा बोला–"हम भी किसी जादूगर से कम नहीं हैं अंकल।"

शीला ने उसे बाँहों में भरकर कहा – "वाकई तुम तो जादूगर ही हो राजा। हमारे दिल पर तुमने जो जादू किया है, उसे हम ही जानते हैं। अच्छा, पहले टॉफी खाओ।"

तभी उसकी माँ की आवाज सुनायी पड़ी –"राजा ! बेटा जल्दी आओ। थोड़ा घर में काम है।"

राजा ने वहीं से जोर से कहा –"आया माँ, अभी मैं टॉफी खा रहा हूँ। अंकल मानते ही नहीं... रोज कुछ ले आते हैं और मुझे खिला देते हैं जबरन।"

फिर राजा अपने घर चला गया। मैं और शीला एक–दूसरे को देखने लगे तो शीला बोली, "कितना प्यारा बच्चा है!" और वह रसोई में चली गयी।

इस मोहल्ले में आये मुझे तीन महीने ही हुए हैं। मैं राजा के परिवार के बारे में कुछ नहीं जानता। बस वह शाम को मोहल्ले में खेलता मिल जाता था। उसकी प्यारी मोहिनी सूरत को देखकर मैं उससे बोल लेता था। बस, फिर वह हमारे घर में आने लगा। शीला को भी वह इतना भाया कि उसे अपनी संतान नहीं होने का तनिक भी

मलाल नहीं रहा। हां, इतना जरूर मालूम हो गया था कि राजा अपनी माँ और एक छोटे भाई के साथ सामने वाले कच्चे मकान में रहता है। उसके पिता नहीं थे। मुझे और शीला को इस बात का रंज भी था, लेकिन हम दोनों राजा को असीम प्यार करने लगे थे।

रविवार का दिन था। मैं पलंग पर अलसाया–सा पड़ा था, तभी मेरा दोस्त प्रकाश आ गया। उसकी एक बड़ी फैक्ट्री है। उसने काफी पैसा कमा लिया है और बड़े ही ठाठ–बाट से पॉश कॉलोनी में अपने आलीशान बंगले में रहता है। प्रकाश बाहर से ही चिल्लाया–'अरे भाई कुमार.. .घर में हो क्या ?''

मैंने कहा –''घर में नहीं तो क्या छत पर हूँ। अन्दर आ जाओ। बोर हो रहा था। सोच रहा था तुम्हारे घर चलूँ कि तुम आ गये।''

प्रकाश ने कमरे में प्रवेश किया और कुर्सी पर बैठते हुए बोला – ''अरे भाई कुमार! यह हमारी भाभीजान सुबह–शाम रसोई में घुसी रहती हैं। आप लोग कितना खाते हैं। कभी तो भाभी को आराम भी करने दिया करो।''

शीला हँसती हुई आयी और बोली –''कभी घर न्यौता देकर खाने पर बुलाओ, पता चल जायेगा कि हम कितना खाते हैं।

''अरे भाभी, आप लोग आते ही कहाँ हैं। कुमार से पचास बार कहा होगा कभी भाभी को लेकर 'डिनर' पर आ जाओ लेकिन पता नहीं आपने इसे कितने बहाने कण्ठस्थ करा दिये हैं कि यह आता ही नहीं।''

मैं बोला–'पहले तुम पति–पत्नी आओ, फिर आयेंगे हम लोग।'' फिर मैं शीला को देखकर बोला –''शीला, प्रकाश कितने दिनों में आया है। जाओ हलवा बना लाओ। इसे असली घी का हलवा बहुत पसंद है।''

शीला जाने लगी तो प्रकाश बोला –''जरा अच्छी तरह बनाना भाभी। मुझे भूख भी ज्यादा ही लगी है।''

शीला रसोई में चली गयी तो प्रकाश बोला – ''और सुनाओ कुमार! कैसी गुजर रही है भाई! हमें चाचा कब बना रहे हो?''

एक पल तो मेरे चेहरे पर मायूसी घनीभूत हुई, लेकिन मैं हौले से हँसकर बोला – ''छोड़ यार ! बच्चे हमारे नसीब में नहीं हैं।''

''नहीं कुमार, तुम्हारी शादी को पाँच साल हो गये, अब नहीं तो क्या मेरा भतीजा तुम्हारे बुढ़ापे में आयेगा?''

''यही समझ लो प्रकाश। तुमसे तो क्या छिपाना। शीला माँ नहीं बन सकती।'' मैंने कहा तो प्रकाश विस्मय से बोला – ''यह क्या कह रहे हो तुम?''

''मैं सही कह रहा हूँ।'' मैंने कहा। तभी वहाँ राजा आ गया। उसने आते ही प्रकाश से कहा –''नमस्ते बाबूजी।''

मैं आश्यर्च से बोला –''राजा, तुम इन्हें जानते हो।''

राजा तपाक से बोला –''हाँ, मैं और मेरी माँ इन्हीं की गलीचे की फैक्ट्री में काम करते हैं।''

मैं बोला – ''क्या कहा, तुम फैक्ट्री में काम करते हो ?''

''हाँ अंकल! मैं काम करता हूँ, मुझे पैसा मिलता है। उसी से हमारा खर्च चलता है। अकेली माँ क्या करे। बापू तो मुझे छोटा–सा छोड़कर ही चल बसे थे।

मैं प्रकाश से बोला – ''यह क्या ? तुम्हारी फैक्ट्री में इतने छोटे बच्चे काम करते हैं ?''

''लेकिन तुम इतने चिन्तित क्यों हो रहे हो? मेरे भाई ! मेरी फैक्ट्री में इसके जैसे एक नहीं, अनेक बच्चे हैं, जिनकी नन्ही अंगुलियाँ शानदार गलीचों का निर्माण करती हैं। पर यह तो बताओ यह लड़का तुम्हारे यहाँ कैसे आता है ?'' प्रकाश बोला।

मैंने कहा –''यह मेरे सामने वाले मकान में रहता है। बहुता प्यारा बच्चा है। यह नहीं आता है तो हमें सूना–सूना–सा लगता है। शीला भी इसे अपना समझती है।''

''कुमार! बुरा मत मानना। इन छोटे लोगों को मुँह मत लगाओ। कल कुछ ले गये तो किसे पकड़ोगे? इनका कोई भरोसा नहीं।''

मैंने कहा –''प्रकाश, बस करो। ज्यादा मत बोलो। एक तो बच्चों का श्रम–शोषण कर रहे हो, ऊपर से इनकी ईमानदारी पर अँगुली उठा रहे हो। इनकी मेहनत के बूते पर आज धनपति बन गये और इन्हें ही ... ।''

प्रकाश आश्चर्य से बोला – ''तुम होश में हो न कुमार! इस अदने–से बच्चे के लिए मुझसे नाराज हो रहे हो।''

''हाँ...हाँ...मैं तुमसे नाराज हूँ। तुम अपने स्वार्थ के लिए बच्चों का शोषण कर रहे हो। इनसे इनका बचपन छीन रहे हो। इनके पढ़ने की उम्र में इनसे काम करवा रहे हो।'' मैंने कहा।

इस बीच राजा वहाँ से चला गया था। प्रकाश कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और मेरे पास आकर बोला – ''देखो कुमार, मैं किसी को उसके घर से जबरन अपनी फैक्ट्री में लेकर नहीं आता। आदमी की जरूरतें उसे न करने वाले काम को भी करने के लिए विवश कर देती हैं। राजा भी अपनी माँ की मर्जी से काम करने आता है।''

मैं अपने गुस्से को काबू में नहीं रख पाया। मैंने प्रकाश से कहा, ''बाल श्रम शोषण के विरुद्ध कानून है और तुम उस कानून के अपराधी हो। तुमने मासूम राजा से काम करवाया है। मेरी आत्मा चीत्कार कर उठी है। प्रकाश! अपने गलीचे में तुमने राजा के खून से रंग भरा है। अच्छा होगा कि तुम यहाँ से चले जाओ। मुझे तुम्हारी दोस्ती की जरूरत नहीं है।''

प्रकाश क्रोध में तमतमाया घर से निकल गया। शीला मेरी तेज आवाज सुनकर कमरे में आ गयी थी। उसने पूछा– ''क्यों... क्या हुआ ?''

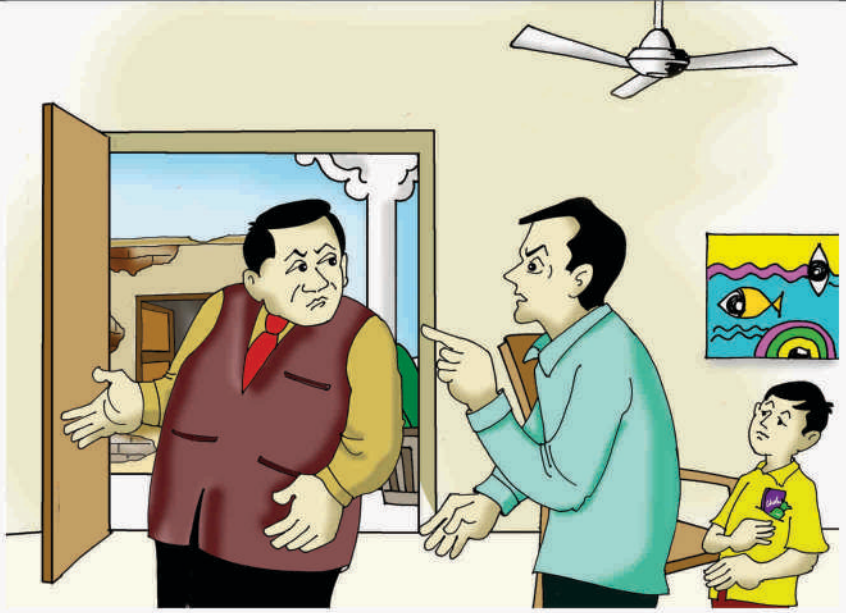

मैं बोला – "शीला! प्रकाश इंसान नहीं है। उसने राजा से उसका बचपन छीना है। मैं उससे घृणा करता हूँ।"

"क्या राजा इनकी फैक्ट्री में काम करता है ?" शीला ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ...राजा उसकी फैक्ट्री में काम करता है। मैं यह नहीं होने दूँगा। मैं प्रकाश के खिलाफ शिकायत करूँगा। भले वह मेरा दोस्त ही क्यों न हो। मैं बच्चों के साथ ऐसा नहीं होने दूँगा।" मैंने कहा तो शीला बोली –"धैर्य रखो। सब ठीक हो जायेगा। मैं भी आपके साथ हूँ। अत्याचार को मौन होकर देखना भी अन्याय है। हम मिलकर लड़ेंगे।"

मैं चुप हो गया। शीला रसोई में लौट गयी।

इस घटना के बाद मैं अनमना–सा रहने लगा। राजा का चेहरा रह–रहकर मेरी आँखों के आगे कौंध जाता था। इसी बीच दफ्तर के काम से मुझे बाहर जाना पड़ गया। आते ही मैंने शीला से राजा से बारे में पूछा। वह बोली, "राजा को तो हमारे घर आये पन्द्रह दिन हो गये।"

उसके इतना कहते ही मुझे राजा की याद सताने लगी। मैं बोला – "हम दोनों उसके घर चलते हैं। कहीं वह बीमार तो नहीं है? उस दिन प्रकाश ने भी उससे कड़वी बातें कह दी थीं।"

शीला और मैं सामने वाले घर में घुसे तो वहां सन्नाटा था। मैंने आवाज लगायी–"राजा...!" आवाज सुनकर एक औरत सामने आयी। शीला ने पूछा–"क्या आप राजा की माँ हैं ?"

उसने स्वीकृति में सिर हिलाया। उसकी आँखों में आँसू भरे हुए थे। वह बोल नहीं पा रही थी। मैंने पूछा – "क्यों, क्या बात है ? राजा कहाँ है ?"

इतना सुनते ही उसकी आँखों में रुका हुआ आँसुओं का बाँध टूट पड़ा, सुबकते हुए बोली – "वह पन्द्रह दिनों से बुखार से पीड़ित है। डॉक्टर का कहना है कि उसके फेफड़ों में पानी भर गया है। इलाज बहुत महँगा है।

मैंने कहा – "पहले हमें राजा को दिखाओ।"

वह हमें भीतर ले गयी। राजा एक चारपाई पर आँखें मूँदे पड़ा था। मैं धीरे से बोला –"राजा, देखो तुम्हारा अंकल आया है।"

राजा ने आँखें खोलीं और फिर मूँद लीं। मैंने पूछा –"क्यों बेटा, क्या तुम मुझसे नाराज हो?"

उसने नहीं में सिर हिलाया और रोने लगा। शीला ने उसे सीने से लगा लिया और बोली – "रोओ मत मेरे राजा बेटा ! हम तुम्हारा इलाज करायेंगे। स्कूल में पढ़ायेंगे। अब तुम्हें फैक्ट्री जाने की जरूरत नहीं है।"

"सच आंटी...! क्या मैं स्कूल जाऊँगा! मैं ठीक हो जाऊँगा न आंटी!" वह रोता हुआ बोला।

शीला बोली– "हाँ बेटा...मैं तुम्हें अपने पास रखूँगी।"

फिर शीला ने उसकी माँ से कहा – "बहन, राजा को हमें दे दो। हम इसे अपने पास रखेंगे। इलाज करायेंगे, पढ़ायेंगे और अपना बेटा बनाकर रखेंगे।

राजा की माँ रोती हुई बोली – "यह तो आपका ही बेटा है। मेरे पास तो ठहरता ही कहाँ है ?"

शीला ने उसे बाँहों में भर लिया और वह भी अपने आँसू नहीं रोक पायी।

राजा को घर लाते हुए मैं और शीला इतने खुश थे कि उसे बता पाना कठिन था। हमें लगा जैसे हमारा घर खुशियों से भर गया है। हमारा खोया हुआ सुख वापस मिल गया है। वहीं, बाल श्रम के खिलाफ आवाज उठाने को लेकर योजना का खाका मेरे मन में आकार लेने लगा।

*जयपुर निवासी लेखक करीब पाँच दशकों से हिन्दी एवं राजस्थानी में व्यंग्य, उपन्यास, नाटक तथा अन्य विधाओं में साहित्य सृजन करते रहे हैं। इनकी करीब पचास कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।*

*अणुव्रत के सिद्धांत आर्थिक शुचिता के पक्षधर हैं। अणुविभा अणुव्रत की प्रतिनिधि केंद्रीय संस्था है अतः इस दिशा में पहल करते हुए अणुविभा अपने लिए अर्थ संकलन के संदर्भ में कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धांत निर्धारित कर रही है।*

## :: अनुदान की संहिता ::

1. सभी तरह का अनुदान/सहायता राशि/डोनेशन जो कि दस हजार रुपये से अधिक हो, केवल चैक अथवा अन्य उपलब्ध बैंकिंग माध्यमों से ही लिया जाएगा।
2. अनुदान राशि मुख्य दानदाता अथवा उनके परिवार के सदस्य अथवा उनके व्यावसायिक प्रतिष्ठान अथवा उनकी ट्रस्ट/संस्था के नाम से ही स्वीकार की जा सकेगी।
3. अणुविभा को प्राप्त सभी प्रकार के अनुदान/सहायता राशि/डोनेशन की रसीद जारी की जाएगी जिसमें दानदाता का नाम, पता एवं पैन नम्बर का उल्लेख आवश्यक होगा।
4. दानदाता को रसीद पर निम्न सूचनाओं के अभाव में संस्था की 80जी का लाभ नहीं मिल पाएगा–

   1. पैन नम्बर, 2. सम्पूर्ण पता पिनकोड सहित 3. दो हजार रुपये से अधिक राशि का अनुदान नकद में होने पर।
5. अणुव्रत के आदर्शों के अनुकूल ही अनुदान स्वीकार किया जाएगा।

## :: अनुदान के माध्यम ::

- *अणुव्रत संपोषक* : 5 लाख
- *अणुव्रत संवर्द्धक* : 3 लाख
- *अणुव्रत संरक्षक* : 1 लाख
- *प्रकल्प सौजन्य* : 3 से 11 लाख तक
- *दीर्घा सौजन्य* : 5 से 25 लाख तक
- *पत्रिका विज्ञापन* : 21 हजार से 7 लाख तक

## :: ''अणुदान'' अभियान ::

''अणुदान अभियान'' में अधिक से अधिक लोगों को अणुव्रत आन्दोलन से जोड़ने का प्रयास होगा। इसमें तीन श्रेणियाँ होंगी –

- *समर्थक श्रेणी* : 2 हजार
- *सहयोगी श्रेणी* : 5 हजार
- *सहकार श्रेणी* : 11 हजार

## अणुविभा का महत्त्वपूर्ण प्रकल्प

# स्कूल विद ए डिफरेंस

■ डॉ. राकेश तैलंग ■

वर्तमान समय में अधिकतर स्कूलों में जड़ता और ऊबाऊपन का जो माहौल नजर आता है, उससे निजात दिलाकर ही आज की पीढ़ी को प्रासंगिकता से परिचित कराते हुए उनमें दायित्व बोध की भावना जगायी जा सकती है। अणुव्रत विश्व भारती की बहुचर्चित और नवचिन्तन से युक्त 'स्कूल विद ए डिफरेंस' प्रायोजना स्कूलों की पारंपारिक और कायदे–कानूनों से बंधी सीखने–सिखाने की परिपाटी के मध्य लीक से हटकर रोचकता के माहौल में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण की ओर एक अभिनव कदम है। इसके तहत उपलब्ध सुविधाओं को सुव्यवस्थित कर बच्चों की सक्रिय सहभागिता से स्कूलों को संवेदनशील, पारस्परिक संवाद और वैचारिक धरातल का केन्द्र बनाते हुए उन्हें सामयिक और सकारात्मक समाधान की ओर अग्रसर करना ही वह 'डिफरेंस' है जिसके लिए अणुविभा प्रकृति, प्रक्रिया और परिणाम को लक्ष्य बनाकर कार्य करती है।

वर्ष 2011 में पूर्व राष्ट्रपति तथा शिक्षा मनीषी डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जब राजसमंद आये और अणुविभा के बालोदय प्रकल्प को देखा तो बाल–विकास के इन प्रयासों को देखकर मुग्ध हो गये। उसी समय अणुव्रत अनुशास्ता के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में राजसमंद जिले के 50 विद्यालयों में उन्होंने 'स्कूल विद ए डिफरेंस' को लॉन्च किया था तथा मुक्त कण्ठ से इस योजना की तारीफ भी की थी। सभी विद्यालयों में एक शिक्षक को प्रभारी नियुक्त कर प्रायोजना के सभी क्षेत्रों में कार्य प्रारंभ किया गया जो निरंतर गतिशील है।

'स्कूल विद ए डिफरेंस' का एक प्रबल पक्ष इस योजना के माध्यम से विद्यार्थियों तक शांति और अहिंसा की संस्कृति के संदेश और अणुव्रत दर्शन के प्रयोजन मूलक पक्ष को संप्रेषित करना है। अणुव्रत की अवधारणा है कि नैतिक जीवन शैली बालक के चरित्र और व्यवहार का अंग बने। संयमी जीवन, अनुशासन, मैत्री भाव, प्रामाणिकता, सहअस्तित्व, समन्वय वे मूल तत्व हैं जिन्हें 'स्कूल विद ए डिफरेंस' के अंतर्गत व्यावहारिक कार्य योजनाओं में शामिल किया गया है।

इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण उपक्रम है विद्यालयों में 'बालोदय क्लब' का गठन। क्लब के संरक्षक के रूप में स्थानीय विद्यालय के शिक्षक को इसका प्रभारी बनाकर इस प्रवृत्ति को सुचारु और स्वायत्त रूप में संचालित किया जाता है। क्लब की योजनाओं का लक्ष्य समूह कक्षा 5 से 10 के विद्यार्थी हैं, जिनके सहयोग से नवीन प्रविधियों व प्रवृत्तियों पर आधारित विभिन्न रोचक विधाओं में कार्य और कार्यक्रम संयोजित किये जाते हैं। व्यसन मुक्ति, दंड मुक्त शैक्षिक वातावरण, स्वच्छता व पर्यावरण संवर्द्धन, खेल की आदतों के विकास, बाल संसद जैसी प्रवृत्तियों के लिए नवीन तरीकों को ईजाद करना ही 'स्कूल विद अ डिफरेंस' के महत्वपूर्ण कार्य हैं। संख्यात्मक के स्थान पर गुणात्मक व्यवहारों में परिवर्तन ही इसका उद्देश्य है।

अणुविभा की 'दंड मुक्त विद्यालय' की कल्पना को साकार करने के लिए काउंसलिंग, प्रश्नावली व समस्या समाधान सत्रों के आयोजन, दृश्यात्मक माध्यमों द्वारा शांति, सद्भाव, मानवीय मूल्यों का प्रसारण और सकारात्मक सोच के विकास के लिए अनुसंधान परक टूल्स के प्रयोगों का सहारा लिया जाता है। इसमें आदेशात्मक भाषा का निषेध रहता है। अंततः स्व मूल्यांकन आधारित दंड मुक्त विद्यालय होने की घोषणा ही इसका लक्ष्य है।

'सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा' का शंखनाद अणुविभा के गलियारों से उतरकर बच्चों

तक तभी पहुँच सकेगा, जब किताबों में समाहित पाठ्यक्रम, परीक्षा आदि से कभी–कभी निजात दिलाकर बच्चों को प्रकृति, पर्यावरण तथा अनौपचारिक शिक्षण के मंच पर लाया जाये।

राजसमंद स्थित अणुविभा मुख्यालय का परिसर, अनेक विचारों व भावों के प्रवाचक यहां के विविध कक्ष और बाल संसद तथा शैक्षिक भ्रमण जैसी अनुभव सापेक्ष गतिविधियों से बच्चों का परिचय वे माध्यम हैं जो हमारे इस अभीष्ट की पूर्ति करते हैं। तीन दिवसीय और एक दिवसीय बालोदय शिविर इस प्रायोजना के त्रिआयामीय स्रोत हैं जो बच्चों में उन सभी मूल्यों के विकास का आभामंडल तैयार करते हैं जो व्यक्तित्व निर्माण के लिए आवश्यक हैं।

यही नहीं, स्कूलों की बाल सभाओं, खेल मैदान, प्रतिस्पर्द्धाओं और मूल्य बोध पर आधारित प्रश्नावलियों के माध्यम से नव चिंतन मूलक व्यूह रचना कर अनुभवी शिक्षकों और विशेषज्ञों की दक्षता का लाभ लिया जाता है।

'स्कूल विद ए डिफरेंस' के अंतर्गत 'अहिंसा मूलक जीवन शैली' पर विद्यार्थियों के साथ निरंतर संवाद, स्टोरी टेलिंग, सक्सेस स्टोरीज, बाल अनुभूतियों को चित्रों और पोस्टर्स के माध्यम से उकेरने के कार्यक्रमों ने हमें सदैव उत्साहित बनाये रखा है। स्वच्छता अभियान, सद्भावना रैली, नुक्कड़ नाटक जैसी रचनात्मक प्रवृत्तियों ने स्कूलों में सर्वांगीण बाल विकास के नये आयाम प्रदान किये हैं।

*'स्कूल विद ए डिफरेंस' प्रायोजना के संयोजक डॉ. तैलंग जिला शिक्षा अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त वरिष्ठ शिक्षाविद् हैं एवं दो दशकों से अणुविभा के बालोदय प्रकल्प से जुड़े हैं।*

## 'गांधी और पर्यावरण' पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार

# महात्मा गांधी दूसरी सहस्राब्दी के सूर्य थे : डॉ० सोहनलाल

**जयपुर।** 'महात्मा गांधी का पृथ्वी पर अवतरण दूसरी सहस्राब्दी की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी। वे इस सहस्राब्दी के अकेले सूर्य थे। उन्होंने राजनीति में सत्य एवं अहिंसा का प्रयोग कर यह सिद्ध किया कि अहिंसा और सत्य अपरिमित सैन्य शक्ति को भी परास्त कर सकते हैं।'

उक्त उद्गार महात्मा गांधी के 152वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में लाइट मिलेनियम, शांति फंड (यूएसए) एवं अणुविभा (भारत) के संयुक्त तत्वावधान में 'गांधी और पर्यावरण' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय वेबिनार में मुख्य वक्ता तथा अणुविभा के पूर्व अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष एवं अंतरराष्ट्रीय सलाहकार डॉ. सोहनलाल गांधी ने व्यक्त किये।

डॉ. गांधी ने कहा कि दूरद्रष्टा महात्मा गांधी औद्योगीकरण तथा विज्ञान के आविष्कारों के कारण प्रकृति को हो रहे नुकसान से चिंतित थे तथा उन्होंने प्रकृति के विरुद्ध इस अघोषित युद्ध को तत्काल रोकने का आह्वान किया।

संयोजक बिर्जा अनवर ने बताया कि न्यूयॉर्क में भारतीय काउंसिल जनरल रणधीर जायसवाल ने वेबिनार का उद्घाटन किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी का सादा जीवन एवं उच्च विचार पर आधारित जीवन शैली का आग्रह अप्रत्यक्ष पर्यावरणीय संदेश थे। वेबिनार को ग्लोबल ग्रीन यूनिवर्सिटी के रेक्टर डॉ. टोमस डाफर्न, गांधीवादी चिंतक प्रोफेसर गोल्लनपल्ली प्रसाद, बकुल मटालिया तथा शांति फंड के अध्यक्ष अरविंद वोरा ने भी संबोधित किया। संयुक्त राष्ट्र में कोस्टारिका के राजदूत रोडिन्गो केरेजो ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

# Gandhi's Swaraj and Acharya Tulsi's Anuvrat

■ Dr. Anil Dutta Mishra ■

Swaraj is one of the basic concepts of Gandhi's political philosophy and later on Acharya Tulsi incorporated it in Anuvrat Philosophy. According to Gandhi 'Swaraj is a state of being of individuals and nations. Swaraj, a Sanskrit word, comprising of swa and raj means self-rule. Swaraj is a Vedic term. It frequently appears in ancient shastras and other literature. It indicates the highest spiritual state of mind.Swarajya means 'independent domain' or 'sovereignty'. The ancient Indian political thought laid the concept of Swaraj or self-rule connected with the notion of Swarajya which referred to a particular mode of securing self-determination in a polity comprising several distinct sectors. In modern India the term swaraj was exclusively identified by Dadabhai Naoroji, Bal Gangadhar Tilak and Sri Aurbindo with the goal of national independence. In post independent India Acharya Tulsi used it for achieving real swaraj.

Swaraj which first acquired its political meaning (of independence) through its use in that sense by Naoroji and later through its popularization by Tilak is closely allied with the meaning of tapas or renunciation. Swaraj literally means 'self-rule' and in its original connotation meant autonomy of the moral self (as in the Brhadaranayaka Upanisad) where strict control is exercised over the senses. In other words, it means self-rule and self-restraint, and not freedom from all restraint which 'independence' often means.

In 1908 Tilak was charged with sedition and he was sentenced to six year rigorous imprisonment and was sent to Mandalay prison. In the prison he wrote The Asiatic Home of the Vedas & the Gita Rahasya. He considered that the real message of the Gita was more a call to action as was propagated in its opening parts than renunciation as stated in its later parts. He claimed that the Gita had preached a gospel of incessant activity. A similar interpretation was later given by Aurobindo Ghose. Tilak said that "from begging to open rebellion choose any one according to your ability and do it but remember the supremacy of swadharma". For Tilak Swaraj was the birthright of every Indian. In Tilak's value system swaraj was a moral necessity. Swaraj was not only a right but also the exercise of one's Dharma and one's Karma. He gave a word and spiritual meaning also of Swaraj. Politically, Swaraj meant Home Rule. Morally, it meant the

attainment of the perfection of self-control which is essential for performing one's duty. It was "a life centered in self and dependent upon self." It meant self-control & inner spiritual freedom. But such spiritual freedom was possible only if there was political freedom in India. For Tulsi, Swaraj is Anuvrat. Through Anuvrat he wanted to change individuals, society and nation.

Gandhi had inward as well as outward focus regarding Swaraj. In the Hind Swaraj (1909), he appears as a devastating critic of western civilization. He said: "Our Swaraj is not the copy of England, nor we want a self-government of the type of South Africa, Canada or Australia. I was thinking of Swaraj which was truly Indian, but that Swaraj can be built on the destruction of much of modern civilization." He said that he had pictured a swarajist society. My Swaraj is not dependent upon the British learning the country. A true Swaraj is related to social reform. There should be a movement towards total Swaraj. To Gandhi, in 1947 we did not achieve Swaraj. The end of British rule was not the beginning of Swaraj. Swaraj is self-control, self-regulation & self-restraint. It is both the means as well as the end. It's a kind of struggle within one's self as well as without one's self. Entire Anuvrat philosophy is based on self-control and self-regulation.

In modern civilization there are various obstacles in the attainment of Swaraj. Swaraj should be gained with the help of non-violent & truthful means. It must aim at the creation of the capacity of all the people. Gandhi ji was thinking in terms of capacity, self–restraint & self-denial. Riches are the obstacles in the attainment of Swaraj. Nehru wanted to develop the features of modern civilization society, whereas Gandhi has doubted the modern civilization as a whole. Nehru's concept of Swaraj was parliamentary institution & political independence in which there is fair play of democracy. Swaraj meant freedom from economic wants. The first way to gain eco freedom is to get freedom from imperialism. Capitalism should be abolished. In Gandhian Swaraj, one reaches the stage of Swaraj when we do not need governmental support and become self-sufficient. In order to achieve this type of Swaraj, there are some important requirements. These requirements are Anuvrat principles in thought, action and deed.

As Gandhi states, "It is swaraj when we learn to rule ourselves." The real goal of the freedom struggle was not only to secure political azadi (independence) from Britain, but rather to gain true swaraj (liberation and self-rule). Further Gandhi said, "The Swaraj of my dreams is the poor man's swaraj. The necessities of life should be enjoyed by you in common with those enjoyed by the princes and the moneyed men. But that does not mean that you should have palaces like theirs. They are not necessary for happiness. You or I would be lost in them. But you ought to get all the ordinary amenities of life that a rich man enjoys. I have not the slightest doubt that swaraj is not Poorn Swaraj until these amenities are guaranteed to you under it".

Gandhi's concept of swaraj emerged from what he said in India of My Dreams. It follows: "I shall strive for a constitution, which will release India from all thralldom and patronage, and give her, if need be the right to sin. I shall work for an India, in which the poorest shall feel that it is their country in whose making they have an effective voice; an India in which there shall

be no high class and low class of people; an India in which all communities shall live in perfect harmony. There can be no room in such an India for the curse of untouchability or the curse of the intoxicating drinks and drugs. Women will enjoy the same right as men. Since we shall be at peace with all the rest of the world, neither exploiting, nor being exploited, we should have the smallest army imaginable. All interests not in conflict with the interests of the dumb millions will be scrupulously respected, whether foreign or indigenous. Personally, I hate distinction between foreign and indigenous. This is the India of my dreams. ... I shall be satisfied with nothing less."

Freedom of speech and pen is the foundation of Swaraj. If the foundation stone is in danger, you have to exert the whole of your might in order to defend that single stone.

According to Gandhi, moral and spiritual freedom depends on the effective cultivation of the ancient virtues of truth and non-violence. Moral freedom means the conquest of the demands of the senses and the appetites, for the realization of the higher self. Thus, the self-subsistence of the particular will has to be purified by the devoted adherence to truth and non-violence. Self-indulgence eventually leads to destruction. The conquest of empirical desires alone is the path to immortality.

Noted Gandhian scholar J. Bandhopadhaya beautifully mentioned the essential characteristics of swaraj as follows:

- Swaraj is based on inward Freedom.
- Swaraj belongs to the individual alone.
- Swaraj means Freedom for all or Sarvodaya.
- Swaraj is eternal vigilance on the part of the individual.
- Swaraj involves Equality.
- Swaraj involves Non-violence.

To conclude it can be said that Tilak was one of the dominant political figures in the early years of the 20th century who gave to the people of India the first lesson in the consciousness of the right of Swaraj. He enlightened the population of India into a political recognition of the general will of the nation. At a time when apathy and prostration & frustration were rampant in the country, he appeared as the prophet of Swaraj. He taught the people of the country to hate slavery. Hence, he appeared before the Indian people as a link in the chain of the great Indian heroes, who have championed the cause of liberty against injustice and subjugation.

After Tilak's death Gandhi further enriched the concept of swaraj and popularized it in mass and ultimately, we got independence. But for real swaraj the fight is still going on. The Anuvrat movement is a movement for achieving the real swaraj and the goals of real swaraj will be achieved by following the Anuvrat principles. It is high time for both our policy makers and the people, to turn the torch within so that they may be inspired to adopt the Gandhian way, if not for any other consideration, but for its pragmatic strength to solve our present-day maladies of India. There is a need to reiterate Anuvrat values, and instead of merely garlanding the portraits of Gandhiji, India must translate his ideals into real life and make India free from hunger, poverty and exploitation.

*The writer lives in Ghaziabad and he is a renowned Gandhian Scholar, former Dy. Director of National Gandhi Museum and author of "Reading Gandhi".*

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित

# कदमों के निशां

*आचार्य तुलसी ने कहा था, अणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है। अणुव्रत पुरस्कार की स्थापना के पीछे उद्देश्य है उन लोगों का आदर जो चरित्र निर्माण के लिए कृत संकल्प हैं।*

अणुव्रत के आदर्शों के प्रति जिनके मन में गहरी निष्ठा है। ऐसी विभूतियों की प्रतिष्ठा से समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था बढ़ेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ का कहना था, "सत्य की खोज करना बड़ी बात है और उससे भी बड़ी बात है सत्य को क्रियान्वित करना। अणुव्रत पुरस्कार सत्य को क्रियान्वित करने वालों को मिलता है। अतः मैं कह सकता हूँ कि यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।"

आचार्य महाश्रमण कहते हैं, ''भारत के नागरिकों में नैतिकता के प्रति आस्था पुष्ट बने, अणुव्रत इसी दिशा में कार्यशील है। अणुव्रत पुरस्कार नैतिक मूल्यों के महत्व को प्रतिपादित करने वाला अभिक्रम है।''

वर्ष 1981 में अणुव्रत पुरस्कार की शुरुआत की गई। तब से 26 विभूतियों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। अणुव्रत पुरस्कार के अंतर्गत प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और एक लाख इक्यावन हजार रुपये की राशि प्रदान की जाती है। अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करने वालों की जीवन गाथा से परिचित होना मानवीय मूल्यों से साक्षात करना है। आने वाली पीढ़ियां इनके जीवन से प्रेरणा लेकर स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में कदम बढ़ायें, इसी उद्देश्य से अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित विशिष्ट व्यक्तियों का परिचय यहां क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

## डॉ. राधानाथ रथ

नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए रहे सक्रिय

डॉ. राधानाथ रथ ने 22 वर्ष की अल्पायु में ही सरकारी नौकरी त्याग कर सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। 4 अक्टूबर 1919 को साप्ताहिक 'समाज' पत्र के प्रकाशन प्रबंधक एवं सहायक सम्पादक के रूप में उन्होंने पत्रकारिता जगत में प्रवेश किया। डॉ. रथ सदैव स्वस्थ एवं स्वच्छ पत्रकारिता के हामी रहे। 'समाज' के माध्यम से सच्चाई को प्रकाश में लाने में किसी प्रकार का भय एवं प्रभाव उनकी राह में बाधक नहीं बन सका।

डॉ. राधानाथ रथ का जन्म 6 दिसम्बर 1896 को उड़ीसा के आठगढ़ के राधानाथपुर शाशन नामक गाँव में हुआ था। उन्होंने अपनी शिक्षा की शुरुआत बालासोर के जुबली स्कूल से की जहां उनके चाचा लोकनाथ महापात्र संस्कृत शिक्षक थे। उन्होंने 1916 में रेनशॉ कॉलेजिएट स्कूल कटक से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। ओड़िया, संस्कृत, अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार रहा। वे सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक इतिहास तथा ऐतिहासिक तथ्यों के मर्मज्ञ थे।

डॉ. राधानाथ रथ का जीवन सामाजिक संस्था लोक सेवक मंडल को पूर्ण रूप से समर्पित रहा। वह एक क्लर्क के रूप में सिंहभूम जिले के वन विभाग में शामिल हो गये। उन्होंने 1919 में नौकरी छोड़ दी और गोपबंधु दास के 'सत्यवादी प्रेस' में शामिल हो गये। वर्ष 1928 में गोपबंधु दास की मृत्यु के बाद पंडित लिंगराज मिश्र ने 'समाज' के संपादक के रूप में काम किया। वर्ष 1930 में 'समाज' के दैनिक प्रकाशन की शुरुआत हुई थी। 1946–1952 के दौरान लिंगराज मिश्रा ने ओडिशा के शिक्षा मंत्री के रूप में काम किया। तब राधानाथ रथ 'समाज' के संपादक बने। डॉ. रथ 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल हुए और दो साल तक जेल में रहे।

डॉ. रथ उड़ीसा विधानसभा के लिए पाँच बार निर्वाचित हुए। 1952 से 1961 के बीच उन्होंने राज्य के वित्त मंत्री, कृषि मंत्री के पदों पर रहकर उड़ीसा के विकास में योगदान दिया। ये उड़ीसा यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी के उप डीन भी रहे। भारत सरकार ने 1968 में उन्हें पद्मभूषण सम्मान से अलंकृत किया। वर्ष 1976 में उन्होंने ब्रह्मपुर विश्वविद्यालय से डॉक्टर ऑफ लॉ की डिग्री प्राप्त की।

डॉ. रथ युवावस्था से ही नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए सक्रिय रहे। आचार्य तुलसी की दक्षिण क्षेत्र की अणुव्रत यात्रा के दौरान वे आचार्य श्री के संपर्क में आये तथा अणुव्रत के समर्थक बने। आचार्य तुलसी की दक्षिण यात्रा तथा अणुव्रत दर्शन के प्रचार–प्रसार में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। 10 फरवरी 1989 को छापर में हुए कार्यक्रम में डॉ. रथ को अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

वे हिंद कुष्ठ उन्मूलन समूह, गोपबंधु दरिद्र नारायण सेवा संघ से भी जुड़े रहे। उन्होंने कई कविताएँ, कहानियाँ लिखी हैं। 'मो जेल स्मृति लिपि' उनके प्रसिद्ध कार्यों में से एक है। 11 फरवरी 1998 को कटक में उनका निधन हो गया।

# अतीत के झरोखे से...

*इस स्तम्भ में 'अणुव्रत' पत्रिका के अर्द्धशती पूर्व के अंकों से चयनित सामग्री पुनर्प्रकाशित की जा रही है ताकि अणुव्रत आंदोलन के स्वर्णिम इतिहास को हम वर्तमान से जोड़कर भविष्य की दिशा तलाश सकें। इस अंक में प्रकाशित चार पृष्ठ की यह सामग्री 'अणुव्रत' पाक्षिक के नवम्बर 1971 के अंकों से ली गयी है।*

## पश्चिम की अशांति का कारण

पश्चिमी देशों के रहन-सहन के अंधानुकरण से देश उन्नति नहीं कर सकेगा। धन-सम्पत्ति होने के बावजूद उन देशों के लोग बहुत त्रस्त हैं। हमें अपना रहन-सहन अपनी ही परिस्थितियों और आचार-विचार के अनुरूप बनाना चाहिए, जिसमें मन और मस्तिष्क के विकास तथा सामाजिक प्रगति के साथ ही विज्ञान और तकनीकी प्रगति का भी समावेश हो।

पश्चिमी देश उन्नत जरूर हैं और उन्होंने अनेक प्रकार के शारीरिक रोग दूर करने में बड़ी सफलता पायी है, लेकिन वे देश मानसिक रोगों से पीड़ित रहे हैं। उन देशों में पचास प्रतिशत रोगी मानसिक रोगों के अस्पतालों में दाखिल होते हैं। इसका कारण यह है कि वहां नैतिक मूल्यों की कोई कदर नहीं रही। जिंदगी की रफ्तार तेज हो गयी है। समाज में भली-बुरी हर तरह की बात की पूरी छूट है। इस तरह के रहन-सहन से वहां के लोग मानसिक अशांति के शिकार हुए मालूम होते हैं।

उन देशों में जहां यौन अपराध और हिंसा बढ़ी है, वहां अविवाहित माताओं और पितृहीन शिशुओं की संख्या भी अधिक है। मानसिक अशांति के कारण लोगों में आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ी है। इसलिए भारत जैसे विकासोन्मुख देशों को इन सब विकारों से बचना चाहिए और ऐसे रहन-सहन का अन्धानुकरण नहीं करना चाहिए।

–वी.वी. गिरि

## तादात्म्य व ताटस्थ्य ही जीवन योग है

**आचार्य काका कालेलकर**

''मानसिक आराम किसे कहते हैं? वह कैसे पाया जाये? उसका अभ्यास कैसे हो? उसका सोने के साथ कोई संबंध है क्या?'' यदि मनुष्य का शरीर और चित्त निरोग हों तो दोनों बेहद काम दे सकते हैं। उसमें भी शरीर की अपेक्षा मन की काम करने की शक्ति ज्यादा है। इसलिए जब तक शरीर आड़े न आये तब तक मन तो चाहे जितना काम देते ही रहता है। तो भी मन को समय-समय पर आराम मिलना ही चाहिए। मैंने एक जगह आराम को मन की दवा, स्नान और खुराक कहा है। मन सिर्फ थक जाये तो आराम उसके लिए उत्तम खुराक है। मन यदि थोड़ा-सा मलिन हो जाये (और वह बाज दफा मलिन होता ही है) तो चिंतन के अलावा आराम भी मन के लिए उत्तम स्नान है। आराम मन को स्वच्छ करता है और ताजगी भी देता है। वही मन यदि विकृत हो जाये, गलत रास्ते चला जाये और उसकी आदतें ही उल्टी हो जायें यानी मन यदि रोगी हो जाये तो दूसरी साधना के अलावा मन को आराम भी देना चाहिए। उस समय वह मन की दवा का काम करता है।

सामान्य मनुष्य का अनुभव है कि जागृति की अवस्था में मन कभी ठहरता ही नहीं। मन का स्वभाव ही है विचार या कल्पना करते रहने का। मनुष्य थककर सो जाये तो मन को आराम मिलना ही चाहिए। परंतु वहां भी मन आराम लेने को तैयार नहीं होता। इसलिए मन की प्रवृत्ति के कारण मनुष्य स्वप्न देखता है। इसीलिए साधकों ने नींद के दो विभाग किये हैं, 'स्वप्न' और 'सुषुप्ति'। स्वप्न में मन जागृति की अपेक्षा ज्यादा चेष्टाएँ करता है और वे चेष्टाएँ यदि ज्यादा उत्कटता से हों तो उसका असर शरीर पर भी होता है। उदाहरणार्थ, मनुष्य स्वप्न में घबरा जाये और हक्का-बक्का होकर जाग जाये तो देखेगा कि शरीर काँपता है, नाड़ी तेज चलती है।

# अतीत के झरोखे से...

छोटे बालक जब खराब स्वप्न देखते हैं तब कभी-कभी रो उठते हैं। यों डर अथवा दु:ख दोनों का असर जब स्वप्न के कारण शरीर पर होता है, तब उसे स्वप्नावस्था कहना चाहिए। जब मनुष्य सोया हुआ हो और कोई स्वप्न नहीं देखता, तब उस अवस्था को सुषुप्ति कहते हैं। वही मन के लिए उत्तम आराम और उत्तम खुराक है।सुषुप्त अवस्था ही मन को सबसे उत्तम आराम देती है, पुष्टि देती है। परंतु उस अवस्था में आत्मा की जागृति नहीं रहती। इसलिए सुषुप्ति द्वारा बहुत-सा लाभ होने पर भी आत्मा की उन्नति में वह मददगार नहीं हो सकती।

हाल ही में 'प्रत्याहार, धारणा और समाधि' का विवेचन करते हुए मैंने कहा था कि समाधि आत्मा की खुराक है और गाढ़ निद्रा (सुषुप्ति) शरीर और मन की उत्तम खुराक है। सुषुप्ति में संवित् की जागृति नहीं होती, इसलिए वह अज्ञान दशा है और आत्मा-साधना के लिए मददगार नहीं है। पर यह विषय भी अलग है। उसे यहीं छोड़ दें और आपके सवाल पर आयें। आपने पूछा है 'आराम किसे कहते हैं?' 'मांडुक्य उपनिषद' ने सुषुप्ति अवस्था का वर्णन करते हुए कहा है -

यत्र सुप्तो न कंचन कामं कामयते, न कंचन स्वप्नं पश्यति तत् सुषुप्तम्।

''जिस अवस्था में सोया हुआ मनुष्य न किसी काम-वासना का सेवन करता है, न किसी भोग को भोगने की इच्छा करता है, न कोई स्वप्न देखता है, वह सुषुप्त अवस्था है।'' मन के लिए उत्तम आराम वही है। उससे ज्यादा पौष्टिक आहार मन को मिल नहीं सकता।

परंतु यह तो उत्तम आराम की बात हुई। सामान्यतया मन में विचार, संकल्प और कामनाएं यों ही आते हैं और जाते हैं। उनके लिए हमारा कोई आग्रह न हो, उत्कटता न हो तो वह भी मन के लिए आराम ही है। उसे अंग्रेजी में relaxation कहते हैं। आपका सवाल इसी relaxation के लिए है, ऐसा मैं मानता हूँ।

गहरी नींद के बारे में तो मैंने कहा ही है कि वह उत्तम आराम है। थोड़े सपने आयें और जायें, इस स्थिति में भी मन को काफी आराम मिलता है। 'तंग स्थिति में से मन को खुला कर दिया' इसी का नाम आराम है न? उत्कटता छोड़ दी, किसी प्रकार का आग्रह नहीं रखा तो मन को पर्याप्त आराम मिलता है। इससे हम चाहें तो मन की शक्ति भी बढ़ा सकते हैं।

आपके सवाल के अंतिम हिस्से का जवाब यों मिल गया। अब आपका मुख्य सवाल 'मानसिक आराम कैसे पाया जाये और उसका अभ्यास कैसे किया जाये?' व्यवहार की दृष्टि से ही महत्व का है।

मनुष्य बहुत-सा मानसिक श्रम सहन करता है, वह सचमुच निरर्थक है। हीन महत्त्वाकांक्षाएं रखना, किसी के प्रति द्वेष रखना, वगैरह निरर्थक और अयोग्य वस्तुओं के पीछे मन को मेहनत करनी पड़े, यह तो मनुष्य की खुद आगे होकर बुलायी हुई या ओढ़ी हुई तकलीफ है। इसमें जिसे रस है, उसे आराम की इच्छा ही नहीं होती। जिसे हीन वस्तु में रस है उसे अपने रास्ते जाने देना, ऊबकर, व्याकुल होकर और थककर वापस आये तभी उसे उचित मदद करना, यही सज्जनों का मार्ग है।

'मनुष्य अपनी शक्ति से थोड़ा अधिक श्रम करे, परंतु अत्यधिक नहीं' यह नियम शरीर और मन दोनों पर लागू होता है। मनुष्य इस नियम को स्वीकार करेगा तो वह धीरे-धीरे आगे बढ़ सकेगा, वरना आलस्य और अकर्मण्यता उसे खा डालेगी।

अब मनुष्य जो कुछ भी संकल्प मन में रखता है, चिंतन करता है अथवा कल्पना और योजना को सफल बनाने के लिए कर्ममय पुरुषार्थ शुरू करता है तो उसमें उस संकल्प के साथ तादात्म्य का अभ्यास करना होगा। पुरुषार्थी मनुष्य को यही शोभा देता है। परंतु साथ-साथ मनुष्य को चाहिए कि वह 'तटस्थ भाव' का भी अपने में विकास करे। इसमें तात्त्विक यानी वेदान्ती दृष्टि मदद में आती है। इसे हम अलिप्त भाव भी कह सकते हैं। प्राचीन लोगों ने ऐसे ताटस्थ्य के अभ्यास के लिए स्तोत्र रचकर कंठस्थ किये थे। उनमें एक पंक्ति (पालुपद) बार-बार आती है।

तत: किम्? तत: किम्? तत: किम्?

हम जीते तो क्या और हारे तो भी क्या? आखिर उस चीज की कीमत क्या? मेरी शांति, मेरी प्रसन्नता और मेरे स्वास्थ्य की अपेक्षा दुनिया में कुछ भी ज्यादा महत्त्व का है ही नहीं, इस तरह विचार करते रहना यह एक प्रकार हुआ। इसी तरह अलिप्त होने के लिए अनेक प्रकार के विचार किये जा सकते हैं। मैं तो एक विचार हमेशा करता आया हूँ।

''यह सृष्टि सर्व-समर्थ भगवान की कृति है। जब तक भगवान है, वह अनाथ नहीं होगी। भगवान मरा नहीं है, न सोया हुआ है, गैरहाजिर भी नहीं है और गाफिल भी नहीं है। तब उसकी सारी दुनिया की चिंता मेरे सिर क्यों कर होनी चाहिए? दुनिया का मैं एक बाशिंदा हूँ, एक अंग हूँ। इसलिए हर चीज का चिंतन तो मुझे करना ही होगा। परंतु चिंतन अलग वस्तु है और

चिंता बिल्कुल अलग वस्तु है। जो नास्तिक होगा वही चिंता करेगा। बाकी हमारे हिस्से में जो कर्तव्य आया हो उसे बगैर आलस्य के और बगैर गफलत के पूरा करने के लिए चिंतन की और पुरुषार्थ की हम पराकाष्ठा करें और बस, फिर शेष सब बातें भगवान के चरणों में अर्पण कर मुक्त और शांत हो जायें।

इसी को मैं आस्तिकता कहता हूँ। ईश्वर अगर सचमुच में है तो मुझे चिंता करने की जरूरत ही नहीं। 'चिंतन और पुरुषार्थ' यह मेरे हिस्से में आया हुआ मेरा धर्म है। इसी को मैं स्वधर्म कहता हूँ। मनुष्य में यदि सच्ची ईश्वर-निष्ठा हो तो वह स्वयं पुरुषार्थ करेगा और बाकी की तमाम चिंता उसने छोड़ दी, इसलिए उसके मन को आराम ही आराम है।

सच्ची आस्तिकता में से निश्चिंत तटस्थता, यही मानसिक आराम विकसित करने की उत्तम कला अथवा साधना है। ऊपर बताये 'तादात्म्य' के साथ 'ताटस्थ्य' सिद्ध हो जाये तो वही उत्तम-से-उत्तम जीवन कला है। उसी को जीवन योग कह सकते हैं। मानसिक आराम पाने का इलाज भी वही है।

# जीवन है तो अध्यात्म है, अध्यात्म है तो जीवन है

**विमला ठकार**

अध्यात्म अन्तर यात्रा है। अपने भीतर जीना है, अपनी उपलब्धि में जीना है, आत्म-प्रत्यय के आलोक में जीना है। अध्यात्म है आत्म निर्भरता। अध्यात्म नितांत व्यक्तिगत विषय है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने लिए खोज करना है। जैसे दूसरे के लिए खाया नहीं जा सकता, वैसे ही दूसरे के लिए सत्य को पाया नहीं जा सकता। अध्यात्म व्यक्तियों के परस्पर सहवास में से सहज उपलब्ध होने वाली ऐसी वस्तु है जिसका प्रसारण नहीं हो सकता। वहां सौदा, संचय, संग्रह नहीं, किसी का शोषण नहीं।

अध्यात्म में न कुछ प्राप्त करना है और न कुछ त्याग करना है। अध्यात्म तो करने का विषय नहीं, न करने का विषय नहीं, यह होने का विषय है। करने, न करने, प्राप्त करने और छोड़ने की भाषा संसार की है, अध्यात्म की नहीं। इसे अध्यात्म के क्षेत्र में ले जाने वालों ने बड़ा नुकसान किया है।

किसी न किसी मानसिक या बौद्धिक क्रिया के द्वारा साक्षात्कार होगा, मुक्ति का हम प्रत्यय करेंगे, यह भ्रम इसलिए है कि हमने नहीं पहचाना है कि मानसिक क्रिया यांत्रिक क्रिया है। हमने अध्यात्म को भी अपने मन का एक कर्म बना लिया है। जहां तक क्रिया की संभावना है, जब तक अनुभूति लेने की वासना है, तब तक अध्यात्म नहीं है।

आत्मा की एकता और अविभाज्यता को पहचानना और उस एकता, अविभाज्यता या अखण्डता में जीना-यह अध्यात्म का मर्म है। आध्यात्मिक जीवन अलग और भौतिक जीवन अलग-ऐसा नहीं है। जीवन है तो अध्यात्म है, अध्यात्म है तो जीवन है। जीवन की समग्रता को पहचानना ही जीवन का अध्यात्मीकरण है। श्वासोच्छवास से लेकर जो भी कर्म होते हैं, वे समग्रता के भाव के आलोक में हों, यही अध्यात्म है।

शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक विकास से परे अध्यात्म के क्षेत्र में जाना ही अपनी समस्त संभावनाओं को खिलाना है। उर्जा की समग्रता या पूर्णता को प्रकट होने का अवसर देना अध्यात्म है। अध्यात्म, आत्म साक्षात्कार जैसी सरल, सुलभ चीज है ही नहीं। उसे हम लोगों ने निगूढ़ता में, और अतीन्द्रिय शक्तियों के चमत्कार में गाड़ दिया है, उसके साथ कुछ गूढ़ अनुभूतियों का रहस्य जोड़ दिया है, रहस्यवाद की सृष्टि की है।

अतीन्द्रिय शक्तियों का अध्यात्म से कोई भी संबंध नहीं है। उनका उपयोग जिसे करना हो, वह भले ही करे, लेकिन उन्हें आध्यात्मिकता न मानें। अतीन्द्रिय अनुभूतियों का अर्थ है आपके अचेतन मन में जो पड़ा हुआ है, उसका साक्षात्कार। वह कोई बहुत कठिन काम नहीं है। उसमें कहां का अध्यात्म है?

अध्यात्म है-जीवन को किसी भी पद्धति में न बाँधने का साहस। अध्यात्म है-जीवन की गति में, उसकी लय में अपने अहंकार का विलय करके उसी गति में विलीन हो जाना, समरस हो जाना-बल्कि जीवन की गति बन जाना।

# आंदोलन समाचार

## अध्यात्म का उत्तरोत्तर विकास अपेक्षित

## अणुव्रत दिवस का भारत व्यापी आयोजन सम्पन्न

21 अक्टूबर को अ.भा. अणुव्रत समिति के विशेष परिपत्रानुसार सारे भारत में अणुव्रत दिवस के महत्वपूर्ण आयोजन सम्पन्न हुए। इस अवसर पर जहां अणुव्रत की सार्वजनिक तथा आध्यात्मिक पृष्ठभूमि को प्रकाशित-प्रचारित करने वाले भव्य समारोह सम्पन्न हुए, वहीं हजारों हजार व्यक्तियों ने अपने जीवन में पवित्र प्रेरणा भी प्राप्त की। निर्धारित आचार संहिता का परिपालन किया तथा विशिष्ट समारोह के अतिरिक्त प्रभात जागरिका के माध्यम से वातावरण को एक विशेष संदेश से आप्लावित भी किया। यह अणुव्रत दिवस अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी का 58वां जन्मदिवस भी था और इस दिवस पर न केवल उनके श्रद्धाशील भक्तों द्वारा अपितु उनके महान् मानवीय मिशन के प्रति आस्था रखने वाले अनेकानेक युग-व्यक्तित्वों द्वारा भी उनके दिव्य जीवन तथा कर्तृत्व के प्रति शुभकामनाएं प्रकट की गयीं।

लाडनूं, जहां आचार्य श्री विराजमान थे तथा जो उनकी जन्मभूमि भी है-में आपके जन्म स्थान पर शंखध्वनि कर तथा बहिनों ने मंगल गीत गाकर मंगलमय दिवस का शुभारंभ किया। तत्पश्चात् विभिन्न स्थानीय संस्थाओं ने समवेत रूप में प्रभात जागरिका निकाली। इस दिवस पर आयोजित सभा में आचार्य श्री ने कहा-आज का दिन मैं भी मेरे लिए परम प्रेरणाप्रद मानता हूँ। मैंने अपने जन्म दिवस को इसीलिए अणुव्रत दिवस के रूप में मना लिया। मेरी प्रशस्ति न होकर मानवता की प्रशस्ति होनी चाहिए। मैं इस दिवस पर तीन बातों की साधना के लिए विशेष प्रेरणा देना चाहता हूँ- पहली समता, दूसरी सहिष्णुता, तीसरी एकाग्रता। मैं निष्काम काम करने की प्रवृत्ति की ओर विशेष इंगित करना चाहता हूँ। अगर हमारे कामों में भी कामना रही तो फिर केवल कामना रह जायेगी, काम गौण हो जायेगा।

प्रबुद्ध दार्शनिक मुनिश्री नथमल जी ने कहा-आचार्य श्री के इस संदेश से कि अध्यात्म का उत्तरोत्तर अधिक से अधिक विकास हो तो बाहरी चकाचौंध स्वत: कम हो जायेगी। जिस व्यक्ति में भीतर की शक्ति अधिक होती है, उसमें बाहर का प्रदर्शन कम होता है।जिसके भीतर शून्यता होती है, वहां बाहर का प्रदर्शन ज्यादा हो जाता है। ये बाहरी प्रदर्शन स्थायी नहीं होते।

बम्बई में मुनिश्री सुमेरमल 'सुमन' के सान्निध्य में अणुव्रत सभागार में आचार्य श्री तुलसी का जन्मदिन अणुव्रत दिवस के रूप में आयोजित किया गया। महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष श्री टी.एस. भारदे ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा, ''आचार्य श्री तुलसी वर्तमान युग के समर्थ क्रांतिकारी युगपुरुष हैं, जिन्होंने धर्म को वैयक्तिक साधना ही न मानकर समष्टिगत साधना का रूप दिया और बताया कि आचार धर्म है, उपचार धर्म नहीं। आचार्य तुलसी ने अणुव्रतों को आंदोलन का रूप देकर व्यक्ति से समष्टिगत आचार-धर्म का तेजस्वी और क्रांतिकारी रूप दुनिया के समक्ष रखा है।''

मुख्य वक्ता बम्बई के शेरिफ एवं भारत जैन महामण्डल के अध्यक्ष श्री शादीलाल जैन ने आचार्यश्री के प्रति भावभीने उद्गार व्यक्त किये। जयपुर, उदयपुर, बेंगलुरू, श्रीडूंगरगढ़ समेत अन्य स्थानों पर भी अणुव्रत दिवस मनाया गया।

## राष्ट्रीय एकता के साथ-साथ मानवीय एकता जरूरी

''मेरा लक्ष्य मानव-मानव में मानवता को जाग्रत करने का है। राष्ट्रीय एकता के साथ-साथ मानवीय एकता बहुत जरूरी है। सारा संसार हमारा कुटुम्ब है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' ही हमारा पवित्र सिद्धांत है। राम, कृष्ण, बुद्ध और महावीर ने हमें यही पाठ पढ़ाया है। मेरा विचार है कि राष्ट्रीयता को भी छोड़ा नहीं जा सकता, पर आगे मानवता की एकता का प्रयास जरूर होना चाहिए।'' उक्त उद्बोधन आचार्य श्री ने 24 अक्तूबर को ओसवाल पंचायत भवन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय सम्मेलन में अपने प्रवचन के मध्य दिया। इस सम्मेलन में सुजानगढ़, बीदासर, जसवंतगढ़, डीडवाना, खाटू, लाडनूं के स्वयंसेवक सम्मिलित थे। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत प्रचारक श्री ब्रह्मदेव ने कहा-''हमारे देश की एकता में संतों, महंतों, आचार्यों का विशेष योगदान रहा है। आचार्य श्री तुलसी उसी शृंखला की एक कड़ी हैं।''

अगले अंक का विषय

# परिचर्चा

## जायके से बढ़कर सेहत...

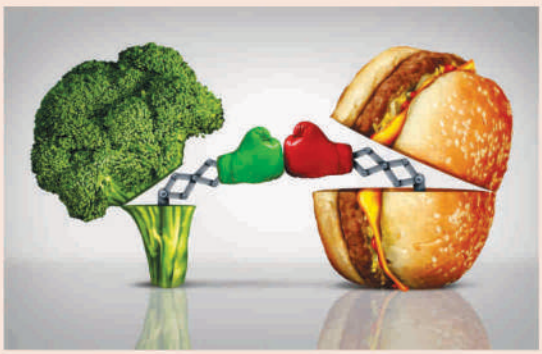

लोग अब सेहत को जायके से ज्यादा तरजीह दे रहे हैं। ब्रिटेन में पिछले एक दशक के दौरान लगभग 20 फीसदी लोगों ने मांसाहार की थाली को किनारे कर दिया। इसका कारण है नॉनवेज खाने वाले लोगों में कैंसर और डायबिटीज टाइप टू के बढ़ते मामले। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के एक शोध के अनुसार लोगों ने बेहतर स्वास्थ्य के लिए नॉनवेज खाना या तो कम कर दिया है या फिर बहुत कम कर दिया है। रेड मीट की खपत में काफी कमी दर्ज की गयी है। शोध के अनुसार लोगों के खान–पान में आये इस बदलाव के कारण पर्यावरण में कार्बन उत्सर्जन में भी कमी आयेगी। क्योंकि रेड मीट के लिए मवेशियों के पालन में काफी कार्बन उत्सर्जन होता है। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के शोध में पाया गया कि 2008–2009 के दौरान जहां ब्रिटेन में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 103 ग्राम रेडमीट की खपत थी, वह 2018–19 में 23 ग्राम प्रति व्यक्ति प्रतिदिन ही रह गयी है।

विभिन्न कारणों से भारत में भी कैंसर और डायबिटीज के मामलों में बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। ऐसे में क्या हमारे देश में भी खाने–पाने की आदतों पर पुनर्विचार करने का समय नहीं आ गया है?

*इस गंभीर मुद्दे पर सुधी पाठक अपने विचार **15 नवम्बर** तक अधिकतम 200 शब्दों में **9116634512** पर व्हाट्सएप कर सकते हैं। चयनित विचार **दिसम्बर अंक** में प्रकाशित किये जायेंगे।* —सं.

## प्राणियों की हत्या की यह कैसी प्रथा

*गत अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदुओं को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है –*

### हृदय परिवर्तन से ही बदलेगी सूरत

किसी प्राणी की बलि देना या किसी कार्य को सिद्ध करने के लिए किसी और के प्राण लेना, यह हमारी दयनीय मानसिक स्थिति का परिचायक है। इन सबसे निपटने के लिए अपनी मानसिकता को बदलना अत्यंत आवश्यक है। जहां से बुराई या गलत धारणाएं प्रारंभ होती हैं, उन्हें समाप्त करने का रास्ता भी वहीं से मिलता है। डेनमार्क में जिस तरह डॉल्फिन को मारने की परंपरा शुरू हुई, उसी से समाधान भी स्वतः प्राप्त होगा। दुनिया में जितनी समस्याएं हैं, उतने ही समाधान भी सदैव उपस्थित रहते हैं। जो मन गलत अवधारणाओं को प्रारंभ करता है, वैसे ही सही अवधारणाओं को स्वीकार करना भी मन का ही कार्य है। जब व्यक्ति का मन स्वस्थ होगा तो समाज की संरचना भी स्वस्थ होगी। इसलिए सबसे पहले हृदय परिवर्तन किया जाना चाहिए जिससे इन प्रथाओं का सही विश्लेषण करके उनको बदला जा सके।

—शर्मिला भंसाली, जोधपुर

### अहिंसा की भावना का विकास हो

आज विश्व के कई देशों में ऐसी कुप्रथाएं मौजूद हैं जिनके चलते न केवल जीव हिंसा होती है अपितु पर्यावरण को भी भारी नुकसान पहुँचता है। कहीं मनोरंजन तो कहीं जीभ के स्वाद के चलते जीव–हिंसा को न्यायसंगत नहीं ठहराया जा सकता। हालांकि देवी–देवताओं को खुश करने के नाम पर जीवों की बलि चढ़ाने की कुप्रथा कम हो रही है। मनोरंजन के लिए पशुओं को दौड़ाना, मुर्गा को आपस में लड़ाना, जानवर पर अधिक वजन लादने जैसी गतिविधियों पर रोक लगनी चाहिए। जो व्यवहार हमें पसंद नहीं, वह व्यवहार दूसरे के साथ नहीं करना चाहिए। अहिंसा की भावना विकसित करके व जागरूकता के द्वारा इस समस्या का समाधान निकाला जा सकता है। जिस कुप्रथा से जीव हिंसा होती हो, अहिंसा के भाव जाग्रत कर उस कुप्रथा से निजात पायी जा सकती है।

—राजेंद्र प्रसाद जोशी, मेड़ता सिटी

## कुप्रथाओं पर रोक के लिए चिंतन–मनन आवश्यक

जानवरों को या किसी भी प्राणी को मारना मनुष्य का स्वभाव नहीं होना चाहिए। सभी जीव की आत्मा एक समान ही होती है। बहुत से देशों में किसी न किसी खास दिन सामूहिक रूप से जानवरों का कत्ल किया जाता है, उससे उन जानवरों का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है, जिससे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ जाता है। इसे कैसे रोक सकते हैं, इस पर चिंतन–मनन की आवश्यकता है। पशुसंहार का जो दिन निर्धारित होता है, उस दिन आम जनता के लिए जगह–जगह सार्वजनिक एंटरटेनमेंट का कार्यक्रम रखा जाना चाहिए वह भी निःशुल्क, जिससे जनता का ध्यान पशुओं के संहार से हट जाये। पशु–पक्षियों से प्राप्त होने वाला मूत्र, गोबर आदि से बनने वाली वस्तुओं के उपयोग से होने वाले लाभ के बारे में लोगों को बताना चाहिए। चमड़े से वस्तु किस क्रूरता से बनायी जाती है, उसके बारे में लोगों को बताया जाना चाहिए, जिससे उस प्राणी के प्रति करुणा का भाव जागृत हो सके।

–राकेश बडाला, मुंबई

## अहिंसा के प्रचार–प्रसार से ही बनेगी बात

कभी परंपराओं के नाम पर, कभी उत्सव या पर्व के नाम पर, अपनी शानो–शौकत या शौक के लिए तो कभी अपनी अभिलाषा की पूर्ति के लिए भारत ही नहीं, अपितु विश्व के प्रत्येक देश में पशु–पक्षियों की बलि दी जाती है। कैसी विडम्बना है कि पशु –पक्षियों का वध धार्मिक अनुष्ठान के अंतर्गत किया जाता है। जब तक मनुष्य की समझ में यह नहीं आयेगा, तब तक यह पशुओं का संहार रोक पाना कठिन है। जैन धर्म दुनिया में एकमात्र ऐसा विलक्षण धर्म है जो छोटे से छोटे प्राणी की हत्या को भी घोर पाप मानता है। इसलिए अहिंसा के मार्ग का प्रचार–प्रसार ही मनुष्य के दिलों में परिवर्तन ला सकता है और इस क्रूर कर्म पर कुछ लगाम लग सकती है। श्रीमती मेनका गांधी भी इस दिशा में प्रशंसनीय व अनुकरणीय कार्य कर रही हैं।

–सुभाष जैन, टोहाना

## अपनाना होगा जीव समरसता का सिद्धांत

संसार में जब तक जीव – जीव की समरसता का सिद्धांत लागू नहीं किया जायेगा और मानव को सर्वोपरि तथा अन्य जीवों गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा, ऊंट, भेड़ एवं भांति – भांति के पक्षियों एवं समुद्री जीवों आदि को मानव के निहितार्थ समझने की परंपरा का निर्वाह किया जाता रहेगा, तब तक जीव हत्या की छद्म परंपराएं किसी न किसी रूप में विद्यमान रहेंगी। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम जीव–जीव समरसता के सिद्धांत का व्यापक प्रचार–प्रसार देश –काल एवं परिस्थितिकीय के मापदंडों को ध्यान में रखकर करें। जहां तक हो सके, इस सिद्धांत को आत्मसात करने के लिए लोगों को भी प्रेरित करें। तभी इन निरीह जीवों की हत्या को रोका जा सकेगा और समूचे विश्व में अहिंसक सिद्धांतों के प्रतिपादन को प्रोत्साहित किया जा सकेगा।

–वसीम अहमद नगरामी, लखनऊ

## सम्यक् विश्लेषण और विवेचन जरूरी

परंपराएं समय के साथ अनुप्रेक्षा की मांग करती हैं। इसका अनुशीलन समय–समय पर वांछनीय है। ऐसा न करने से व्यक्ति की भाव धारा कलुषित हो जाती है और परंपरा रूढ़ि में बदल जाती है। परंपरा को पोषण देने के पीछे चिंतन सम्यक् और अनाग्रही होना चाहिए। परंपरा वही काम्य हो सकती है जो धर्म का पोषण करे और अधर्म का प्रतिरोध। जो अहिंसा को पुष्ट बनाने वाली हो और हिंसा को किसी भी परिस्थिति में संपुष्ट न करती हो। इसके पीछे चीजों और घटनाओं का सम्यक् दृष्टि से विश्लेषण और विवेचन जरूरी है। महज किसी परंपरा को ढोते जाना समाज में जड़ता का सूचक है। यदि ऐसी कोई परंपरा हिंसा और क्रूरता का दृश्य उपस्थित करती हो तो उसका उन्मूलन जरूरी हो जाता है। डेनमार्क में सामूहिक तौर पर डॉल्फिन का संहार करने की कुप्रथा के बारे में पढ़कर मन दहल गया। अब समय आ गया है जब परंपरा के नाम पर जघन्य अपराधों पर जनमत–निर्माण कर समय रहते इनका उन्मूलन किया जाये।

–विजयसिंह नाहटा, जयपुर

## इंसान का हृदय परिवर्तन हो

पिछले दिनों डेनमार्क में एक प्रथा के नाम पर 1400 से ज्यादा डॉल्फिन को मौत के घाट उतार दिया गया। यह निर्दयता, निर्ममता, क्रूरता की पराकाष्ठा थी। आज संसार में जीवों की प्रजातियां तेजी के साथ विलुप्त हो रही हैं। जैविक चक्र गड़बड़ा रहा है जिसके चलते पृथ्वी पर अनेक प्रकार की उथल–पुथल हो रही हैं। आज मांस, खाल और हड्डियों के लिए जीव–जंतुओं का जिस तरह सफाया हो रहा है, वैसा शायद ही पहले कभी हुआ हो। मनुष्य अपने शौक और स्वार्थ के लिए पर्यावरण को बिगाड़ने में तनिक भी संकोच अनुभव नहीं करता।

विश्व के सभी देशों को ऐसी जानलेवा प्रथाओं पर अविलंब रोक लगानी चाहिए। इंसान का हृदय परिवर्तन हो। उसमें संवेदनहीनता खत्म हो और संवेदनशीलता, दया, प्रेम, करुणा के भाव का संचार हो। सभी भगवान महावीर की 'जीओ और जीने दो' की नीति का अनुसरण करें।

–अशोक बैद 'बाडेलावाला', राजलदेसर, जयपुर

# अणुव्रत लेखक मंच

संयोजक श्री ललित गर्ग
एवं सह संयोजक
श्री रजनीकांत शुक्ल
की रिपोर्ट

***अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण*** *ने कहा कि*

*"आदमी के जीवन में संकल्प की शक्ति का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। अणुव्रत में संकल्प की शक्ति निहित है। अणुव्रत को अच्छी तरह स्वीकार करने का अर्थ है त्याग की, संयम की संकल्प शक्ति से युक्त होना।"*

❖ आचार्य श्री 17–18 अक्टूबर को भीलवाड़ा में आयोजित अणुव्रत लेखक संगोष्ठी के दूसरे दिन अणुव्रत लेखक पुरस्कार समारोह में आशीर्वचन दे रहे थे। उन्होंने कहा कि परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने अणुव्रत, अहिंसा, नैतिकता के प्रचार–प्रसार का प्रयास किया। अणुव्रत आंदोलन के अनेक आयाम हैं। उनमें एक आयाम है लेखक समुदाय। अणुव्रत लेखक संगोष्ठी उसका एक महत्वपूर्ण उपक्रम है।

अनेक लेखकों को इस अणुव्रत लेखक मंच के माध्यम से अणुव्रत से परिचित होने का, अणुव्रत को आत्मसात करने का अवसर मिल जाता है। लेखक के पास शब्द शक्ति होती है। शब्द अपने आप में जड़ होता है, मगर उस जड़ तत्व में भी अर्थ रूपी आत्मा विराजमान होती है। शब्द एक शरीर है, अर्थ उसकी आत्मा है। शब्द अर्थ का संवाहक होता है। लेखक उन शब्दों में छिपे अर्थ के माध्यम से पाठकों तक पहुँचने का प्रयास करता है। लेखक का अपने भावों को निर्भीकता के साथ प्रस्तुत करने का तरीका होता है, जिससे वह जनमानस को प्रभावित करने में समर्थ होता है। आचार्य श्री ने अणुव्रत लेखक पुरस्कार की प्रासंगिकता का उल्लेख करते हुए कहा कि इससे जहां पुरस्कृत व्यक्ति को समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त होता है, वहीं दूसरे लोगों को भी इससे प्रेरणा मिलती है कि हम भी अच्छे काम करेंगे तो आगे बढ़ सकते हैं, पुरस्कृत हो सकते हैं। अणुव्रत लेखक संगोष्ठी से आपस में एक–दूसरे से प्रेरणा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हो सकता है। आचार्य श्री ने डॉ. वेदप्रताप वैदिक और श्री फारूक आफरीदी को पुरस्कृत होने पर अपनी मंगलकामनाएं प्रदान कीं।

❖ इस अवसर पर अणुविभा अध्यक्ष श्री संचय जैन ने कहा कि आज हम गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं कि अणुव्रत अनुशास्ता के पावन सान्निध्य में यह पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित हो रहा है। अणुव्रत आंदोलन के प्रति आपकी प्रेरणा हर अणुव्रत कार्यकर्ता में एक उत्साह का संचार करती है। श्री जैन ने कहा कि किसी भी आंदोलन को प्रभावी बनाने में लेखकों की प्रभावी भूमिका होती है। अन्य आंदोलनों से जुड़ने के लिए व्यक्ति को कई बार सोचना पड़ता है, वहीं अणुव्रत आंदोलन–अणुव्रत दर्शन से जुड़ने के पहले ऊहापोह की ऐसी स्थिति उत्पन्न नहीं होती क्योंकि अणुव्रत का दर्शन सर्वस्वीकार्य है। अणुव्रत आंदोलन सह अस्तित्व की बात करता है, समन्वय की

## डॉ. वेदप्रताप वैदिक व फारूक आफरीदी अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित

बात करता है, अहिंसा और शांति की बात करता है, मानवीय मूल्यों और नैतिकता को समाज में सम्पुष्ट करने की बात करता है। उन्होंने कहा कि अणुव्रत लेखक मंच के माध्यम से अनेक प्रबुद्ध लेखक समय–समय पर अणुव्रत आंदोलन से जुड़ते रहे हैं। श्री जैनेन्द्र कुमार भी ऐसी ही विभूति थे, जिन्होंने अपनी प्रखर लेखनी के माध्यम से अणुव्रत आंदोलन को एक नयी दिशा प्रदान की थी। श्री यशपाल जैन ने भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। जब–जब ऐसी विभूतियां अणुव्रत आंदोलन से जुड़ी हैं, आंदोलन आगे बढ़ा है। मुझे विश्वास है कि आज आचार्य श्री के सान्निध्य में एक नयी शुरुआत हुई है, जो इस अभियान को आगे बढ़ाने में मददगार साबित होगी।

- श्री संचय जैन ने अणुव्रत लेखक पुरस्कार से पुरस्कृत दोनों विभूतियों को अपनी ओर से तथा अणुविभा की ओर से शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इन्होंने अणुव्रत दर्शन को न केवल समझा है, बल्कि अपने जीवन में उतारा है। श्री जैन ने आशा जतायी कि इनके मार्गदर्शन में हम अणुव्रत आंदोलन को गति दे पायेंगे।
- इस अवसर पर **वर्ष 2021 का अणुव्रत लेखक पुरस्कार अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विशेषज्ञ प्रसिद्ध पत्रकार डॉ. वेदप्रताप वैदिक को व वर्ष 2020 का अणुव्रत लेखक पुरस्कार प्रसिद्ध साहित्यकार श्री फारूक आफरीदी** को प्रदान किया गया।
- अपने स्वीकृति भाषण में डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने कहा कि अणुव्रत के सिद्धांत मनुष्य मात्र के सिद्धांत हैं। अराकान से लेकर खुरासान तक, म्यांमार से लेकर ईरान तक और तिब्बत से लेकर मालदीव तक का इलाका हमारे आर्यावर्त का क्षेत्र है। यूरोपीय यूनियन की तरह हम आर्यावर्त के सोलह देशों को आपस में जोड़कर निशस्त्रीकरण की दिशा में प्रयास कर सकते हैं, इनका एक साझा बाजार, साझा संसद व एक साझा मुद्रा होगी और यह काम अणुव्रत के माध्यम से बखूबी किया जा सकता है।
- राजस्थान के मुख्यमंत्री के विशेष कार्याधिकारी श्री फारुक आफरीदी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आधुनिक युग तकनीक का युग है और अणुव्रत के सिद्धान्तों को छोटे–छोटे वीडियो क्लिप के माध्यम से नयी पीढ़ी तक आसानी से पहुँचाया जा सकता है। श्री आफरीदी ने अणुव्रत के प्रसार में अपने समर्पित योगदान की भावना व्यक्त की।

- अणुविभा अध्यक्ष श्री संचय जैन ने दोनों पुरस्कृत लेखकों को अंगवस्त्र और स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। अणुविभा उपाध्यक्ष द्वय श्री राजेश सुराणा एवं श्री अशोक डूंगरवाल ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। अणुविभा के ट्रस्टी श्री पंचशील जैन व श्री गणेश कच्छारा ने पुरस्कार राशि 51 हजार रुपये के चेक प्रदान किये। श्री अभिषेक कोठारी ने बैज और भीलवाड़ा अणुव्रत समिति की अध्यक्ष श्रीमती आनंदबाला व मंत्री श्री राजेश चोरडिया ने साहित्य भेंट कर दोनों विशिष्ट महानुभावों का सम्मान किया। भीलवाड़ा चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री प्रकाश सुतरिया और मंत्री श्री निर्मल गोखरू ने समिति की तरफ से स्मृति चिह्न भेंट किया। समिति के उपाध्यक्ष लक्ष्मीलाल झाबक, सोनल मारू, शिल्पा चोरडिया, अनिता हिरण, सरोज मेहता, किरण ओस्तवाल, अशोक बापना भी इस अवसर पर उपस्थित थे।
- इससे पहले 17 अक्टूबर को द्विदिवसीय **राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक संगोष्ठी** प्रारंभ हुई। देश के अनेक राज्यों से आये साहित्यकारों ने संगोष्ठी के पहले सत्र में मुनिश्री उदितकुमार जी, मुनिश्री मनन कुमार जी के सान्निध्य में व प्रसिद्ध पत्रकार डॉ. वेदप्रताप वैदिक की अध्यक्षता में **'स्वस्थ समाज रचना में लेखकों की भूमिका'** विषय पर चर्चा की।
- अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री संचय जैन ने स्वागत करते हुए कहा कि जीवन में उतरे वही धर्म है। अणुव्रत इसी धर्म में विश्वास करता है जो व्यक्ति के विचार और आचार को शुद्ध बना सके। संगोष्ठी का संचालन करते हुए अणुव्रत लेखक मंच के संयोजक श्री ललित गर्ग ने कहा कि मोबाइल और टीवी के कारण समाज के पारिवारिक जीवन में बिखराव व टूटन आयी है, जिसे हम रचनाकारों को अपने लेखन से जोड़ना होगा।
- आकाशवाणी के महानिदेशक रहे साहित्यकार श्री लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने कहा कि वर्तमान में महिला अपराध शीर्ष पर है। ऐसे में लेखकों तथा कला और साहित्य से जुड़े लोगों के सामने चुनौती है कि कैसे युवाओं और बच्चों तक इस संदेश को पहुँचायें।
- प्रसिद्ध 'साधना पथ' पत्रिका के संपादक श्री शशिकान्त सदैव ने कहा कि लेखक के लिए बेहतर है कि वह अच्छा पाठक भी हो। वह शोध, मनन और चिंतन करने के बाद ही लिखे। प्रसिद्ध गांधीवादी लेखक डॉ. अनिलदत्त मिश्रा ने कहा कि आचार्य तुलसी व अणुव्रत एक–दूसरे के पर्याय हैं। साहित्य अकादेमी की पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य' के संपादक रहे श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने कहा कि स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए लेखक को एक अच्छे पाठक के साथ–साथ एक योग्य निरीक्षक व महाश्वेता देवी की तरह सक्रिय कार्यकर्ता भी होना चाहिए। उसका लेखन हाशिये के लोगों तक पहुँचे।
- देहरादून से आए प्रसिद्ध गीतकार डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र ने संगोष्ठी को सरस बनाते हुए 'मोर के पाँव ही न देख तू मोर के पंख भी तो देख' गीत प्रस्तुत कर लेखकों को कमियाँ के साथ–साथ सकारात्मक दृष्टि रखने का आह्वान किया।
- अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने रचनाकारों से अपने कार्य से विचार बदलने की बात कही। उन्होंने कहा कि ठीक से तर्क करके हमें बुराइयों के बारे में बताना है ताकि लोग अच्छाइयों की ओर आकर्षित

हो सकें। अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार ने बताया कि हम रचनाकारों को अपने आसपास के परिवेश को स्वस्थ रखना है ताकि समष्टि में विनय, समर्पण व स्नेह के भाव जगें।

- मुनिश्री उदितकुमार ने दिशा बोध देते हुए कहा कि आज समाज में असहिष्णुता के कारण बहुत से संकट उत्पन्न हो गये हैं। लेखकों को चाहिए कि ऐसा लिखें ताकि समाज में संवेदना, सकारात्मकता और सम्यक् समझ का भाव बना रहे।
- आभार प्रदर्शित करते हुए अणुव्रत लेखक मंच के सह संयोजक बाल साहित्यकार श्री रजनीकान्त शुक्ल ने कहा कि रचनाकार के व्यक्तित्व और कृतित्व में समानता रहे। हम रचनाकारों को अपनी कलम से अच्छे विचारों के साथ–साथ अच्छे आचरण को भी समाज के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए।
- **'मूल्यों का संकट और लेखक का दायित्व'** विषयक **द्वितीय सत्र** साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ जिसमें साध्वी विश्रुतविभाजी व साध्वी कल्पलता जी की प्रेरणा व मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ। डॉ. वेदप्रताप वैदिक व श्री फारूक आफरीदी के वक्तव्य भी हुए। साध्वीप्रमुखा श्री ने कहा कि देश में दो वर्ग ऐसे हैं जिन पर बड़ी जिम्मेदारी है। एक वर्ग है संतों का और दूसरा लेखकों का। जीवन मूल्यों का जो क्षरण हो रहा है उसे कैसे रोका जाये? जन–जन के मन में मूल्यों के प्रति आस्था को सुदृढ़ कैसे किया जाये? देश के कर्णधारों ने यह माना है कि अणुव्रत एक शक्ति है जिसके बल पर व्यक्ति का चरित्र बल और राष्ट्र का चरित्र बल बढ़ाया जा सकता है। आज आवश्यकता है कि उन लोगों का मनोबल बढ़ाया जाये जो नैतिक मूल्यों में आस्था रखते हैं, उन्हें जीते हैं।
- साध्वी नियोजिका श्री विश्रुतविभा ने कहा कि आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने साहित्य की जो सेवा की है वो अद्भुत है। साध्वी श्री कल्पलता ने साध्वीप्रमुखा जी की सुदीर्घ साहित्य यात्रा से संभागियों को परिचित कराया।
- सायंकालीन सत्र में **'राष्ट्र निर्माण में अहिंसा की भूमिका'** विषय पर हुई संगोष्ठी की अंतरराष्ट्रीय साहित्यकार श्री लक्ष्मीशंकर वाजपेयी जी ने अध्यक्षता की। प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती ममता किरण ने काव्यपाठ करके सत्र की सरस शुरुआत की। अणुव्रत समिति भीलवाड़ा की अध्यक्ष श्रीमती आनन्दबाला टोडरवाल ने संगोष्ठी में पधारे साहित्यकारों का स्वागत किया। प्रस्तुत विषय पर साहित्यकार श्री रामस्वरूप रावतसरे, डॉ. अनिलदत्त मिश्रा, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, डॉ. सत्यनारायण सत्य, श्री राजकुमार जैन राजन, श्री नंदकिशोर निर्झर, प्रेक्षा मेहता, राजमति सुराणा, सत्यनारायण व्यास मधुप, सुमन लोढ़ा, डॉ. नरेन्द्र शर्मा कुसुम, श्री प्रणय कुमार आदि ने सारगर्भित ढंग से चर्चा की। चित्तौड़ से समागत कवि अब्दुल जब्बार ने गजल और कविता सुनायी। इस सत्र का संचालन बाल साहित्यकार व अणुव्रत लेखक मंच के सह संयोजक श्री रजनीकान्त शुक्ल ने तथा आभार प्रदर्शन अणुव्रत विश्व भारती की कार्यसमिति के सदस्य व संगोष्ठी व्यवस्था प्रभारी श्री अभिषेक कोठारी ने किया।

## अणुविभा मुख्यालय में बालोदय दीर्घाएं देख

# अभिभूत हुए साहित्यकार

अणुव्रत लेखक संगोष्ठी में आये अधिकांश साहित्यकारों ने 18 अक्टूबर को अणुव्रत विश्व भारती के मुख्यालय चिल्ड्रन्स पीस पैलेस राजसमंद का भ्रमण किया और वहां बच्चों के सर्वांगीण विकास के उपक्रमों को करीब से देखा। सभी साहित्यकारों ने एक स्वर में कहा कि निकट भविष्य में बच्चों के लिए यह स्थान एक बड़े आकर्षण के रूप में उभर कर सामने आयेगा। प्रस्तुत हैं प्रसिद्ध साहित्यकारों द्वारा सम्मति पुस्तिका में अभिव्यक्त विचार –

ऐसा अद्भुत संग्रहालय मैंने दुनिया में कहीं नहीं देखा। इस बाल संग्रहालय को विकसित करने में राजस्थान की जनता और सरकार को भरपूर सहयोग करना चाहिए।

*–डॉ. वेदप्रताप वैदिक, गुरुग्राम (हरियाणा)*

अभिभूत हूँ। बच्चों को इतने व्यापक चेतना संसार से जोड़ना अद्भुत परिकल्पना है। यह प्रयोग देशभर में हो जाये तो देश का कायाकल्प हो जाये।

*–लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, गुरुग्राम (हरियाणा)*

अणुव्रत विश्व भारती देखने का अवसर मिला, यह अद्भुत संकल्पना है। बच्चों के लिए इसे तीर्थस्थल की संज्ञा दी जा सकती है।

*–ब्रजेंद्र त्रिपाठी, ग्रेटर नोएडा (उत्तरप्रदेश)*

आज राजसमन्द में अणुव्रत विश्व भारती देखने का सौभाग्य मिला और यहाँ आकर जिस शान्ति और रचनात्मकता का अनुभव किया वो अपने आपमें अद्वितीय है। मन नहीं भरा है और एक बार फिर यहाँ आकर दो–चार दिन रहना चाहती हूँ और कुछ रचनात्मक कार्य करना चाहती हूँ। उम्मीद करती हूँ कि फिर जरूर ईश्वर ये अवसर प्रदान करेगा। पूरा परिसर अपने आपमें अनूठा है।

*–ममता किरण, दिल्ली*

यह देश के बच्चों के लिए संस्कार सींचन की प्रेरणा देने वाला अनुपम स्थल है इसको देखकर अभिभूत हूँ। संस्था से जुड़ने का सौभाग्य भी मिलेगा।

*–राजकुमार जैन 'राजन', आकोला (राजस्थान)*

अद्भुत, अद्वितीय और अतुलनीय।

*–शशिकांत सदैव, नयी दिल्ली*

# अणुविभा का राष्ट्रव्यापी 'ईको फ्रेंडली दीपावली' अभियान

पिछले कुछ दशकों में तथाकथित विकास के नाम पर मनुष्य ने प्रकृति के असंतुलित दोहन की सारी हदें पार कर दीं। पर्यावरण को बेहिसाब नुकसान पहुँचाया गया है। बढ़ते प्रदूषण को रोकने के लिए प्रत्येक नागरिक को अपना कर्तव्य जागरूकता के साथ निभाना होगा। इसे ध्यान में रखते हुए अणुव्रत विश्व भारती ने देशभर में फैली अणुव्रत समितियों के माध्यम से **'ईको फ्रेंडली दीपावली'** का संदेश जन–जन तक पहुँचाने का निश्चय किया है। इसके तहत लोगों को आतिशबाजी और पटाखों से स्वास्थ्य तथा पर्यावरण को होने वाले नुकसानों के बारे में बताया जायेगा।

भीलवाड़ा में 18 अक्टूबर को **अणुव्रत अनुशास्ता** के पावन सान्निध्य में अणुविभा अध्यक्ष श्री संचय जैन तथा अन्य गणमान्य जनों की उपस्थिति में **'ईको फ्रेंडली दीपावली'** के बैनर का लोकार्पण किया गया। आचार्य प्रवर ने इस अवसर पर कहा कि आतिशबाजी कभी–कभी हिंसा का कारण भी बन जाती है। प्रदूषण से भी बचना चाहिए। इस अभियान की संयोजिका डॉ. नीलम जैन ने बताया कि ईको फ्रेंडली दीपावली अभियान में अणुव्रत कार्यकर्ता स्वयं संकल्पित हो रहे हैं और 'नो टू क्रेकर्स' का अभियान चलाया जा रहा है। इस संदर्भ में देश भर की अणुव्रत समितियों की ओर से आयोजित कार्यक्रमों की विस्तृत रिपोर्ट दिसम्बर अंक में प्रकाशित की जायेगी।

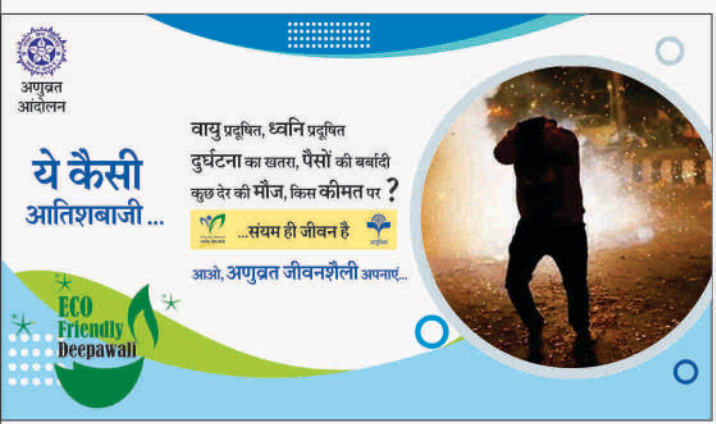

# अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का शुभारम्भ

☞ 26 सितम्बर 2021 को अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का शुभारम्भ **अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण** के पावन सान्निध्य में महाश्रमण सभागार में **साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस** के रूप में हुआ। आचार्य प्रवर ने अपने पाथेय में बताया कि अणुव्रत विश्व का धर्म है, जिसे हर धर्म का व्यक्ति तो अपना ही सकता है, अपने आपको नास्तिक कहने वाला व्यक्ति भी इसको अपना सकता है। अणुव्रत समिति भीलवाडा की बहिनों ने अणुव्रत गीत की प्रस्तुति दी और समिति अध्यक्षा श्रीमती आनंदबाला ने साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस पर अपनी अभिव्यक्ति दी।

☞ 27 सितम्बर 2021 को अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का दूसरा **दिवस जीवन विज्ञान दिवस** के रूप में अणुव्रत अनुशास्ता के सान्निध्य में आयोजित हुआ। आचार्य प्रवर ने महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया और अपने पाथेय में फरमाया कि विद्यार्थी के जीवन में मानसिक संतुलन बना रहे, बौद्धिक विकास हो, शारीरिक संतुलन भी रहे यह सब जीवन विज्ञान के प्रयोगों से हो सकता है। अणुविभा उपाध्यक्ष श्री अशोक डूंगरवाल ने जीवन विज्ञान के इतिहास एवं आज के युग में इसकी आवश्यकता के बारे में बताया।

☞ 28 सितम्बर 2021 को तीसरा दिवस अणुव्रत अनुशास्ता के सान्निध्य में **अणुव्रत प्रेरणा दिवस** के रूप में मनाया गया। आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि आदमी के आचार में, व्यवहार में, विचार में संयम बना रहे। संयम आधारित जीवन हो। आदमी की संयमाधारित जीवनशैली हो। अहिंसा यात्रा के तहत जो त्रिसूत्रीय कार्यक्रम चल रहा है वो अणुव्रत का ही निचोड़ है। अणुव्रत गौरव डॉ. महेंद्र कर्णावट ने अपने वक्तव्य में कहा कि अणुव्रत दर्शन एक जीवनशैली है, इस जीवनशैली को अपने जीवन में उतार कर मानवीय मूल्यों से युक्त घर–परिवार और समाज का निर्माण कर सकते हैं। कार्यक्रम में भीलवाड़ा के सांसद श्री सुभाष बहेड़िया, श्री रामलाल जाट, लादू लाल तेली आदि राजनेता भी उपस्थित थे।

☞ 29 सितम्बर 2021 को अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का चौथा दिन **पर्यावरण शुद्धि दिवस** के रूप में आयोजित हुआ। इस अवसर पर अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी श्री के.सी.जैन और अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संचय जैन ने अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्यप्रवर ने पर्यावरण शुद्धि के संदर्भ में मंगल उद्बोधन प्रदान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में **राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष श्री सी. पी.जोशी** आचार्यप्रवर महाश्रमण जी की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए और पूज्यप्रवर को विनतभाव से वंदन किया। चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री प्रकाश सुतरिया ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया।

☞ इस अवसर पर आचार्यप्रवर ने अपने पावन उद्बोधन में कहा–"अणुव्रत मानव को सदाचारी बनाने का आंदोलन है। आदमी के पास पैसा, पद, प्रतिभा आदि संपदाएं हो सकती हैं। दो संपदाएं और हैं–सद्विचार और सदाचार। सद्विचार होने से सदाचार का रास्ता प्रशस्त बन सकता है। अभी हम लोग अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। हम अहिंसा यात्रा में विशेषतया तीन सूत्रों पर चर्चा किया करते हैं–सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। पहला सूत्र है–सद्भावना। जाति, संप्रदाय, वर्ण, भाषा आदि आधारों पर हिंसा न फैले, दंगा–फसाद न हो, आदमी हिंसा में प्रवृत्त न हो। सबके साथ अहिंसा की भावना रहे, मैत्री रहे। दूसरा सूत्र है–ईमानदारी। आदमी जो भी कार्य करे, उसमें ईमानदारी रखने का प्रयत्न करे, दूसरों को ठगने, धोखा देने, बेईमानी करने से बचे। तीसरा सूत्र है–नशामुक्ति। आदमी शराब, सिगरेट, खैनी, गुटखा आदि नशीले पदार्थों के सेवन से बचे। दुनिया में जो अपराध होते हैं, या तो वे सद्भावना या नैतिकता के अभाव में या फिर नशे के कारण हो सकते हैं। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति–ये तीन सूत्र जीवन में आ जाते हैं तो अपराधों में कमी आ सकेगी, हिंसा कम हो सकेगी, समाज,

प्रांत, देश और विश्व अच्छा रह सकेगा। अणुव्रत की बात जैन नहीं, गुड मैन बनने की बात है। जैन कोई हो या न हो, गुड मैन रहे तो समाज भी अच्छा रह सकता है। व्यक्ति–व्यक्ति सुधरेगा तो समाज भी अच्छा हो सकेगा। समाज अच्छा होगा तो राष्ट्र और फिर विश्व भी अच्छा हो सकेगा। राजनीति सेवा का माध्यम है, उसमें नैतिक मूल्यों के रूप में पवित्रता बनी रहे।"

- राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष **श्री सी.पी.जोशी** ने कहा––"आचार्य श्री महाश्रमणजी सद्भावना, नैतिकता एवं नशामुक्ति इन तीन मूल्यों को लेकर देश–विदेश में पदयात्रा कर रहे हैं। यदि इन तीन मूल्यों को आत्मसात कर लिया जाए तो व्यक्ति आगे बढ़ेगा, समाज आगे बढ़ेगा और देश भी आगे बढ़ेगा। मुझे गौरव है कि मैं उस जिले से हूँ, जहां तेरापंथ की स्थापना हुई। केलवा मेरे राजसमंद जिले में ही स्थित है। मैं पहले भीलवाड़ा क्षेत्र का सांसद रहा हूँ। मुझे इस बात की भी खुशी है कि आप मेरे पूर्व संसदीय क्षेत्र में चातुर्मास कर रहे हैं और मुझे अपने ही क्षेत्र में आपके दर्शन करने व प्रवचन सुनने का सौभाग्य मिला। मैं इन तीन सूत्रों को अपने जीवन में और अधिक आत्मसात कर देश की सेवा करता रहूँ। आप मुझे यही आशीर्वाद प्रदान करें।" कार्यक्रम में साध्वीप्रमुखाजी का भी उद्बोधन हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनिश्री दिनेशकुमारजी ने किया।

- 30 सितम्बर 2021 को अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का पाँचवां दिवस **नशामुक्ति दिवस** के रूप में आयोजित हुआ। अणुव्रत समिति मंत्री श्री राजेश चौरड़िया ने अपनी अभिव्यक्ति में भीलवाड़ा में नशामुक्ति के संदर्भ में किये जा रहे कार्यों की अवगति दी और बताया कि सड़क से लेकर मॉल तक, झुग्गी–झोपड़ी, बस स्टैंड, ऑटो स्टैंड, रेलवे स्टेशन आदि पर नशा विरोधी जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है।

- 1 अक्टूबर 2021 को अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का छठा दिवस अणुव्रत अनुशास्ता के पावन सान्निध्य में **अनुशासन दिवस** के रूप में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्र सरकार में कैबिनेट मंत्री **श्री अर्जुनराम मेघवाल** ने कहा कि आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन करते हुए सात दशक पहले असली आजादी अपनाने का आह्वान किया था और इसके लिए अणुव्रत का दर्शन प्रस्तुत किया था। असली आजादी का मतलब सिर्फ राजनैतिक आजादी से नहीं बल्कि अपनी बुरी आदतों से आजादी से है। उन्होंने अणुव्रत गीत का संगान करते हुए कहा कि इसमें जीवन का सम्पूर्ण दर्शन समाया हुआ है। अणुव्रत समिति अध्यक्षा आनंदबाला एवं प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया ने अतिथियों का स्वागत किया। साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभा ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि अणुव्रत आंदोलन का मूल उद्देश्य है मनुष्य को सही अर्थ में मनुष्य बनाना। मुनि श्री दिनेशकुमार ने कहा कि अणुव्रत इंसान को इंसान बनाना सिखाता है, अणुव्रत गिरे हुए को उठाना सिखाता है, अणुव्रत और कुछ नहीं चाहता, बस सोये हुए संसार को जगाना चाहता है।

- अणुविभा अध्यक्ष श्री संचय जैन ने श्री अर्जुनराम मेघवाल का स्वागत किया और अणुव्रत आंदोलन को मिल रहे उनके सहयोग व समर्थन के प्रति आभार जताया। श्री मेघवाल ने अणुव्रत समिति, भीलवाड़ा द्वारा प्रदर्शित अणुव्रत आचार संहिता आधारित चित्र प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया।

- 2 अक्टूबर 2021 को अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का अंतिम और सातवां दिन आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में महाश्रमण सभागार में **अहिंसा दिवस** के रूप में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत समिति भीलवाड़ा द्वारा अणुव्रत गीत की प्रस्तुति द्वारा हुआ। अणुविभा कार्यसमिति सदस्य एवं अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के संयोजक श्री अभिषेक कोठारी ने अहिंसा विषय पर विचार व्यक्त किये।

*अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत 26 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक देशभर में व्यापक स्तर पर कार्यक्रम आयोजित हुए। सात दिवसीय इस आयोजन में सांप्रदायिक सद्भाव, जीवन विज्ञान, अणुव्रत प्रेरणा, पर्यावरण शुद्धि, नशामुक्ति, अनुशासन और अहिंसक जीवनशैली जैसे सामाजिक उन्नयन के वैविध्यपूर्ण विषयों पर देशभर में अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने रचनात्मक उत्साह और सक्रियता का परिचय दिया। अनेक अणुव्रत समितियों से प्राप्त रिपोर्ट्स को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है –*

## रिछेड़

अणुव्रत समिति रिछेड़ की ओर से स्थानीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में अनुशासन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में छात्रों को जीवन में अनुशासन के महत्व को समझाते हुए विद्यार्थी अणुव्रत आचार संहिता को जीवन में उतारकर सफल होने की प्रेरणा दी गयी। कार्यक्रम में समिति मंत्री सर्वश्री प्रकाश कच्छारा, उपाध्यक्ष मनवर बेग, भीमराज कोठारी, कल्पना मीणा, कुलदीप, मुकेश मीणा, रमेश प्रजापत आदि अनेक सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन समिति अध्यक्ष श्री राधेश्याम राणा ने किया। अहिंसा दिवस पर हुए कार्यक्रम में स्कूल के अध्यापकों, छात्रों, ग्रामवासियों व अणुव्रत समिति रिछेड़ के सदस्यों की सक्रिय सहभागिता रही।

## किशनगंज

अनुशासन दिवस पर अणुव्रत समिति किशनगंज ने 'जीवन में धर्म का महत्व' एवं 'जीवन में धन्यवाद ज्ञापन का महत्व' विषयक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसमें बच्चों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। प्रतियोगिता की प्रभारी श्रीमती ममता बैद एवं श्री अभिषेक कोठारी ने निर्णायक की भूमिका निभायी। प्रथम अंश बांठिया एवं तनीषा श्यामसुखा, द्वितीय भावंशी दफ्तरी व तीसरा प्रेक्षा बैद रही।

## भीलवाड़ा

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतिम दिन 'एक शाम अणुव्रत के नाम' सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। अणुव्रत आचार संहिता का वाचन अणुविभा के कार्यकारिणी सदस्य श्री अभिषेक कोठारी ने किया। अतिथियों का स्वागत अणुव्रत समिति की अध्यक्ष श्रीमती आनंदबाला टोडरवाल ने किया। कार्यक्रम के तहत 'नशामुक्त हो सारा देश' विषय पर ज्ञानशाला के बच्चों ने बहुत ही प्रभावी प्रस्तुति दी, जिसका संचालन ज्योति दूगड़ ने किया।

ज्ञानशाला के बच्चों ने एक और प्रस्तुति दी, जिसका संचालन शीलू बाफना ने किया। अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीलाल झाबक ने 'अणुव्रत को कैसे जीवन में उतारा जाये?' विषय पर विचार रखे।

अणुव्रत गौरव डॉ. महेंद्र कर्णावट, प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री निर्मल गोखरू, सभा अध्यक्ष भेरुलाल चोरडिया, महिला मंडल अध्यक्षा मीना बाबेल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष राकेश सूतरिया आदि ने भी विचार प्रस्तुत किये। आभार ज्ञापन जीवन विज्ञान की सहसंयोजिका श्रीमती उषा सिसोदिया ने तथा संचालन श्रीमती स्नेहलता झाबक, अमिता बाबेल ने किया।

## खारूपेटिया

अणुव्रत समिति, खारूपेटिया द्वारा अहिंसा दिवस का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। समिति के मंत्री श्री दुलीचंद लुणावत, सभा उपाध्यक्ष श्री दीपक हिरावत ने विचार रखे। कार्यक्रम में समिति के उपाध्यक्ष कमलसिंह श्यामसुखा, निवर्तमान अध्यक्ष शांतिलाल सुराणा, प्रचार प्रसार मंत्री पूरनमल सुराणा, मुख्य सलाहकार सम्पतराय श्यामसुखा, निर्मल चोरडिया, सभामंत्री प्रकाश श्यामसुखा, तेयुप अध्यक्ष पंकज श्यामसुखा आदि उपस्थित थे।

## इस्लामपुर

अणुव्रत समिति द्वारा अहिंसा दिवस का कार्यक्रम जैन तेरापंथ भवन में हुआ। इसमें मुख्य अतिथि राधेश्याम प्रसाद योग प्रशिक्षक थे। अणुव्रत समिति की अध्यक्ष

• रिछेड़ •

• भीलवाड़ा •

• खारूपेटिया •

श्रीमती शकुंतला देवी दुगड़ ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। जीवन विज्ञान संयोजिका श्रीमती अंजना भंडारी ने जीवन विज्ञान के बारे में प्रकाश डाला। ज्ञानशाला संयोजिका श्रीमती मनीषा बोथरा ने स्वस्थ जीवन के बारे में बताया। संचालन श्रीमती नीता गदिया ने तथा आभार ज्ञापन सहमंत्री श्रीमती ज्योति भंडारी ने किया।

## जसोल

अणुव्रत समिति की ओर सांप्रदायिक सौहार्द दिवस पर ओसवाल सभा भवन में आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री धर्मेशकुमार ने कहा कि धर्म और संप्रदाय अलग–अलग हो सकते हैं। जैसे दीये अलग–अलग होते हैं, तेल या जलाने वाले भी अलग–अलग हो सकते हैं लेकिन उसमें से निकलने वाली ज्योति एक ही होती है। मुनिश्री डॉ. विनोद कुमार, सेंट पॉल स्कूल के प्राचार्य फादर रोनाल्डो लम्बो तथा सभा मदुरै के अध्यक्ष श्री जयंतीलाल जीरावला ने भी विचार व्यक्त किये। आभार ज्ञापन श्री पारसमल गोलेच्छा तथा संचालन श्री भूपतराज कोठारी ने किया।

जीवन विज्ञान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री धर्मेशकुमार तथा मुनिश्री डॉ. विनोद कुमार, मुनिश्री यशवंत कुमार ने उद्‌गार व्यक्त किये। प्रचार प्रसार मंत्री अकरम खां पठान, कोषाध्यक्ष भीकचंद छाजेड़, उपासक पवन छाजेड सहित अणुव्रत समिति के सदस्यों का विशेष सहयोग मिला। स्वागत भाषण समिति अध्यक्ष श्री पारसमल गोलेच्छा ने दिया। आभार ज्ञापन मंत्री सफरू खां ने और कार्यक्रम का सफल संचालन श्री भूपतराज कोठारी ने किया।

नाकोडा रोड स्थित आदर्श विद्या मंदिर स्कूल में अणुव्रत प्रेरणा दिवस का शुभारंभ स्कूल के बालक–बालिकाओं ने प्रार्थना से किया। अध्यापक राजेन्द्रपाल, ईश्वरसिंह इंदा, उपासक पवन छाजेड़ ने ध्यान, योगा और आसन–प्राणायाम कराया। साथ ही अणुव्रत के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में मंत्री सफरू खां, भीकचंद छाजेड़, डुंगरचंद बागरेचा, अशोककुमार, अवतार सिंह, वीरेंद्र कुमार, कुलदीप भार्गव, प्रीति शर्मा नवकार विद्या मंदिर स्कूल परिवार साहित अणुव्रत समिति के सदस्यों का विशेष सहयोग मिला। आभार ज्ञापन प्रधानाचार्य श्री जालमसिंह राठौड़ ने और कार्यक्रम का सफल संचालन श्री भूपतराज कोठारी ने किया।

पुराना ओसवाल भवन में अहिंसा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री धर्मेशकुमार ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के प्रयासों का स्मरण किया। मुनि डॉ. विनोद कुमार तथा मुख्य वक्ता पूर्व सरपंच भँवरलाल भंसाली ने भी प्रेरणादायक विचार रखे। स्वागत भाषण समिति के पूर्व अध्यक्ष श्री डूंगराराम बोगु ने किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री श्री माणकचंद सखलेचा ने किया।

## जयपुर

अणुव्रत समिति की ओर से 'पर्यावरण शुद्धि दिवस' प्रिंसिपल, कौटिल्य इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड इंजीनियरिंग के नेतृत्व में मनाया गया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री विमल गोलछा ने पर्यावरण की महत्ता समझायी। समिति की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती आशा नीलू टाक ने सुंदर कविता से पर्यावरण शुद्धि के महत्व को दर्शाया। निवर्तमान अध्यक्ष प्रदीप नाहटा ने प्राकृतिक पर्यावरण के साथ–साथ मानसिक पर्यावरण को सुधारने पर जोर दिया। उन्होंने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक रहने के साथ–साथ इसे शुद्ध रखने के लिए शपथ भी दिलवायी। मुख्य वक्ता प्रिंसिपल के.सी. रॉय ने बच्चों को पर्यावरण के प्रति संकल्पित रहने व जागरूकता पर जोर दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन समिति की निवर्तमान मंत्री अनामिका जैन ने किया। उन्होंने योग के अनेक प्रयोग करवाये।

समिति की ओर से प्रेम निकेतन स्कूल में 'अनुशासन दिवस' का आयोजन किया गया। अध्यक्षता समिति अध्यक्ष श्री विमल गोलछा ने की। मुख्य अतिथि श्री विष्णु दत्त गुप्ता, ब्लॉक मुख्य शिक्षा अधिकारी जयपुर (पश्चिम), आश्रम प्रबंधक शेखर गर्ग, सचिव श्रीमती मीना गर्ग तथा विद्यालय प्राध्यापिका श्रीमती कमला बंसल का सम्मान किया गया। संचालन समिति की मंत्री डॉ. जयश्री सिद्धा ने किया। श्री उमेंद्र गोयल, परामर्शक अणुव्रत समिति ने अनुशासन क्विज बच्चों के साथ करवायी। विजेताओं को

• जसोल •

• जयपुर •

• हांसी •

मुख्य अतिथि ने पुरस्कार वितरित किये। इसमें स्कूल के लगभग 100 बच्चों तथा स्कूल स्टाफ व अणुव्रत समिति के सदस्यों ने भाग लिया। श्री प्रदीप नाहटा ने अनुशासन के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किये। अणुव्रत समिति ने समग्र सेवा संघ के साथ मिलकर समग्र सेवा संघ परिसर, दुर्गापुरा में अहिंसा दिवस मनाया। सर्वप्रथम सर्वधर्म सद्भाव पर रैली निकाली गयी। उसके पश्चात् कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सवाई सिंह ने कार्यक्रम की शुरुआत की। अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अविनाश नाहर ने अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह और अणुव्रत की गतिविधियों के बारे में बताया। उन्होंने कहा, अणुव्रत और सर्वधर्म के उद्देश्य एक–दूसरे के पर्यायवाची हैं। इसके बाद सभी धर्मावलंबियों ने विचार रखे।

## सिलीगुड़ी

अहिंसा दिवस का कार्यक्रम तेरापंथ भवन सोमानी मिल कम्पाउंड में हुआ। मुख्य अतिथि दार्जिलिंग डिस्ट्रिक्ट प्रेसिडेंट टीएमसी श्रीमती पापिया घोष, श्री संजय टिबरीवाल चेयरमैन सीआईआई की गरिमामयी उपस्थिति रही। समिति की अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा देवी चिंडालिया ने स्वागत भाषण दिया। संचालन श्री मदन मालू तथा आभार ज्ञापन समिति की मंत्री श्रीमती जूली सिरोहिया ने किया। अणुव्रत समिति की ओर से अनुशासन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती निशा सोमानी एवं मंत्री श्रीमती मधु झवर एवं मुख्य वक्ता आर्य समाज से श्री ऋषि पाल आर्य एवं प्रो. श्री प्रशांत विघयलकर सरकार की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

समिति ने तेरापंथ भवन में अणुव्रत प्रेरणा दिवस मनाया। सर्वप्रथम समिति की अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा देवी चंडालिया ने अपना वक्तव्य रखा। मुख्य वक्ता अणुविभा के बंगाल प्रभारी श्री सुरेंद्र छाजेड़ ने वक्तव्य दिया। समिति मार्गदर्शक श्री मदन मालू ने भी विचार रखे। श्री मेघराज सेठिया , श्री सुरेन्द्र घोड़ावत , श्री हनुमानमल मालू, श्री उमेद सिंह बोथरा, श्री बछराज सेठिया आदि ने अपने विचार रखे। श्रीमती पुष्पा देवी पारख ने मंच संचालन किया।

अणुव्रत समिति ने न्यू जलपाईगुड़ी में 'नशामुक्ति दिवस' मनाया। इसके अंतर्गत ट्रक ड्राइवरों एवं उपस्थित लोगों ने नशा न करने का संकल्प लिया। इस कार्यक्रम में अरुण राम, सुदीप राय, सुदीप्तो हलदार, चंदन राय, संजीव पासवान, राजेश साहनी, सुनील महतो, एमडी समीर, मोहम्मद तीसार, मोहम्मद तूफानी, चंद्र शकर शर्मा, एमडी राजू, नन्दलाल विश्वास आदि लोगों ने जर्दा, शराब ,सिगरेट, छोड़ने का संकल्प लिया।

## हांसी

तेरापंथ भवन में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का सातवां दिन अहिंसा दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वीश्री आस्था प्रभा जी ने अणुव्रत गीत से कार्यक्रम का प्रारंभ किया। नन्ही बालिका नूतन जैन ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की रोचक प्रस्तुति दी। अतिथियों का स्वागत अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री अशोक जैन ने किया। साध्वीश्री मलय यशा जी ने हिंसा के चार कारणों का विवेचन किया। साध्वीश्री सिद्ध प्रभा जी ने कहा कि व्यवहार पक्ष को अधिक महत्व देने के कारण हिंसा ज्यादा बढ़ रही है। हमें दूसरों को नहीं, स्वयं को देखना चाहिए। सभी जीवों को अपनी आत्मा के समान समझेंगे तो हिंसा नहीं होगी और यही परमार्थ पक्ष होगा। कार्यक्रम का संचालन साध्वीश्री आस्था प्रभा ने तथा आभार ज्ञापन श्री रविंद्र जैन ने किया।

## दिवेर

दिवेर समिति द्वारा राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय दिवेर में अहिंसा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में समिति अध्यक्ष श्री गणेश राम बुनकर ने कहा कि सत्य, अहिंसा, पवित्रता और नैतिकता जैसे शाश्वत मूल्यों को अपनाकर ही हम वास्तविक शांति एवं विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। मंत्री श्री हरीश कुमार सालवी, पंचायत समिति दिवेर के सरपंच श्री भंवर सिंह, श्री देवीलाल ने विचार रखे। क्रार्यक्रम का संचालन श्री सीताराम बैरवा ने किया। इस अवसर पर विद्यालय के विद्यार्थी व शिक्षक उपस्थित थे।

## गंगाशहर

अणुव्रत समिति, गंगाशहर ने नैतिकता की शक्तिपीठ के

• सिलीगुड़ी •

• दिवेर •

• गंगाशहर •

प्रांगण में पर्यावरण शुद्धि दिवस के अवसर पर पौधरोपण और विचार संगोष्ठी का आयोजन किया। कार्यक्रम में श्री मूलचंद सामसुखा, भाजपा युवा मोर्चा देहात अध्यक्ष जसराज सिंवर, सरिता नाहटा विशिष्ट अतिथि थे। मुख्य अतिथि सुमन छाजेड़ तथा राणीदान उज्जवल, श्री किशन बैद और श्री दीपक आंचलिया ने भी विचार व्यक्त किये। समिति अध्यक्ष श्री राजेंद्र बोथरा ने अतिथियों का साहित्य भेंट कर स्वागत किया। आभार ज्ञापन मंत्री श्री भंवर लाल सेठिया ने किया और कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री श्री मनीष बाफना ने किया।

साध्वीश्री पावनप्रभाजी के सान्निध्य में 'अनुशासन दिवस' शान्ति निकेतन में मनाया गया। मुख्य वक्ता का परिचय सहमंत्री मनीष बाफना ने दिया। समिति अध्यक्ष श्री राजेन्द्र बोथरा तथा मंत्री श्री भंवरलाल सेठिया ने अनुशासन की महत्ता पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता का साहित्य भेंट कर जतनलाल दूगड़, तेरापंथी सभा अध्यक्ष अमरचन्द सोनी, जीवराज सामसुखा व राजेन्द्र बोथरा ने स्वागत किया। आभार ज्ञापन किशन बैद ने तथा संचालन श्रीमती अनुपम सेठिया व मनीष बाफना ने किया।

जीवन विज्ञान दिवस अर्हम इंग्लिश अकेडमी में समिति के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र बोथरा की अध्यक्षता में मनाया गया। समिति मंत्री श्री भंवरलाल सेठिया ने जीवन विज्ञान के बारे में जानकारी दी। अणुव्रत उद्‌बोधन प्रतियोगिता के राष्ट्रीय संयोजक श्री अशोक चौरडिया ने प्रतियोगिता की विस्तृत जानकारी दी। अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का अन्तिम दिवस अहिंसा दिवस के रूप में साध्वीश्री पावनप्रभा जी के सान्निध्य में शान्तिनिकेतन में मनाया गया। संचालन श्रीमती सन्तोष बोथरा ने किया।

## हैदराबाद

साध्वी श्री काव्यलता जी के सान्निध्य में अणुव्रत समिति हैदराबाद द्वारा जीवन विज्ञान दिवस का आयोजन राजकीय हाई स्कूल, बोलारम में किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान के प्रयोग संयोजिका रीटा सुराणा ने कराये तथा नशा मुक्ति व पर्यावरण सुरक्षा पर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया। समिति द्वारा अहिंसा दिवस पर शासनश्री साध्वीश्री जिनरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन डी.वी. कॉलोनी, सिकंदराबाद में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जिनरेखा जी ने अणुव्रत आंदोलन की पृष्ठभूमि का विवेचन किया व अहिंसा के महत्व को समझाया। साध्वीश्री मधुर यशा जी ने अहिंसा का महत्व बताया। साध्वीश्री श्वेत प्रभा जी, धवल प्रभा जी व मार्दव यशा जी ने मधुर गीत का संगान किया। समिति के अध्यक्ष प्रकाश एच भंडारी ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन संगठन मंत्री श्री नीरज सुराणा ने व उपाध्यक्ष श्री अनिल कातरेला ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

## श्रीडूंगरगढ़

समिति द्वारा आयोजित अहिंसा दिवस पर शासनश्री साध्वी बसंतप्रभा जी ने कहा कि हिंसा का मुख्य कारण व्यक्ति का स्वार्थ है। व्यक्ति अपने अहंकार के कारण हिंसा करता है। समिति के अध्यक्ष श्री विजयराज सेठिया ने अणुव्रत गीत संगान किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री श्याम महर्षि, पार्षद और महिला मंडल की सदस्य श्रीमती अंजुदेवी पारख, समिति के उपाध्यक्ष श्री सत्यनारायण तथा समिति के परामर्शक श्री महावीर माली ने विचार व्यक्त किये।

नशामुक्ति की लहर श्रीडूंगरगढ़ में देखने को मिली। राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित घूमचक्कर के पास अणुव्रत सेवी कार्यकर्ताओं ने नशामुक्ति के फॉर्म भरवाकर आमजन को इससे होने वाले नुकसानों के प्रति जागरूक किया। कुल 100 व्यक्तियों ने नशामुक्ति का संकल्प पत्र भरा। मालू भवन में आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी बसंतप्रभा, साध्वी गुप्तिप्रभा तथा साध्वी संकल्पश्री ने नशे के दुष्परिणाम के बारे में अवगत कराया। समिति के अध्यक्ष श्री विजयराज सेठिया ने नशे से होने वाले दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री के.एल. जैन ने किया।

## बेंगलुरु

अणुव्रत समिति द्वारा अहिंसा दिवस राजराजेश्वरी नगर स्थित तेरापंथ सभा भवन में शासनश्री साध्वीश्री कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। समिति उपाध्यक्ष श्री

● हैदराबाद ●

● श्रीडूंगरगढ़ ●

● बेंगलुरु ●

देवराज रायसोनी ने सभी का स्वागत किया। मुख्य अतिथि तेरापंथी महासभा के सहमंत्री श्री प्रकाश लोढ़ा ने विचार व्यक्त किये। संचालन श्री ललित बाबेल ने किया। समिति अध्यक्ष श्री शांतिलाल पोरवाल ने आभार ज्ञापित किया।

## बाड़मेर

अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित सांप्रदायिक सौहार्द कार्यक्रम में मुनिश्री स्वास्तिककुमार जी, मुनिश्री सुपार्श्वकुमार जी, शाही जामा मस्जिद के पेश इमाम मौलाना लाल मोहम्मद सिद्दीकी, ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय से सुशीला बहिन का सान्निध्य प्राप्त हुआ। मुनिश्री स्वास्तिककुमारजी ने कहा कि हर सम्प्रदाय की नींव अहिंसा पर टिकी हुई है। स्वागत भाषण समिति के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र बांठिया ने दिया तथा संचालन समिति के मंत्री कैलाश बोहरा ने किया। समिति की ओर से मुल्तानमल भीखचंद छाजेड़ रा. उ.माध्यमिक विद्यालय, गांधी चौक में नशामुक्ति दिवस मनाया गया। मुनिश्री स्वास्तिक कुमार जी ने कहा कि हमें न नोट चाहिए न वोट चाहिए न प्लॉट चाहिए, हमें तो आपकी खोट चाहिए। उपस्थित लगभग 1500 विद्यार्थियों ने संकल्प लिया कि हम कभी भी नशा नहीं करेंगे। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र बांठिया, उपाध्यक्ष श्री ओम जोशी सहित गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

## फारबिसगंज

तेरापंथ भवन के प्रांगण में साध्वीश्री डॉ. पीयूष प्रभाजी के सान्निध्य में नशा मुक्ति दिवस मनाया गया। श्री निर्मल सेठिया ने गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी श्री भावनाश्री जी ने कैसे क्रोध से दूर रहा जाये, उसके बारे में कुछ अच्छे पॉइंट्स बताये तथा डॉ. साध्वी श्री पीयूषप्रभा जी ने कहा कि बचपन के संस्कार बड़े होने पर भी काम आते हैं। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल उपाध्यक्ष श्रीमती नीलम बोथरा ने किया। डॉ. पीयूषप्रभा जी के सान्निध्य में अहिंसा दिवस की शुरुआत साध्वीश्री सुधाकुमारी जी ने मंगलाचरण के साथ की। तत्पश्चात् ज्ञानशाला के बच्चों ने गांधी जयंती पर प्रस्तुति दी। विराट नगर से समागत विनोद दुग्गड़ एवं उनके साथियों ने गीतिका का संगान किया। साध्वी डॉ. पीयूषप्रभा जी ने कहा कि अहिंसा के लिए सभी जीवों के प्रति मैत्री भाव अपेक्षित है। साध्वी दीप्तियशा जी ने भी ने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन समिति की मंत्री श्रीमती नीलम बोथरा ने किया।

## इंदौर

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनिश्री कमलकुमारजी ने अहिंसा दिवस पर कहा कि विश्व का आधार है शांति, अतः मनुष्य की प्रकृति शांतिमय होनी चाहिए, शांति प्रिय एवं चरित्रवान व्यक्ति सबके लिए आदर्श होता है। ब्रह्माकुमारी संस्थान की हेमलता दीदी तथा जयंती दीदी ने भी विचार व्यक्त किये। समिति के अध्यक्ष श्री निलेश पोखरना ने अणुव्रत की रूपरेखा से सबको अवगत करवाया। अणुविभा के राष्ट्रीय सहमंत्री श्री इंदर बेंगाणी एवं कार्यसमिति सदस्य श्री सुरेश कोठारी की उपस्थिति रही। सभाध्यक्ष श्री निलेश रांका ने आभार व्यक्त किया। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के तीसरे दिन मुनिश्री कमल कुमार जी, ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाई, सभागृह ज्ञानशिखर तथा ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी इंदौर ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में समिति के अध्यक्ष श्री नीलेश पोखरना व मंत्री श्री मनीष कठोतिया ने उपस्थितजनों का स्वागत किया।

युवा पीढ़ी के सर्वांगीण विकास में जीवन विज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान इस विषय पर कोठारी कॉलेज में, विद्यार्थियों के बीच, 'जीवन विज्ञान दिवस मनाया गया। मुख्य वक्ता अणुविभा राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री सुरेश कोठारी ने नयी शिक्षा नीति–2020 में जीवन विज्ञान की महत्ता पर प्रकाश डाला। पीथमपुर औद्योगिक संगठन के अध्यक्ष श्री गौतम कोठारी ने जीवन विज्ञान को विद्यार्थियों के शारीरिक, बौद्धिक मानसिक व भावात्मक विकास के लिए सफलता की पूँजी बताया। आभार ज्ञापन मंत्री श्री मनीष कठोतिया ने किया। 'पर्यावरण दिवस' पर इंदौर जोन की मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी ने कहा कि पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए मन को शुद्ध सात्विक विचारों से सम्पन्न बनाना होगा। ब्रह्माकुमारी जयनित दीदी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि मानव ने ही अपने सोच से

● बाड़मेर ●

● इंदौर ●

● ग्रेटर सूरत ●

अपने कर्म से पर्यावरण को प्रदूषित किया है, इसलिए हम सबको पर्यावरण शुद्धि का संकल्प लेना है। ब्रह्माकुमारी शशि दीदी ने आभार ज्ञापन किया।

## ग्रेटर सूरत

अणुव्रत समिति ने सांप्रदायिक सौहार्द दिवस के रूप में सूरत के अलग–अलग स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किये। सिटीलाइट तेरापंथ भवन में साध्वीश्री लब्धिश्री जी ने वर्तमान युग की अनेक समस्याओं का एकमेव समाधान अणुव्रत को बतलाया। अणुविभा उपाध्यक्ष श्री राजेश सुराणा ने अणुव्रत को और विशाल रूप देने की अपील की। अणुव्रत समिति परामर्शक श्री बालचंद बेताला एवं अध्यक्ष विजयकांत खटेड़ ने अतिथियों का सम्मान किया। सूरत रेलवे मुख्य अधीक्षक श्री दिनेश वर्मा ने अणुव्रत को मानवतावादी अभियान बताया। मंच संचालन समिति के मंत्रीश्री सुनील श्रीश्रीमाल एवं आभार ज्ञापन श्री राकेश चोरड़िया एवं श्री अर्जुन मेडतवाल ने किया।

मुनिश्री मुनिसुव्रत कुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत प्रेरणा दिवस का आयोजन, तेरापंथ भवन पर्वत पाटिया में किया गया। मंगलाचरण श्री ज्ञान कोठारी एवं श्री रतन भलावत ने किया। अध्यक्ष श्री विजयकांत खटेड़ ने आगंतुकों का स्वागत, अभिनंदन किया। पर्वत पाटिया सभाध्यक्ष श्री कमल पुगलिया ने अणुव्रत के इतिहास को साझा किया। आभार ज्ञापन समिति के सह मंत्री श्री रतन भालावत ने तथा संचालन मंत्री श्री सुनील श्रीश्रीमाल ने किया।

अणुव्रत समिति द्वारा नशा मुक्ति दिवस पर सूरत की लाजपोर सेंट्रल जेल में कैदियों के समूह के समक्ष नशामुक्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि अणुविभा के उपाध्यक्ष श्री राजेश सुराणा ने नशे से होने वाले दुष्परिणामों की जानकारी दी। मुख्य जेल अधीक्षक श्री पी. जी. नरवडे तथा श्री अर्जुन मेड़तवाल ने विचार व्यक्त किये। समिति अध्यक्ष श्री विजय कांत खटेड़ ने स्वागत भाषण दिया।

परामर्शक श्री बालचंद बेताला ने सभी कैदियों को अणुव्रत एवं नशामुक्ति के संकल्प दिलवाये। कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री सुनील श्री श्रीमाल ने किया।

विश्व प्रसिद्ध टेक्सटाइल मार्केट विस्तार में नशा मुक्ति रैली का आयोजन सालासर हनुमान गेट से मिलेनियम मार्केट तक किया गया। रैली में फेडरेशन ऑफ सूरत टेक्सटाइल मार्केट के अध्यक्ष श्री मनोज अग्रवाल, उपाध्यक्ष श्री गोकुल बजाज, महामंत्री श्री चंपालाल बोथरा, पार्षद श्री विजय भाई चौमाल, सहित कई गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। रैली श्री राजुभाई तातेड़, श्री नवनीत भाई नांदरेचा एवं श्री राजेंद्र बरड़िया का विशेष श्रम रहा। समिति द्वारा अनुशासन दिवस पर तेरापंथ भवन, पर्वत पाटिया पर कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर मुनि श्री मंगलप्रकाश जी एवं मुनि श्री शुभम् कुमार जी भी उपस्थित थे। मुनि श्री मुनिसुव्रतकुमार जी ने प्रेरक उद्‌बोधन दिया। मुख्य वक्ता समिति के निवर्तमान अध्यक्ष श्री नेमीचंद कावड़िया ने विचार व्यक्त किये। समिति अध्यक्ष श्री विजय कांत खटेड़ ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संचालन समिति के मंत्री श्री सुनील श्रीश्रीमाल ने एवं आभार ज्ञापन श्री कमलजी पुगलिया ने किया।

## व्यारा

समिति द्वारा 'जीवन निर्माण में शिक्षा का महत्व व स्वस्थ जीवन में विशुद्ध पर्यावरण का महत्व' बिन्दुओं पर शान्तिनिकेतन विद्यालय में कक्षा 6,7,8 के विद्यार्थीयों के समक्ष कार्यक्रम आयोजित हुआ। समिति की अध्यक्षा श्रीमती आशा चोरड़िया, मंत्री श्रीमती बनिता भटेवरा तथा समिति के सदस्य वकीलसिंह गुर्जर ने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता शान्तिनिकेतन के ट्रस्टी श्री पवनकुमार उपाध्याय ने की। कार्यक्रम के दौरान शान्तिनिकेतन विद्यालय के स्टाफ मेंबर्स के अलावा अणुव्रत समिति व्यारा के सदस्य स्वीटी चौरडिया, साधना जैन, सविता जैन, संदीप चौरडिया, पीयूष चौरडिया, नीलेश जैन की उपस्थिति रही।

## जोधपुर

अणुव्रत समिति द्वारा साध्वीश्री पुण्यप्रभा जी के सान्निध्य में 'सांप्रदायिक सौहार्द दिवस' तेरापंथ अमर नगर में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा कि अणुव्रत सप्ताह मनाने का मात्र एक ही उद्देश्य है कि लोगों में नैतिकता व

● व्यारा ●

● जोधपुर ●

● अहमदाबाद ●

मानवीय मूल्यों के प्रति निष्ठा जागे। कार्यक्रम में महासभा के पूर्व अध्यक्ष श्री किशन डागलिया, शहर के काजी तैयब अंसारी, ब्रह्मकुमारी समाज से राजयोगिनी बहन, फादर जितेन्द्रनाथ एवं महासभा के उपाध्यक्ष श्री विजयराज मेहता ने विचार व्यक्त किये। संचालन समिति मंत्री शर्मिला भंसाली ने किया।

मुनिश्री तत्वरुचि के सान्निध्य में जीवन विज्ञान दिवस के रूप में स्कूली बच्चों के लिए प्रश्न प्रतियोगिता आयोजित की गयी। समिति अध्यक्ष डॉ. सुधा भंसाली ने अतिथियों का स्वागत किया। समिति ने विजेता बच्चों को सम्मानित किया। आभार ज्ञापन समिति के संगठन मंत्री श्री महेन्द्र मेहता ने किया। सप्ताह का तीसरा दिन अणुव्रत प्रेरणा दिवस के रूप में मनाया गया। अल्प भाषा राज महल स्कूल में बच्चों के मध्य अणुव्रत आचार संहिता की मौखिक प्रतियोगिता आयोजित की गयी। कार्यक्रम का संचालन समिति मंत्री श्रीमती शर्मिला भंसाली ने किया।

सप्ताह का चौथा दिन पर्यावरण दिवस के रूप में अमर नगर तेरापंथ सभा भवन में मनाया गया। कार्यक्रम के तहत स्कूली बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता हुई। समिति द्वारा विजेता बच्चों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में समिति संगठन मंत्री श्री महेन्द्र मेहता, मंत्री श्री शर्मिला भंसाली, तेयुप सहमंत्री की उपिस्थति रही। सप्ताह का पाँचवां दिन चिल्ड्रन पार्क स्थित कैंब्रिज पब्लिक स्कूल में बच्चों के मध्य मनाया गया। समिति अध्यक्ष डॉ. सुधा भंसाली ने सभी को नशामुक्ति के संकल्प करवाये। समिति मंत्री श्रीमती शर्मिला भंसाली ने महाप्राण ध्वनि व अनुप्रेक्षा करवायी। समिति सदस्य श्री विकास चोपड़ा ने मेडिटेशन के बारे में जानकारी दी।

सप्ताह का छठा दिन सिंवाची गेट उच्च माध्यमिक विद्यालय में 'अनुशासन दिवस' स्कूली बच्चों के मध्य मनाया गया। समिति अध्यक्ष डॉ. सुधा भंसाली ने बताया कि जहां संयम है वहां सादगी है, ईमानदारी है, नैतिकता है। प्रिंसिपल सरोज नाथावत ने अणुव्रत समिति का धन्यवाद ज्ञापित किया। आभार ज्ञापन श्री रुपचंद भंसाली ने किया । कार्यक्रम का संचालन श्री महेन्द्र मेहता ने किया। सप्ताह के सातवें दिन तातेड़ भवन में अहिंसा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ मुनिश्री संभवकुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। मुनिश्री तत्वरुचि जी ने कहा कि अहिंसा के द्वारा विश्व में शांति संभव है। समारोह के मुख्य वक्ता श्री सोहनलाल तातेड़ ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन समिति सदस्य श्री विकास चौपड़ा ने किया।

## अहमदाबाद

स्थानीय समिति द्वारा मानव उत्थान सेवा समिति, गीरधरनगर में 'साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस' आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वी हिमश्रीजी ने कहा कि व्यक्ति में स्वार्थ की भावना से उठकर परमार्थ की भावना हो, सभी के प्रति सद्भावना, सौहार्द हो। सद्गुरु देव सतपाल महाराज ने भी विचार व्यक्त किये। स्वागत वक्तव्य समिति अध्यक्ष श्री सुरेश बागरेचा ने तथा अणुव्रत गीत संगान श्री धनराज तातेड़, श्री सुरेन्द्र लुनिया ने किया। इस अवसर पर अणुविभा के कार्यसमिति सदस्य श्री विमल बोरदिया, मंदिर के पुजारी श्री विजय बाबूलाल की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन समिति के मंत्री श्री मनोज सिंघी ने किया। तेरापंथ भवन शाहीबाग पर जीवन विज्ञान दिवस आयोजित किया गया। शासनश्री साध्वीश्री सरस्वतीजी ने कहा कि जीवन विज्ञान सही ढंग से जीवन जीना सिखाता है। साध्वीश्री संवेगप्रभाजी तथा साध्वीश्री परमार्थ प्रभाजी ने भी विचार रखे। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष श्री अशोक सेठिया, ज्ञानशाला संयोजक श्री मुकेश कोठारी, समिति कोषाध्यक्ष श्री विमल घीया सहित अणुव्रत कार्यकर्ताओं, ज्ञानशाला प्रशिक्षकों की उपस्थिति रही। 'अनुशासन दिवस' का आयोजन राजस्थान हिंदी हाईस्कूल, शाहीबाग में किया गया। शासनश्री साध्वीश्री रमावतीजी ने प्रेरणादायक उद्बोधन प्रदान किया। समिति अध्यक्ष श्री सुरेश बागरेचा ने स्वागत वक्तव्य दिया। समिति परामर्शक जवेरीलालजी संकलेचा, स्कूल की प्रधानाचार्य श्रीमती रीमाबेन शर्मा ने विचार व्यक्त किये। समिति मंत्री श्री मनोज सिंघी ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षिका श्रीमती ममता यादव ने किया। अणुव्रत समिति व तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा साईकिल द्वारा

• इस्लामपुर •

• दिल्ली •

• लाडनूं •

'अहिंसा रैली' का आयोजन किया गया। समिति परामर्शक सर्वश्री जवेरीलाल संकलेचा, अध्यक्ष सुरेश बागरेचा, उपाध्यक्ष प्रकाश बैद, मंत्री मनोज सिंघी, कोषाध्यक्ष विमल घीया, सहमंत्री श्रीमती लाडदेवी बाफना, सदस्य ममता संकलेचा आदि ने अहिंसा रैली को रवाना किया। इस अवसर पर विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों सहित गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही।

## इस्लामपुर

अणुव्रत समिति ने पर्यावरण शुद्धि दिवस के अंतर्गत स्थानीय पार्क में तुलसी, आम और पीपल के पौधे लगाये। समिति की उपाध्यक्ष श्रीमती ललिता धाडेवा ने कहा कि हमें पौधे लगाकर पर्यावरण को शुद्ध करने का प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम में समिति की अध्यक्ष श्रीमती शकुंतला देवी दुगड़, अध्यक्ष श्रीमती रंजना सेठिया उपस्थित थीं। इस्लामपुर फायर ब्रिगेड कैंप में नशा मुक्ति दिवस मनाया गया जिसमें तृणमूल कांग्रेस के पूर्व विधायक, जिला अध्यक्ष श्री के.एल. अग्रवाल स्थानीय सभाध्यक्ष श्री लक्ष्मीपति गोलेछा, महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती सरिता सिंघी, परिषद के मंत्री श्री मुदित पींचा, फायर ब्रिगेड के रम्यून इस्लाम सहित ज्ञानशाला के बच्चे उपस्थित थे। समिति की अध्यक्षा श्रीमती शकुंतला दुगड़ एवं मंत्री श्रीमती ममता बोथरा ने उत्तरीय पहनाकर महानुभावों का स्वागत किया। समिति के उपाध्यक्ष मनीषा बोथरा ने नशे से होने वाली हानि के बारे में बताया। ज्ञानशाला के बच्चों ने एक नुक्कड़ नाटक द्वारा जनता को नशा मुक्त होने का संदेश दिया। संयोजन कोषाध्यक्ष श्रीमती रंजना सेठिया ने किया। समिति द्वारा इस्माइल चौक में अणुव्रत प्रेरणा दिवस मनाया गया। स्थानीय तेरापंथ जैन भवन में अहिंसा दिवस मनाया गया। जिसमें मुख्य अतिथि राधेश्याम प्रसाद योग प्रशिक्षक थे। समिति की अध्यक्षा श्रीमती शकुंतला देवी दुगड़ ने अणुव्रत पत्रिका प्रदान कर अतिथियों का स्वागत किया। जीवन विज्ञान संयोजिका श्रीमती अंजना भंडारी ने जीवन विज्ञान के बारे में प्रकाश डाला। ज्ञानशाला संयोजिका श्रीमती मनीषा बोथरा ने कहा कि जीवन जीने की कला ही जीवन विज्ञान है। संचालन श्रीमती नीता गदिया ने तथा आभार ज्ञापन सहमंत्री श्रीमती ज्योति भंडारी ने किया।

## दिल्ली

अणुव्रत समिति द्वारा सांप्रदायिक सौहार्द दिवस पर 'सर्वधर्म संगोष्ठी' का आयोजन 'शासनश्री' साध्वीश्री संघमित्रा जी के सान्निध्य में ओसवाल भवन, विवेक विहार में हुआ। साध्वी श्री शीलप्रभाजी ने गीतिका के माध्यम से, साध्वी श्री सूरजयशा जी व साध्वी श्री समाधि प्रभाजी ने अणुव्रत पर प्रकाश डाला। गुरुद्वारा सिंह सभा झिलमिल के सरदार इन्द्रजित सिंह, आर्य समाज के डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, सनातन धर्म के प्रतिनिधि श्री सत्यपाल चावला, ब्रह्मकुमारी से संचय वीर पांचाल व मुस्लिम प्रतिनिधि डॉ. आजम खान ने विचार रखे। समिति अध्यक्ष श्री शांतिलाल पटावरी ने सभी का स्वागत किया। मंत्री श्री धनपत नाहटा व कार्यसमिति सदस्य श्री राजीव महनोत ने अणुव्रत गीत से मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया। महासमिति के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री जय प्रकाश जैन सहित अणुविभा के प्रकाशन मंत्री श्री प्रमोद घोड़ावत, समिति दिल्ली के परामर्शक श्री सत्यपाल चावला, डॉ. धनपत लुनिया, ओसवाल समाज अध्यक्ष श्री बाबूलाल दुगड़, युवक परिषद् दिल्ली अध्यक्ष श्री विकास बोथरा, सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री भानु प्रकाश बरड़िया, मंत्री श्री सुरेश भंसाली, अणुव्रत न्यास से श्री रमेश कांडपाल, अणुव्रत समिति दिल्ली की सह मंत्री प्रियंका महनोत आदि गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

अणुव्रत समिति दिल्ली द्वारा तेरापंथ भवन कृष्णानगर में शासनश्री साध्वीश्री रवि प्रभाजी के सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साध्वीश्री ने अणुव्रत व महाव्रत की विवेचना की। सभा गांधीनगर के अध्यक्ष श्री अनिल पटवा ने अणुव्रत से जुड़ने की अपील की। सभा के उपाध्यक्ष श्री गौतम डूंगरवाल ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन समिति की कार्यसमिति सदस्या श्रीमती राज गुनेचा ने किया। कार्यक्रम में विकास मंच के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश सुराणा, युवक परिषद के सह मंत्री श्री अशोक सिंगी, विकास मंच के ट्रस्ट सचिव श्री दिनेश डूंगरवाल, समिति के कार्यसमिति सदस्य श्री संजय भाई एवं अन्य

• कोलकाता •

• सुजानगढ़ •

• बारडोली •

गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।
अणुव्रत समिति द्वारा नशामुक्ति दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन अध्यात्म साधना केन्द्र महरौली में हुआ। मुख्य अतिथि मीनू शर्मा, अध्यात्म साधना केन्द्र, अतिविशिष्ट अतिथि श्री महंत भाई तिवारी, सूर्यकांत शुभ चिंतक ने वर्तमान में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति, उसके कारणों व स्वास्थ्य पर दुष्परिणामों के बारे में बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बाबा सखी चंद ने की। संयोजक श्री संजय भाई ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम में विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि व अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।
समिति ने गांधी शान्ति प्रतिष्ठान में 'अहिंसा दिवस' आयोजित किया। अध्यक्षता अणुविभा के कार्यसमिति सदस्य डॉ. अनिल दत्त मिश्रा ने की। मुख्य अतिथि बौद्ध आचार्य यशी फुन्टाक्स, ईसाई समाज से फादर एसडी थामस, ब्रह्माकुमारी क्षीरा दीदी, गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा राजघाट की मन्त्री श्रीमती वीणा हाड़ा, मुस्लिम समाज से मौलवी ए. आर. शाहीन, श्री नत्थूराम जैन वरिष्ठ उपाध्यक्ष सभा दिल्ली, फिल्म निर्देशक डॉ. राजीव सक्सेना व गांधी शांति प्रतिष्ठान के मंत्री श्री अशोक कुमार, अणुव्रत सेवी श्री रमेश कांडपाल आदि के सारगर्भित वक्तव्य हुए। अणुविभा की संगठन मंत्री (नॉर्थ जोन) डा. कुसुम लुनिया ने संचालन किया। समारोह में वरिष्ठ जनसम्पर्क विशेषज्ञ श्री जी.एन.भटट, ई.सूर्यकान्त, मोहम्मद इब्राहिम खान, नेगी जी आदि का सम्मान किया गया। सामाजिक कार्यकर्ता श्री महंत भाई तिवारी एवं सुश्री कामिनी झा, नवीन शर्मा का विशेष योगदान रहा। समिति के अध्यक्ष श्री शांतिलाल पटावरी ने सभी का स्वागत किया। संयोजक श्री संजय भाई ने आभार व्यक्त किया।

## लाडनूं

अणुव्रत समिति द्वारा अनुशासन दिवस श्रीमती केशरदेवी रा.बा.उ.मा. विद्यालय में मनाया गया। समिति अध्यक्ष शांतिलाल बैद ने अनुशासन को जीवन के लिए जरूरी बताया। अध्यक्षता प्राचार्य श्री ओमशंकर गर्वा ने की। समिति के मंत्री डॉ. वीरेन्द्र भाटी मंगल, समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अब्दुल हमीद, पत्रकार श्री दीक्षांत हिन्दुस्तानी तथा जीवन विज्ञान अकादमी के श्री हनुमानमल शर्मा ने विचार व्यक्त किये। संचालन श्रीमती अंजना शर्मा ने किया। स्थानीय अणुव्रत समिति के तत्वावधान में मंगलपुरा के रा.उ.मा.बा. विद्यालय में जीवन विज्ञान दिवस का आयोजन किया गया। समिति के मंत्री डॉ. वीरेन्द्र भाटी मंगल ने जीवन विज्ञान की रूपरेखा स्पष्ट की। अणुव्रत समिति के तत्वावधान में भूतोड़िया रा.उ.मा. बा. विद्यालय में पर्यावरणशुद्धि दिवस मनाया गया। समिति के संरक्षक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी तथा समिति अध्यक्ष श्री शांतिलाल बैद ने विद्यार्थियों के समक्ष विचार व्यक्त किये। संस्था उपाध्यक्ष पार्षद रेणु कोचर ने बच्चों को अणुव्रत की आचार संहिता के बारे में जानकारी प्रदान की। स्थानीय श्री सुभाष बोस उच्च माध्यमिक विद्यालय में अणुव्रत प्रेरणा दिवस मनाया गया। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में समिति के अध्यक्ष शांतिलाल बैद ने विचार व्यक्त किये।

## कोलकाता

नशा मुक्ति दिवस का कार्यक्रम अणुव्रत समिति कोलकाता और हावड़ा समिति के संयुक्त तत्वावधान में साल्टलेक स्थित गुप्ता भवन में आयोजित हुआ। साध्वीश्री स्वर्ण रेखा जी ने नशामुक्ति पर प्रेरक उद्‌बोधन दिया। कोलकाता समिति की उपाध्यक्ष डॉ. सुनीता सेठिया ने विचार व्यक्त किये। संचालन श्रीमती चमन सुराणा ने किया। अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के सप्तम दिन अहिंसा दिवस का कार्यक्रम साल्टलेक स्थित गुप्ता भवन में हुआ। विशिष्ट वक्ता श्रीमती कमला छाजेड़ थीं। अणुव्रत प्रेरणा दिवस कार्यक्रम में साध्वीश्री स्वर्ण रेखा जी ने छोटे–छोटे व्रतों की छतरी के अन्तर्गत मानवीय दुर्बलताओं को परिष्कृत कर स्वस्थ समाज के निर्माण की बात कही। विशिष्ट वक्ता उपासक श्री महेन्द्र कोचर ने भी विचार व्यक्त किये। संचालन हावडा समिति के मंत्री श्री राजेश बोहरा ने किया तथा आभर ज्ञापन समिति के अध्यक्ष श्री मनोज सिंघी ने किया।

## बारडोली

अनुशासन दिवस पर प्राथमिक शाला गुजराती मीडियम स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में अणुव्रत समिति की अध्यक्ष श्रीमती पायल चोरड़िया ने बतलाया कि अनुशासन ही

• कटक •

• कूचबिहार •

• बंगाईगांव •

जीवन का आधार स्तंभ है। मुख्य वक्ता रेशमा बाफना ने अनुशासन के बारे में बच्चों को जागृति प्रदान की। कार्यक्रम में प्रज्ञा बडोला, कैलाश बाफना आदि ने सहयोग प्रदान किया। उद्‌बोधन सप्ताह के पाँचवें दिन एसबीआर साइंस स्कूल में डायरेक्टर हितेन्द्र पांडे ने एक स्टोरी के माध्यम से अपनी बात रखी। समिति की अध्यक्ष श्रीमती पायल चोरडिया ने बच्चों को नशा व उससे होने वाले नुकसान के बारे में बतलाया। मंत्री श्री केतन मेड़तवाल ने वीडियो के माध्यम से जानकारी प्रदान की। उपाध्यक्ष श्री अंकुर मेहता ने आभार ज्ञापन किया।

जीवन विज्ञान दिवस के अवसर पर समिति की अध्यक्षा श्रीमती पायल चोरड़िया ने जीवन विज्ञान की महत्ता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में बच्चे, टीचर व अणुव्रत समिति के पदाधिकारी, उपाध्यक्ष श्री अंकुर मेहता, सदस्यगण श्रीमती पुष्पा मेड़तवाल आदि की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन सहमंत्री श्री सुशील सरणोत ने किया। अणुव्रत प्रेरणा दिवस बारडोली के अलग–अलग क्षेत्रों में अणुव्रत आचार संहिता के पट्ट भेंट करके मनाया गया।

## कटक

अणुव्रत समिति द्वारा श्री गोपाल कृष्ण गौशाला में वृक्षारोपण एवं पर्यावरण शुद्धि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। समिति अध्यक्ष श्री मुकेश डूंगरवाल ने अणुव्रत उदबोधन सप्ताह के कार्यक्रम के विषय में जानकारी दी। उपाध्यक्षा श्रीमती इंद्रा देवी लुणीया, मंत्री श्री वकास नौलखा, श्री रणजीत दूगड़, श्री संतोष सिंघी, श्री मनोज दूगड़, श्री सुंदर लाल लोढा, श्री कमल बैद, परिषद के अध्यक्ष श्री योगेश सिंघी, मंत्री श्री सौरव चोरडिया, श्री गोपाल कृष्ण गौशाला परिवार एवं सुप्रभात मण्डल का विशेष सहयोग रहा।

## कूचबिहार

अणुव्रत समिति ने सुनीति एकेडमी स्कूल में पर्यावरण दिवस पर पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में समिति अध्यक्ष श्री सुंदरलाल चोपड़ा, मंत्री श्री आनंद बांठिया की उपस्थिति रही।

## गुवाहाटी

अणुव्रत समिति ने साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस तेरापंथ धर्मस्थल में मनाया। समिति अध्यक्ष श्री बजरंग लाल डोसी ने सभी का स्वागत किया। समिति उपाध्यक्ष प्रथम श्री बजरंग बैद तथा सभा के मंत्री श्री निर्मल सामसुखा ने साम्प्रदायिक सौहार्द विषय पर प्रकाश डाला। इस मौके पर केन्द्रीय संस्थाओं के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही। संचालन कोषाध्यक्ष श्री संजय चौरड़िया ने किया। धन्यवाद ज्ञापन श्री निर्मल बैद ने किया।

अणुव्रत समिति द्वारा नशामुक्ति दिवस मनाया गया, जिसमें फैंसी बाजार चाराली में नुक्कड़ नाटक का मंचन किया गया। इस अवसर पर पानबाजार थाना प्रभारी श्री रुस्तम राज ब्रह्मा भी उपस्थित थे। समिति गुवाहाटी द्वारा जीवन विज्ञान दिवस, तेरापंथ धर्मस्थल में मनाया गया। अणुव्रत आचार संहिता का वाचन अणुविभा असम प्रभारी श्री बजरंग बैद ने किया। समिति के पूर्व अध्यक्ष श्री निर्मल सामसुखा ने जीवन विज्ञान के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम के संयोजक श्री ताराचंद ठोल्या ने विभिन्न तरह की योग क्रियाएं करवायीं। धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष श्री नवरतन गधैया ने किया।

## बंगाईगांव

अणुव्रत समिति, बंगाईगांव ने जीवन विज्ञान दिवस छोटे बच्चों के साथ मनाया। जीवन विज्ञान की संयोजिका श्रीमती ममता दुगड़ ने रोचक शैली में बच्चों को बहुत ही लाभदायक और अच्छे संस्कारों के बारे में अवगत कराया। कार्यक्रम में समिति के सलाहकार श्री अजीत भन्साली और समिति के सदस्य मौजूद थे।

## नागपुर

अणुव्रत समिति, नागपुर ने सांप्रदायिक सौहार्द दिवस का आयोजन किया। कार्यक्रम में साध्वी श्री समीक्षा प्रभा जी, धृति प्रभा जी और राजश्री जी के वक्तव्य हुए। समिति अध्यक्ष राजेंद्र पटावरी तथा विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों का वक्तव्य हुआ।

## भिवानी

अणुव्रत समिति द्वारा साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस तेरापंथ भवन में मनाया गया। साध्वीश्री तिलकश्री ने कहा कि वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से साम्प्रदायिक सौहार्द बढ़ेगा। महासमिति के पूर्व अध्यक्ष एवं महासभा उपाध्यक्ष

• नागपुर •

• गुवाहाटी •

• भिवानी •

श्री सुरेन्द्र जैन ने कहा कि सम्प्रदाय कोई बुरा नहीं, बुरी है साम्प्रदायिकता। दिव्यांग बच्चों के स्कूल संचालक विजय शर्मा ने भी विचार रखे। जीवन विज्ञान दिवस का आयोजन हलवासिया विद्या विहार के हॉल में हुआ। साध्वीश्री महिमाश्री एवं निर्णयप्रभा जी ने जीवन विज्ञान की व्याख्या की और प्रयोग करवाये। इसमें लगभग 300 बच्चों एवं सम्पूर्ण शिक्षण स्टाफ की उपस्थिति रही। अणुव्रत प्रेरणा दिवस का श्रीमती उत्तमी बाई आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में आयोजन हुआ। छात्राओं को नकल न करने तथा गुस्सा छोड़ने का संकल्प करवाया। प्राचार्या स्मिता भटनागर ने अणुव्रत को सभी के लिए उपयोगी बताया। लगभग 250 छात्राओं की उपस्थिति रही।

पर्यावरण शुद्धि दिवस वैश्य मॉडल स्कूल के हॉल में मनाया गया। साध्वीश्री महिमाश्री एवं साध्वीश्री निर्णयप्रभा जी ने छात्र–छात्राओं से पटाखे न चलाने का संकल्प करवाया गया। विद्यालय प्रबन्धकारिणी के अध्यक्ष शिवरतन गुप्ता, सचिव ब्रजलाल सर्राफ एवं कोषाध्यक्ष पवन बुवानीवाला, विजयकिशन धारेडूवाले, प्रवीण गर्ग, प्राचार्या कमला गुरेजा सहित लगभग 500 बच्चों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

नशामुक्ति दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। साध्वीश्री तिलक श्री ने कहा कि नशा स्टेटस सिंबल नहीं बल्कि नाश का सिंबल है। समिति के अध्यक्ष रमेश बंसल ने कहा कि नशा नाश का द्वार है। महासमिति के पूर्व अध्यक्ष एवं महासभा उपाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र जैन ने भी नशा न करने की अपील की। ब्रजेश आचार्य ने आभार ज्ञापन किया।

अनुशासन दिवस का आयोजन श्रीराम पाठशाला निशुल्क स्कूल में किया गया। समिति के मंत्री श्री ब्रजेश आचार्य ने बच्चों को अनुशासन की शिक्षा दी। लगभग 300 छात्र–छात्राओं एवं शिक्षण स्टाफ की उपस्थिति रही। अहिंसा दिवस तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी तिलकश्री के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री ने सभी को जीवन में अहिंसा का पालन करने की शिक्षा दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रमुख साहित्यकार डॉ. रमाकान्त शर्मा तथा श्री रमेश बंसल ने विचार व्यक्त किये।

## सिरसा

अणुव्रत समिति द्वारा 'अणुव्रत प्रेरणा दिवस' तेरापंथ भवन में मनाया गया। शासनश्री साध्वी मंजुप्रभा ने कहा कि अणुव्रत जाति, धर्म, भाषा, प्रांत आदि भेदभावों से ऊपर उठकर इन्सान को आत्मसंयम की ओर प्रेरित करता है। कार्यक्रम में अणुविभा के राज्यप्रभारी (हरियाणा) श्री मक्खन लाल गोयल ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया। श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री हनुमानमल गुजरानी, समिति के अध्यक्ष श्री रविन्द्र गोयल ने विचार रखे। मंच संचालन समिति के निवर्तमान अध्यक्ष श्री चम्पालाल जैन ने किया। तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी मंजुप्रभा जी ने पर्यावरण को शुद्ध रखने का आह्वान किया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष रविन्द्र जैन एडवोकेट, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष देवेन्द्र डागा, युवक परिषद् के अध्यक्ष कमल सुराना, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र सेठिया व सुमन धींगड़ा, श्री चम्पालाल जैन व मानकचन्द जैन ने दादाबाड़ी के बगीचे में पौधरोपण किया। 'नशामुक्ति दिवस' तेरापंथ जैन भवन में मनाया गया, शासनश्री साध्वी मंजुप्रभा ने आज के युग की बढ़ती हुई समस्याओं के बारे में अवगत कराया। वरिष्ठ समाजसेवी व शासनसेवी श्रावक श्री पदम गुजरानी ने नशामुक्ति अभियान पर विचार व्यक्त किये। समिति के अध्यक्ष श्री रविन्द्र गोयल व पूर्व अध्यक्ष श्री बलवन्त राय जैन ने भी विचार रखे। मंच संचालन श्री चम्पालाल जैन ने किया।

'अनुशासन दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी मंजुप्रभा ने कहा कि यदि मर्यादा, अनुशासन, कानून–व्यवस्था न हो तो कोई भी व्यक्ति, परिवार, समाज, संघ, राज्य, राष्ट्र विकास नहीं कर पायेगा। जीवन विकास में अनुशासन का महत्वपूर्ण स्थान है। कार्यक्रम में महासमिति के पूर्व अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र जैन एवं अणुविभा के संगठन मंत्री श्री संजय जैन, महिला मण्डल अध्यक्षा श्रीमती सुमन गुजरानी ने विचार रखे। श्री संजय जैन ने सिरसा अणुव्रत समिति को तृतीय स्थान प्राप्त करने हेतु स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री चम्पालाल जैन ने किया। साध्वीश्री

● सिरसा ●

● राजसमंद ●

● केसिंगा ●

मंजुप्रभा जी के सान्निध्य में 'अहिंसा दिवस' एवं महात्मा गांधी जयन्ती' के रूप में मनाया गया। शासनश्री साध्वी ने कहा कि अहिंसा सभी धर्म सम्प्रदायों व मानव का परम धर्म है। श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री हनुमानमल गुजरानी ने जिला बार एसोसिएशन के पूर्व प्रधान रमेश मेहता एडवोकेट, शासनसेवी पदम चन्द जैन, श्री मक्खन लाल गोयल व समिति अध्यक्ष रविन्द्र गोयल ने नशामुक्ति रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली में एस.एस. जैन कन्या विद्यालय का पूरा स्टाफ, छात्राएं व अणुव्रत समिति के मंत्री अमित सिंघी, निवर्तमान अध्यक्ष श्री चम्पालाल जैन, उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र सेठिया व श्रीमती सुमन धींगड़ा, कोषाध्यक्ष श्री अजय गोयल, संगठन मंत्री श्री धीरज डागा एडवोकेट, श्री अमन जैन आदि उपस्थित थे।

## राजसमंद

अणुव्रत समिति द्वारा प्रज्ञाविहार कांकरोली में शतावधानी मुनिश्री संजय कुमार जी, मुनिश्री प्रकाश कुमार जी, मुनिश्री सिद्ध प्रज्ञ जी के सान्निध्य में सांप्रदायिक सौहार्द दिवस मनाया गया। मुनिश्री प्रकाश कुमार जी ने अणुव्रत की प्रासंगिकता पर विशेष बल दिया। मुख्य अतिथि अणुविभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अशोक डूंगरवाल एवं राष्ट्रीय सहमंत्री श्री जगजीवन चोरडिया ने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में श्री हिम्मत कोठारी, संगठन मंत्री श्री रमेश मांडोत, समिति के मंत्री श्री हिम्मत सिंह बाबेल, श्री अचल धर्मावत तथा श्रीमती सुधा जैन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन श्री रमेश मांडोत ने किया। प्रज्ञा विहार कांकरोली में पर्यावरणशुद्धि दिवस कार्यक्रम आयोजित हुआ। मंगलाचरण के पश्चात् मुनिश्री सिद्ध प्रज्ञ जी ने पर्यावरण को बचाने के लिए विशेष प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सुरेंद्र मेहता ने बताया कि आचार्य श्री तुलसी के अणुव्रत आंदोलन ने विश्व में पर्यावरण के क्षेत्र में चेतना जगाने का अभूतपूर्व कार्य किया। कार्यक्रम का संयोजन संगठन मंत्री श्री रमेश मंडोत ने तथा आभार समिति अध्यक्ष डॉ. वीरेंद्र महात्मा ने ज्ञापित किया।

प्रज्ञा विहार कांकरोली में अणुव्रत प्रेरणा दिवस एवं जीवन विज्ञान दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री चंद्र प्रकाश चौरड़िया ने की। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन समिति राजसमंद के अध्यक्ष डॉ. वीरेंद्र महात्मा ने किया। सप्ताह के अंतिम दिन अहिंसा दिवस पर प्रकाश डालते हुए मुनिश्री सिद्ध प्रज्ञ ने कहा, हिंसा का मूल कारण है रोटी का अभाव, आवेश का प्रभाव एवं निषेधात्मक सोच है। मुख्य वक्ता अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संचय जैन ने कहा कि अणुव्रत आचार संहिता के प्रथम तीन बिंदु अहिंसा को समर्पित हैं। हिंसा से किसी को भी लाभ नहीं होता। अहिंसा को अपनाने के लिए हमें छोटे–छोटे व्रत लेना सीखना होगा। समिति के पूर्व अध्यक्ष श्री ललित बडोला ने आभार ज्ञापित किया। समाज सेवी श्री राजकुमार दक, शिक्षाविद् श्री कालूशाह, कुंभलगढ़ से श्री कैलाश सामोता तथा सभा के अध्यक्ष श्री प्रकाश सोनी एवं मंत्री श्री हिम्मत कोठारी ने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा के सहमंत्री श्री जगजीवन चोरड़िया ने किया।

## केसिंगा

मुनिश्री जिनेश कुमार जी, मुनिश्री परमानंद जी एवं मुनिश्री कुणाल कुमार जी के सान्निध्य में 29 सितम्बर को आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री ने फरमाया कि राष्ट्र निर्माण में अणुव्रत की महती भूमिका है। 30 सितम्बर को प्रेक्षा वाहिनी केसिंगा के साथ मिलकर ध्यान शिविर का आयोजन किया गया। ओडिशा में प्रथम बार जैन मुनि का मस्जिद में प्रवचन हुआ। मुनिश्री ने प्रवचन में आपसी भाई चारा बनाये रखने का संदेश दिया। 1 अक्टूबर को शिशु मन्दिर विद्यालय में संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने अणुव्रत के नियम स्वीकार किये एवं अणुव्रत संकलप पत्र भरा। अहिंसा दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित संगोष्ठी में मुनिश्री ने अहिंसा परमो धर्मः के बारे में संदेश दिया और अहिंसा पालन हेतु अणुव्रत को जरूरी बताया। कार्यक्रम के उपरांत कालाहाण्डी के एसपी श्री श्रमण विवेक आईपीएस को अणुव्रत पट्ट भेंट किया गया। इस अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह को सफल बनाने में समिति के अध्यक्ष श्री सुभांकर जैन, संगठन मंत्री श्री राहुल जैन, मंत्री श्री प्रीतम जैन एवं ओडिशा सभा के महामंत्री व अणुव्रत समिति के सलाहकार श्री अनूप कुमार जैन का सहयोग रहा।

• पालघर •

• मुम्बई •

• चेन्नई •

## पालघर

अणुव्रत समिति द्वारा साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस विविधता में एकता के थीम पर फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता के रूप में तेरापंथ भवन, पालघर में मनाया गया। समिति की अध्यक्षा श्रीमती निधि सिंघवी ने सभी का स्वागत किया। प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में श्री प्रतीक दोशी की उपस्थिति रही। विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री रंजन सिंघवी एवं आभार ज्ञापन समिति मंत्री श्री प्रीतम राठौड़ ने किया। स्थानीय तेरापंथ भवन में जीवन विज्ञान का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि श्रीमती चन्द्रकला भानुशाली थीं। जीवन विज्ञान संयोजिका श्रीमती अंजना भण्डारी ने जीवन के विज्ञान के बारे में प्रकाश डाला। संचालन श्री विक्रम बाफना एवं आभार ज्ञापन सहमंत्री श्री पीनल सिंघवी ने किया।

अणुव्रत प्रेरणा दिवस तेरापंथ भवन, पालघर में मनाया गया। समिति अध्यक्षा श्रीमती निधि सिंघवी ने सभी का स्वागत किया। इसी कड़ी में समिति द्वारा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

पर्यावरण शुद्धि दिवस दो चरणों में मनाया गया। दूसरे चरण में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। समिति उपाध्यक्ष श्री गजसुख बोरणा ने स्वागत वक्तव्य दिया। प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन श्री हित तलेसरा ने किया।

प्रथम चरण में सदस्य श्री मनीष बम्बोरी ने नाटिका के माध्यम से नशे से होने वाले नुकसान से अवगत कराया। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन श्रीमती निधि सिंघवी ने किया।

अनुशासन दिवस के अवसर पर गीतगायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उद्‌बोधन सप्ताह का अंतिम दिवस अहिंसा दिवस के रूप में तेरापंथ भवन, पालघर में आयोजित किया गया। समिति अध्यक्षा श्रीमती निधि सिंघवी ने कहा कि अहिंसा कल्याणकारी व हितकारी है। अणुव्रत के विभिन्न विषयों पर समिति द्वारा रोचक प्रस्तुति दी गयी। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन समिति मंत्री श्री प्रीतम राठौड़ ने किया।

## मुंबई

समिति द्वारा साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस का समायोजन प्रो. मुनिश्री महेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में हुआ। अणुव्रत आचार संहिता का वाचन अणुविभा संगठन मंत्री श्री विनोद कोठारी ने किया। समिति अध्यक्षा श्रीमती कंचन सोनी ने अतिथियों का स्वागत किया। मुनिश्री सिद्ध कुमार जी, मुंबई कांग्रेस अध्यक्ष श्री अशोक भाई जगताप, ईसाई धर्म गुरु फादर रोझारियो, श्री सत्यनारायण प्रभु, बौद्ध गुरु भदंत राहुल बोधी ने विचार व्यक्त किये। चातुर्मास व्यवस्था समिति अध्यक्ष श्री मदन तातेड ने विचार रखे। आभार ज्ञापन मंत्री श्रीमती वनीता बाफना ने किया। कार्यक्रम का संचालन श्री राजकुमार चपलोत ने किया।

## चेन्नई

अणुव्रत समिति द्वारा साध्वीश्री अणिमा श्री के सान्निध्य में अहिंसा दिवस का आयोजन किया। साध्वीश्री समत्वय जी ने मंगलाचरण किया। साध्वीश्री अणिमाश्री ने प्रेरणादायी वक्तव्य दिया एवं समिति के कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम का संचालन साध्वश्री मैत्रीप्रभा ने किया। समिति द्वारा चेन्नई मरीना समुद्र तट के समीप सीआरएसके चेन्नई रनर्स किलपाक समूह की सहभागिता सहित 30 किलोमीटर की साइकिल सवारी और 10 किलोमीटर की पैदलयात्रा नशा मुक्ति अभियान के तहत आयोजित हुई। इस कार्यक्रम के संयोजक श्री पंकज चोपड़ा और श्री अशोक छल्लानी सहित अणुव्रत समिति के सदस्यों की मुख्य भूमिका रही।

पर्यावरण शुद्धि दिवस ''घर–घर तुलसी–हर घर तुलसी'' के अभियान स्वरूप चेन्नई साहुकारपेट तेरापंथ भवन में साध्वी श्री अणिमाश्री जी के सान्निध्य में मनाया गया। करीब 100 तुलसी के पौधों का वितरण किया गया। अणुव्रत प्रेरणा दिवस के अवसर पर साध्वी वृंद द्वारा मंगलाचरण किया गया। मुख्यवक्ता श्री राकेश खटेड ने अणुव्रत की महत्ता पर प्रकाश डाला।

साध्वीश्री अणिमाश्री ने मंगल उद्‌बोधन प्रदान किया। आज के प्रायोजक श्री रमेश भंसाली का सम्मान अणुव्रत समिति द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती सुभद्रा लुणावत ने किया। इस कार्यक्रम में समिति अध्यक्ष श्री ललित आंचलिया, तेयुप मंत्री श्री संतोष सेठिया, टीपीएफ अध्यक्ष श्री राकेश खठेड़ की उपस्थिति रही।

## विजयवाड़ा

समिति द्वारा पर्यावरण शुद्धि दिवस मनाया गया, जिसमें चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिता रखी गयी। प्रतियोगिता में राजस्थानी हिंदी विद्यालय एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने हिस्सा लिया।

## सुजानगढ़

अहिंसा दिवस व गांधी जयंती के उपलक्ष्य में अणुव्रत समिति सुजानगढ़ द्वारा अहिंसा एवं स्वच्छता प्रभातफेरी निकाली गयी। जिसमें कई गणमान्य व्यक्तियों की सहभागिता रही।

## मुम्बई

### अणुव्रत आधारित प्रतियोगिताओं का आयोजन

अणुव्रत समिति, मुंबई द्वारा आयोजित ''अणुव्रत गॉट टैलेंट 2021'' का फिनाले व विजेता पुरस्कार समारोह 10 अक्टूबर को घाटकोपर तेरापंथ भवन में समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञाजी एवं समणीवृंद के सान्निध्य में हुआ। समिति अध्यक्ष श्रीमती कंचन सोनी ने सभी का स्वागत किया। इन विभिन्न प्रतियोगिताओं में कुल 690 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं का सम्मान किया गया। प्रतियोगिताओं में निर्णायक की भूमिका श्रीमती ललिता जोगड, श्री रमेश पटावरी, श्रीमती माधुरी जैन, श्री निलेश बापना, श्रीमती दिव्या बोलिया, श्रीमती हिना चेचानी व श्रीमती शुभद्रा शर्मा ने निभायी। कार्यक्रम के प्रायोजक श्री मदनलाल, श्री महेंद्रकुमार तातेड थे। वहीं, अणुव्रत समिति मुंबई ने वर्चुअल नशा मुक्ति अभियान चलाया। इसमें वीडियो के माध्यम से बतलाया गया कि कैसे व्यसन मुक्त रहे इन्सान? कार्यक्रम में घाटकोपर क्षेत्रीय संयोजक श्री राजेश कुमठ व सह–संयोजक श्री मुकेश धाकड, श्री धनराज डांगी का सहयोग मिला। अणुविभा राज्यप्रभारी सर्वश्री रमेश धोका, उपाध्यक्ष विजय संचेती, रोशन मेहता, मनोहर कच्छारा, रमेश चौधरी, मुकेश मादरेचा,कांता तातेड, राजेंद्र मुणोत, सुरेश बापना आदि की उपस्थिति रही। संचालन श्रीमती प्रियंका सिंघवी तथा आभार ज्ञापन मंत्री श्रीमती वनिता बाफना ने किया।

## बीकानेर

### अणुव्रत की प्रासंगिकता पर संगोष्ठी

अणुव्रत समिति ने 'वर्तमान परिस्थितियों में अणुव्रत की प्रासंगिकता' विषय पर लाल कोठी में 'अणुव्रत संगोष्ठी' का आयोजन किया। इस अवसर पर साध्वी श्री शांता कुमारी जी ने प्रेरक उद्बोधन प्रदान किया। अणुविभा के उपाध्यक्ष श्री राजेश सुराणा ने वर्तमान की ज्वलंत समस्याओं के समाधान का एकमात्र रास्ता अणुव्रत आंदोलन को बताया। अणुविभा के प्रचार–प्रसार मंत्री श्री धर्मेंद्र डाकलिया, राज्य प्रभारी श्री प्रकाश भंसाली, शिक्षाविद् प्रो. सुमेर चंद जैन तथा समिति उपाध्यक्ष श्री सुरजा राम ने विचार व्यक्त किये। समिति अध्यक्ष श्री झंवरलाल गोलछा व उनकी टीम ने अणुव्रत गीत का संगान किया। कार्यक्रम संचालन श्री बाबूलाल महात्मा ने किया।

## गुवाहाटी

### पर्यावरण संवर्धन का प्रभावी प्रकल्प

अणुव्रत समिति की ओर से वर्ष–पर्यंत चलने वाला 'वृक्षारोपण एवं संरक्षण' कार्यक्रम 17 अक्टूबर को स्थानीय गोपीनाथ नगर स्थित इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट परिसर में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के संयोजक श्री नवरतन गधैया ने पर्यावरण संरक्षण पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन मंत्री श्री पवन जम्मड़ ने किया। कार्यक्रम में इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट के प्रशासनिक अधिकारी डी. बर्मन का विशेष सहयोग मिला। इस अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती के सहमंत्री छत्तरसिंह चोरड़िया, सहमंत्री जयकुमार भंसाली, कोषाध्यक्ष संजय चौरड़िया, निर्मल बैद आदि उपस्थित थे।

*नोट : गुवाहाटी अणुव्रत समिति ने पर्यावरण संरक्षण को अपना स्थायी प्रकल्प बना लिया है। समिति के कार्यकर्ता प्रतिमाह दूसरे रविवार को पौधारोपण करते हैं और उनकी सार–संभाल की जिम्मेदारी भी वहन करते हैं। समिति के मंत्री श्री पवन जम्मड़ ने बताया कि उन व्यक्तियों को वृक्षारोपण के लिए आमंत्रित किया जाता है जिनका जन्मदिन उस माह में आता है। इस प्रकार पर्यावरण संरक्षण को भावनात्मक आधार प्रदान कर इसे प्रभावी बनाने के सार्थक प्रयास किये जा रहे हैं।*

अणुव्रत समिति संचालन के नये दिशानिर्देश जारी होने के बाद **अणुव्रत समिति जयपुर** ऐसी प्रथम अणुव्रत समिति बन गयी है जिसने अपने आप को ट्रस्ट के रूप में पंजीकृत कराते हुए आयकर अधिनियम के अंतर्गत पैन नंबर प्राप्त कर लिया है और नया बैंक खाता खुलवा लिया है। अणुव्रत समिति जयपुर को इस जागरूकता के लिए बधाई।

**– अणुविभा प्रबंध मंडल**

# पाठकों के लिए
# विशेष प्रतियोगिता

**अणुव्रत Q10**

**आपको करना है बस इतना**

❖ 'अणुव्रत पत्रिका' के अक्टूबर 2021 अंक को ध्यानपूर्वक आद्योपांत पढ़ना
❖ अक्टूबर 2021 अंक पर आधारित 10 सरल प्रश्नों के उत्तर प्रेषित करना

**❖ अक्टूबर 2021 अंक पर आधारित प्रश्न ❖**

01. रसोई किसका आईना है?
02. 'फरो आइलैंड्स' किस देश में स्थित है?
03. 'की टू हेल्थ' पुस्तक के लेखक कौन हैं?
04. भारत में हरित क्रांति के मुख्य वास्तुकार कौन थे?
05. आस्था और ज्ञान की अभिव्यक्ति का माध्यम क्या है?
06. 72वें अणुव्रत अधिवेशन के संयोजक कौन थे?
07. 'श्याम रसोई' चलाने वाले व्यक्ति का क्या नाम है?
08. सूत्र वाक्य-'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' किस ग्रंथ से लिया गया है?
09. 72वें अणुव्रत अधिवेशन में कितनी अणुव्रत समितियों की सहभागिता रही।
10. किस क्षेत्र की अणुव्रत समिति ने ट्रस्ट के रूप में सबसे पहले पंजीकरण करवाया?

## ज्ञातव्य बिंदु

- ❖ प्रतियोगिता के प्रश्न अक्टूबर 2021 के अंक पर आधारित।
- ❖ परिवार के एक सदस्य की प्रविष्टि ही मान्य होगी।
- ❖ प्रतिभागी उत्तर के साथ पता और मोबाइल नं. अवश्य उल्लेख करें।
- ❖ उत्तर संक्षेप में दें। पत्रिका में उल्लेखित शब्द ही मान्य होंगे।
- ❖ काट-छांट व शब्दों में त्रुटि होने पर अंक काट लिये जायेंगे।
- ❖ सर्वाधिक सही उत्तर लिखकर भेजने वाला पाठक विजेता होगा।
- ❖ एकाधिक विजेता होने की स्थिति में लॉटरी द्वारा निर्धारण होगा।
- ❖ विजेता का नाम मय फोटो पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।
- ❖ सही उत्तरदाताओं के नाम का पत्रिका में उल्लेख होगा ।

**उत्तर इस पते पर भेजें**

**अणुव्रत विश्व भारती**
अणुव्रत भवन,
210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002
मो : 91166 34512
anuvrat.patrika@anuvibha.org

**आकर्षक पुरस्कार**

विजेता
- नकद रु. 2100/-
- अणुव्रत पत्रिका की त्रैवार्षिक सदस्यता

प्रोत्साहन - दो
- नकद रु. 1100/-
- अणुव्रत पत्रिका की एक वर्षीय सदस्यता

उत्तर प्राप्ति की अंतिम तिथि
**15 दिसम्बर, 2021**

## सितम्बर 2021 अंक में प्रकाशित प्रतियोगिता के परिणाम

(अगस्त 2021 अंक पर आधारित)

एकाधिक विजेता होने के कारण निर्णय लॉटरी द्वारा किया गया, जो इस प्रकार है -

**विजेता**

**श्री कमल सिंह बुच्चा**
सूरत

-:: प्रोत्साहन पुरस्कार ::-

**श्री विजयकुमार जैन**
दिल्ली

**श्री हेमलता**
जोधपुर

**अन्य सही उत्तरदाताओं के नाम :-**

प्रवीण लता जैन
जिनेश चोपड़ा
चारुल चोपड़ा
सायर देवी भादानी
ज्योतिषा
इन्द्रा देवी नाहटा
पारसमल चण्डालिया
ऋषभ संकलेचा
ममता देवी जैन
बजरंगलाल डागा
दीपक नाहर
कुंदनलाल गोयल
सोनम सालेचा
अजीत प्रसाद जैन
चन्द्रा मेहता
मंजुदेवी छाजेड़
रामविलास जैन
ऊषा जैन
सोनू जैन
दिव्या
सुनीता जैन
विजेन्द्र जैन
हर्षल मेहता
श्वेता जैन
लता गुप्ता
विजया चोपड़ा
सिद्धि चोपड़ा
निलेश बैद
सुशीला गोलछा
प्रणत नाहर
नेहा हर्षुल मेहता
मंजु लूनिया
अलका जैन
माणक चंद बैद
कल्याणमल विजयवर्गीय
भगवान दास
डॉ. सुधा भंसाली
लब्धि लुंकड़
खुशबू जैन
अंजना छाजेड़
भावनादेवी लुकंड
कमलकांत जैन
घनराज जैन
राजकुमार
सुमन जैन
पूनम जैन
सीमा जैन
माणकलाल जैन
ममता देवी

**अणुव्रत Q10 प्रतियोगिता**

### प्रश्नों के सही उत्तर

| | | |
|---|---|---|
| उत्तर 01 : | इच्छा | पृ. 17 |
| उत्तर 02 : | मकसद | पृ. 14 |
| उत्तर 03 : | वर्ष 1981 | पृ. 45 |
| उत्तर 04 : | उमेश मोहंती | पृ. 42 |
| उत्तर 05 : | राम नरेश त्रिपाठी | पृ. 39 |
| उत्तर 06 : | विक्टर फ्रेंकल | पृ. 15 |
| उत्तर 07 : | श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार | पृ. 19 |
| उत्तर 08 : | 1. इडा 2. पिंगला 3 सुषुम्ना | पृ. 9 |
| उत्तर 09 : | एक्कने ने | पृ. 26 |
| उत्तर 10 : | डेनियल कार्डवेल | पृ. 13 |

# उपहार योजना

## 31 दिसंबर, 2021 तक

## अणुविभा की दो राष्ट्रीय पत्रिकाओं

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

# अणुव्रत

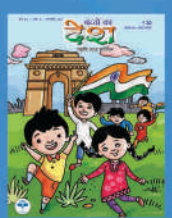

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

# के सदस्य बनिए और पाइए...

| 12 माह पर | 36 माह पर | 60 माह पर | 120 माह पर |
|---|---|---|---|
| 13 अंक | 39 अंक | 65 अंक | 130 अंक |

## अणुव्रत समितियों के लिए

**10** सदस्यता पर **20** ग्राम चाँदी का सिक्का ('अणुव्रत' के लिए) एवं
**10** ग्राम ('बच्चों का देश' के लिए)

- ★ सदस्यता शुल्क की कुल राशि 10 हजार ('अणुव्रत' के लिए) एवं 5 हजार ('बच्चों का देश' के लिए) या इससे अधिक होने पर 10% की छूट।
- ★ सर्वाधिक सदस्य बनाने वाली 10 अणुव्रत समितियों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जाएगा।

### बैंक विवरण

ANUVRAT VISHWA BHARATI SOCIETY

बच्चों का देश
IDBI BANK
Rajsamand
A/c - 104104000046914
IFS Code - IBKL0000104

अणुव्रत पत्रिका
CANARA BANK
DDU Marg, New Delhi
A/c - 0158101120312
IFS Code - CNRB0000158

## सदस्यता शुल्क

| अवधि | 'अणुव्रत' | 'बच्चों का देश' |
|---|---|---|
| 1 वर्ष | 600 | 300 |
| 3 वर्ष | 1500 | 800 |
| 5 वर्ष | 2500 | 1200 |
| 10 वर्ष | 5000 | 2400 |
| 15 वर्ष * | 11000 | 7000 |

*15 वर्ष 'योगक्षेमी' – सदस्य का नाम एवं पता फोटो सहित 'अणुव्रत' पत्रिका में 1 बार प्रकाशित किया जाएगा

ANUVIBHA

**अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी**

सम्पर्क : +91 98112 42365, +91 91166 34512, +91 91166 34515

सौजन्य : श्री कन्हैयालाल राजेश मयुर चिप्पड़, बंगलुरू

ANUVRAT

RNI No. 7013/57
November, 2021

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23
Licence No. U(C)-215/2021-23
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/10/2021
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month

GALAXY GROUP

Architectural marvels across 46 countries worldwide have used our stones.
We are proud to have contributed to the architectural world with these concept stores and outlets in Jaipur:

Stone Studio By Galaxy
India's first concept store for stone display

Tile Studio By Galaxy
Finest Selection of Premium Tiles

Light Studio By Galaxy
Rajasthan's Largest Decorative Lights Display

Landscape Studio BY GALAXY
India's best collection of Landscape Artefacts

The experience of three decades has helped us translate our vision for providing unparalleled lifestyle into -
**The Urban Village by Galaxy Enclave**, a fully integrated township next to Jaipur's business hub.

RERA No: RAJ/P/2017/448; RAJ/P/2020/1364

GALAXY ENCLAVE
THE URBAN VILLAGE

*Modern Day Luxuries In Harmony With Nature*

250 feet SEZ Road, Kalwara, Ajmer Road, Jaipur

TO KNOW MORE, CALL US ON
+91-90791-23572/ 88755-84455/ 88754-08875 or write to info@urban-village.co.in
www.urban-village.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक **संचय जैन** द्वारा स्वत्वाधिकारी **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी** की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - **संचय जैन**